

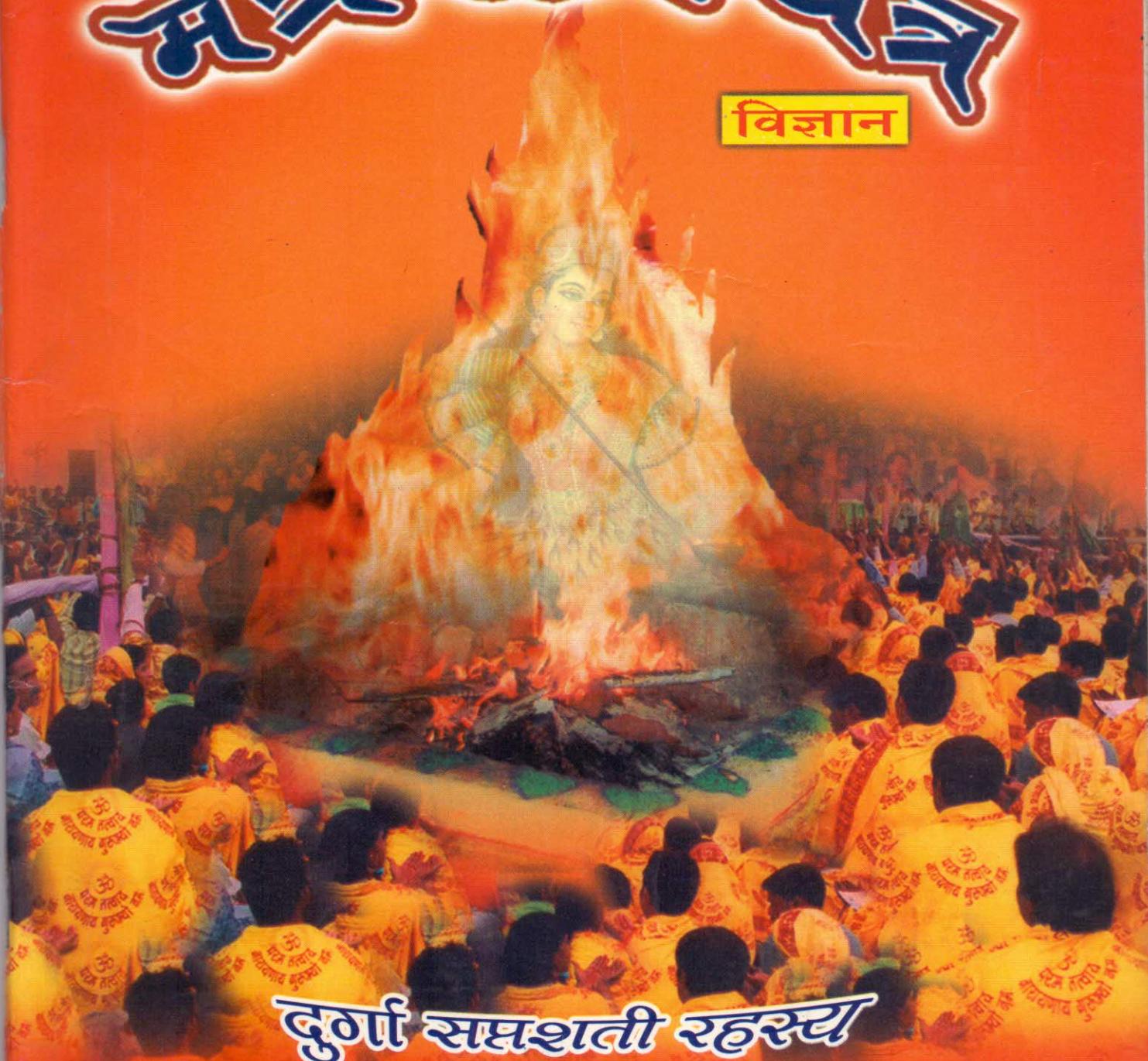
तंत्र ज्ञान सिद्धि विशेषांक

मार्च 2010

मूल्य : 24/-

तंत्र-तंत्र-यंत्र

विज्ञान



दुर्गा सप्तशती रहस्य

वार्ताली स्तम्भन साधना

साधना शिविर - आपके लिये

शिव रचित उत्कीलन साधना

सुखी जीवन के उपाय

A Monthly Journal





COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



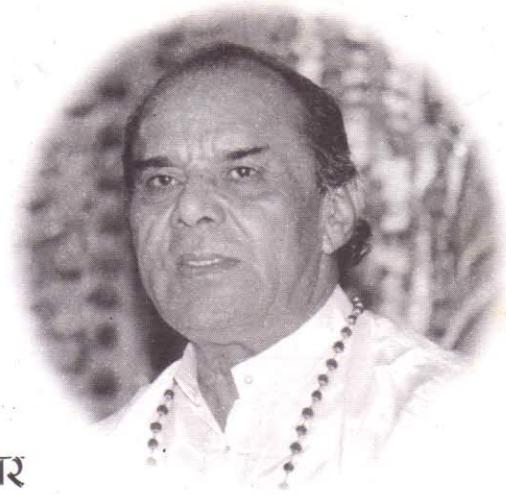
By

Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

जो युग-पुरुष हैं, जो चेतनाप्रश्न हैं, जो जीवन्त हैं, जाग्रत हैं, चैतन्य हैं,

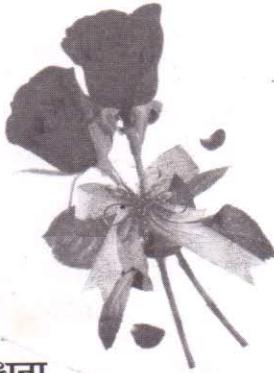
उककी यही नियति होती है कि
वे विष पीकर भी लमाज को
अपने अमृत वर्चनों से चेतना देते हैं
अमृत वर्चनों से सिंचत,
सद्गुरुलदेव की अमृत वाणी में ये



ऑडियो/वीडियो सी.डी.जिएट्स आप सुनिये बार-बार

आँडियो कैसेट/सी.डी

- ◆ गुरु मुखी स्तोत्र
- ◆ भजन कुछ कर ले
- ◆ नारायण नारायण
- ◆ सद्गुरुदेव
- ◆ भजन सागर
- ◆ तू व्यापक डाली डाली है
- ◆ ध्यान योग
- ◆ गुरु हमारी जाति
- ◆ अब तो जाग
- ◆ कुबेर पति शिव शक्ति साधना
- ◆ पारदेश्वर शिवलिंग पूजन
- ◆ शिवसूत्र
- ◆ महाशिवरात्रि पूजन
- ◆ घोडश गुरु पूजन
- ◆ विशेष गुरु पूजन
- ◆ गुरु वाणी भाग १-२-३
- ◆ सिद्धाश्रम महात्मय
- ◆ मंजुल महोत्सव-१८ भाग १-५
- ◆ महातंत्र साधना शिविर-१५ भाग १-६
- ◆ महासरस्वती स्वरूप साधना
- ◆ ऐं बीज साधना
- ◆ बसन्त पंचमी साधना



चाँडियो सी.डी

- ◆ एकादश रुद्र साधना शिविर वाराणसी-१८ भाग १-६
- ◆ महाशिवरात्रि शिविर-१७ भाग १-३
- ◆ निखिलेश्वरम् महोत्सव इलाहाबाद-१३ भाग १-३
- ◆ गुरु पूर्णिमा हैदराबाद-१७ भाग १-३
- ◆ निखिलेश्वरम् महोत्सव गोधरा-१२, भाग १-३
- ◆ राज्याभिषेक दीक्षा दिल्ली-१७, भाग १-६
- ◆ निखिलेश्वरम् महोत्सव जोधपुर-११, भाग १-३
- ◆ सिद्धाश्रम
- ◆ सिद्धाश्रम प्रश्नोत्तर
- ◆ गुरु पादुका पूजन

न्यौषित्वर प्रति आँडियो कैसेट - 30/-

न्यौषित्वर प्रति आँडियो सी.डी. - 30/-

न्यौषित्वर प्रति वीडियो सी.डी. - 60/-

सम्पर्क :

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन: 0291-2432209, 2433623, फैक्स : 0291-2432010

आनो भ्रदा: क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उच्चति, प्रगति और भारतीय गृह विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

શાલ્વે-ઘરાશ

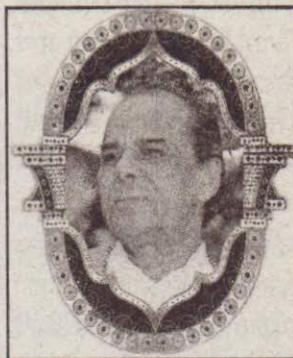


साधना।

 <p>जुड़ात मन का</p>	क्रोध उन्मत भैरव	37
	साधना	
<p>सद्गुरुदेव</p>	वार्ताली स्तम्भन	
	साधना	40
<p>सद्गुरु प्रवचन</p>	चन्द्रिका यक्षिणी	
	साधना	46
<p>स्तम्भ</p>	हेलत्व ग्रहदोष निवारण	
	साधना	50
<p>शिष्य धर्म</p>	वैवाहिक जीवन - पूर्णता की	
	साधनाएं	55
<p>गुरुवाणी</p>	उत्कीलन साधना	
	साधना: सिद्ध लघु प्रयोग	64
<p>नक्षत्रों की वाणी</p>		
<p>मैं समय हूँ</p>		
<p>वराहमिहिर</p>		
<p>इस मास जोधपुर में</p>		
<p>एक दृष्टि में</p>		



पूजन



विशेष

दुर्गा सप्तशती -	
कथा सार	23
सद्गुरुदेव निखिल	27
सद्गुरु अवतरण	30
इबोपी	
स्वाधिष्ठान चक्र	70
गुरु-शिष्य	
दिव्य मिलन	74
साधना शिविर	
आपके लिये	77



प्रकाशक एवं स्वामित्व

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

हात्या

सुवर्णन प्रिन्टर्स
 487/505, पीरागढ़ी,
 रोहतक रोड, नई दिल्ली-87
 से सुदृश्ट तथा
 मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान हाईकोर्ट

माल्या (भारत में)

एक प्रति: 24/-
वार्षिक: 258/-

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्कलेब, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन: 011-27352248, टेली फैक्स: 011-27356700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलेजी, जोधपुर - 342031. (राज.) फोन: 0291-2432209, टेली फैक्स: 0291-2432010
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - mtyv@siddhashram.org

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुर्तक करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गत्य समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक धुमककड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर-न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका का कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 258/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है। अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

☆ प्रार्थना ☆

शुक्र, सनकादि, देवत्रिष्णि नारद पीकर इसको बने अजर। मुनि मृक्णडसुत इसको पीकर हुए सदाके लिये अमर। शबरी, जणिका, गीथ, अजामिल पीकर इसको जये सुधर। ध्रुव, प्रह्लाद इसीको पीकर जये अजम भवसागर तर। प्रभुपद-पोत सुलभ कर इससे, तुम भवनीर-निधान तरे। सद्गुरु अमृत है मित्रो! इसका प्रतिपत्त पान करो। तुलसी, सूर, कबीर, तुकाको मिला इसीसे वश अक्षय। नाभा, नानक, नरसी, नरहरि पीकर इसे रहे निर्भय। गुरु जरेविन्दसिंह की इससे धर्मयुद्ध में हुई विजय। श्रीचैतन्य महाप्रभु इसको पीकर हुए युगल-रसमय। यह पीव्यूष प्राप्त है तो मत काल-व्याल-भय मान डरो। सद्गुरु अमृत है मित्रो! इसका प्रतिपत्त पान करो।

☆ संयम का पाठ ☆

समाट पुष्पमित्र ने अश्वमेघ यज्ञ का आयोजन किया। पूर्णाहुति होने के पश्चात् रात्रि में नृत्य का भी आयोजन हुआ। यज्ञ के ब्रह्मिष्ठ पतंजलि भी इस नृत्य-उत्सव में शामिल हुए। उनके साथ उनका शिष्य चैत्र भी था। आज तक चैत्र ने गुरु के मुख से योग तथा संयम का उपदेश ही सुने थे और आज ऐसी सद्विद्यका देने वाले गुरु स्वयं ही नृत्य उत्सव में हिस्सा ले रहे हैं। यह देखकर चैत्र के मन में गुरु के प्रति अश्रद्धा के भाव जागृत हो उठे। उस दिन के बाद से चैत्र का मन महाभाष्य और योग-सूत्रों के अध्ययन में नहीं लगा। वह सदैव सोचता रहता कि मेरे गुरु जो संयम की शिक्षा देते हैं, स्वयं असंयम का शिकार होकर नृत्य में भाग लेने चले गए। एक दिन पतंजलि प्रवचन देते हुए कह रहे थे - आंखें देखकर और कान सुनकर असंयम की ओर प्रवृत्त होते हैं। अतः कानों और आंखों को सदा ही सात्विक वस्तुओं की ओर प्रवृत्त करना चाहिए अन्यथा असंयम की संभावना है। चैत्र ने तत्काल प्रश्न किया - क्या नृत्य-गीत और रास-रंग भी चित्तवृत्ति निरोध में सहायक है? पतंजलि चैत्र का संकेत समझ गए और बोले - वत्स सीधा प्रश्न करो।

वास्तव में तुम्हारा प्रश्न यह है कि उस रात नृत्योत्सव में सम्मिलित होना संयम विरुद्ध नहीं था क्या? तो सुनो, मैं सभी को योग के सूत्र पढ़ाता हूँ किन्तु निःस्वार्थ होकर, मैं नृत्य समारोह में भी गया तो सर्वथा निःस्वार्थ और निर्लिपि भाव से। मेरे इस भाव को समझकर धैर्य से निःस्वार्थ भाव को पकड़ने की शक्ति पैदा करो तो तुम अधिक सुखी रह सकोगे। विपरीतताओं के मध्य तटस्थिता के साथ जीने वाले को समझ पाने की धीर-गंभीर दृष्टि विकसित करना सदैव फलदायी सिद्ध होती है।

रामदेव रामदेव वालाहाति



जुड़ाव मन का



जीवन में पूर्ण आनन्द, मस्ती, उमंग, जोश चाहिये तो आवश्यक है गुरु का मिलना और साधना सम्पन्न करना, स्थिर साधना करने से ही शरीर और मन सधता है, जो शरीर और मन को साध सकता है वही साधक हो जाता है साधक ही साधना के पथ पर अग्रशील होकर अपने जीवन का नवनिर्माण कर सकता है इसके लिये तांत्रोक्त पर्व होली का विशेष महत्व है, इन्हीं विषयों पर सद्गुरुदेव का यह आह्वान भरा प्रवचन -

अहं हुतात्यां हविष्यति
नित्याय सत्याय हुतात्मकाय,
चैतन्याय भव्याय परात्पराय,
शुद्धाय बुद्धाय निरंजनाय,
नमस्तु नित्यं गुरु शेष्याय ।

नित्य, सत्य, हुतात्मन, चैतन्य, भव्य, परात्परा, शुद्ध, बुद्ध एवं भव्य गुरु को हम सब प्रणामांजलि समर्पित करते हैं।

यह फाल्गुन मास और यह दिन, जिसे हम होली के नाम से विभूषित करते हैं या कहते हैं, ये अत्यंत महत्वपूर्ण और चैतन्य है। होली शब्द बहुत बाद में हुआ पहले तो शब्द था हुतात्मा ।

‘हुतात्मां इति होली’

जो मन में तरंग पैदा कर सके, उसे होली कहते हैं और जो अपने मन में तरंग पैदा कर सके, उसके अंदर ही एक जागृति होती है, एक चैतन्यता पैदा होती है। जो अपने आप में एक लहर पैदा कर सके, एक खुशी पैदा कर सके, एक प्रसन्नता पैदा कर सके, उसे हुतात्मा या होली कहा गया है।

हुतात्मा का अर्थ है कि जो कुछ हमारे अंदर है जो दबा हुआ है, प्रसन्नता, आह्लाद, खुशी वह सब बाहर निकलने की क्रिया, और स्पष्टता के साथ बाहर निकलने की क्रिया को होली कहते हैं। ...और कई हजार वर्षों से हम होली मनाते पैदा हुए या होली को जलाया उसी से होली का पर्व बना ।

होली का तो पुराणों में भी वर्णन है और किसी भी दिन होली मना सकते हैं मगर आवश्यक है कि हमारे चेहरे पर प्रसन्नता या आह्लाद पैदा करने वाला हो और हम अंदर एक आह्लाद पैदा करें।

...और यह जो होली का महीना होता है, वसंत प्रारंभ हो जाता है, पतझड़ खत्म हो जाता है, पीले पत्ते जो होते हैं पेड़ों के, सब पत्ते झड़ जाते हैं, नई कोपले आ जाती हैं, न गर्मी होती है, न सर्दी होती है, न बरसात होती है, एक बसंत ऋतु बहने लगती है, धान की कटाई हो जाती है और किसान फ्री हो जाते हैं और सब लोगों में प्रसन्नता आ जाती है।

किसान खुश हो जाते हैं कि मेरे घर में धन आ गया, गरीब आदमी खुश हो जाता है कि अब कोई सर्दी गर्मी नहीं है, आम आदमी प्रसन्नता का अतिरिक्त अनुभव करता है कि मेरे अंदर एक आनंद, जोश और जवानी है। इन सारी क्रियाओं को लेकर जो शब्द बना, वह होली है।

होली किसी चीज को जलाने की क्रिया मात्र नहीं है। हिरण्यकश्यप की बहन होलिका को जला दिया, इसलिए होली नहीं है। होली तो उससे भी पहले की एक क्रिया है, जब मन में एक तरंग पैदा की जा सकती है।

...और होली के दिन भी आपके अंदर तरंग पैदा नहीं हो सकती तो साल भर फिर पैदा हो भी नहीं सकती। इस समय भी एक लहर हिलोर, खुशी पैदा नहीं हो सकती तो फिर जिदंगी में पैदा होगी भी नहीं। फिर तो बेकार जीवन है और ऐसे बेकार जीवन जीने वाले करोड़ों हैं या सौ में से 98 तो हैं ही, जिनके जीवन का कोई उद्देश्य ही नहीं, लक्ष्य ही नहीं है। केवल स्वार्थमय है।

ओर स्वार्थमय जीवन कोई जीवन होता ही नहीं। मैं ऐसा नहीं कह रहा हूँ कि आप परमार्थी बन जाएं। मगर ऐसा तो कहता हूँ कि स्वार्थी भी न बनें। बिल्कुल बीच में खड़े रहेंगे तो आपके चेहरे पर प्रसन्नता प्राप्त हो पाएंगी।

स्वार्थी आदमी के चेहरे पर प्रसन्नता नहीं आ सकती और परमार्थी आदमी के चेहरे पर भी प्रसन्नता नहीं आती। साधु संन्यासी के चेहरे पर प्रसन्नता आ ही नहीं सकती। अगर सही अर्थों में साधु है तो बिल्कुल गंभीर रहेगा। बाहर आएगा ही नहीं क्योंकि कुछ अंदर है ही नहीं उसके। हिलोर ही पैदा नहीं हो सकती।

और स्वार्थी आदमी भी हरदम एक ही बात सोचेगा कि मैं कैसे दूसरे को लूटूँ, कैसे छीनूँ? उसके मन में भी हिलोरें नहीं पैदा हो सकतीं। इन दोनों के बीच में खड़े होने की क्रिया को होली कहते हैं।

जहां मेरे मन में किसी प्रकार का स्वार्थ क्रिया भी नहीं है और आपके सामने अंदर हुतात्मा जाग्रत कर सके। है। इसलिए होली को भी हुतात्मा वास है उसे भी हुतात्मा कहा गया उसे भी हुतात्मा कहा गया है।

हुत का अर्थ है आहुति देना, बाहर प्रसन्नता की चीज है उसे करना।

नहीं है, लालच नहीं है वहां घर लुटाने की ऐसा सद्गुरु, ऐसा गाइड है, जो आपके इसलिए गुरु को हुतात्मा कहा गया कहा गया है। अंदर जो ईश्वर का है। अंदर जो अग्नि है जठराग्नि,

आहुति देने का अर्थ है कि जो अंदर लेना और उसे व्यक्त

यों तो जीवन में दुख, तनाव और अवसाद रहेंगे ही, मगर हकीकत में देखा जाए तो इस संसार में तनाव जैसी कोई चीज है ही नहीं। दुःख, जैसी कोई चीज है नहीं, भगवान ने बनाई ही नहीं है। दुःख केवल हम अहसास करते हैं, हम अहसास करते हैं कि मैं बहुत टैन्शन में हूं। क्या टैन्शन है? आज नहीं तो कल उसका समाधान निकल जाएगा, परसों समाधान निकल जाएगा, निकलेगा ही निकलेगा।

तनाव हम स्वयं क्रिएट करते हैं। हम अपने आप में खुद दुखी बनते हैं, कल क्या होगा, लड़की बीस साल की हो गई अब क्या होगा, परसों क्या होगा, लड़का नहीं कमा कर देगा तो क्या होगा, मैं मर जाऊंगा तो पीछे क्या होगा?

होगा जब होगा, अभी से क्यों तनाव करना? हम व्यर्थ में दुखी होते हैं। इसलिए दुःख का कारण हम खुद हैं, तनाव का कारण भी हम खुद हैं। प्रभु ने तनाव नहीं बनाया है। उन्होंने दुःख भी नहीं बनाया, उन्होंने वेदना भी नहीं बनाई, उन्होंने कष्ट बनाया ही नहीं, क्रिएट हमने किया है। उस सारे नेगेटिव को समाप्त करने की क्रिया को होली कहते हैं।

हम होली का अर्थ गुलाल डालना, रंग डालना और कीचड़ डालना समझ बैठे हैं, यह तो फूहड़ों की गंवारों की, अनपढ़ लोगों की, जिनको ज्ञान चेतना नहीं है उनकी एक क्रिया है व्यक्त करने की। बाकी हमारे शास्त्रों

में ठीक, कृष्णदेव में भी होली का वर्णन है और वहां से लगाकर चाहे संन्यासी हैं, गृहस्थ हैं, कृष्ण-राधा, कृष्ण-गोपियां हैं, राम और सीता हैं। होली उन्होंने भी खेली, होली उत्सव उन्होंने भी मनाया, मगर उसमें एक शालीनता है, सभ्यता है, संस्कृति है, चेहरे पर एक उत्साह है, एक प्रसन्नता है और अगर इस दिन तुम्हारे चेहरे पर प्रसन्नता नहीं आती तो बाकी के तीन सौ चौसठ दिन भी नहीं आ सकती। तुम उसी में जलते रहोगे, जो कि तुम अपने अंदर क्रिएट करते हो और जो क्रिएट करते हो, वही वापस ओढ़ते हो। मैला कपड़ा आप नहीं धोओगे तो मैला कपड़ा वापस पहनना ही पड़ेगा।

जीवन में नवीनता हो, तभी प्रसन्नता आ सकती है। प्रत्येक दिन सूर्य नवीन तरीके से उगता है, और जहां सूर्य आज उगा है वहां से कल उग ही नहीं सकता। यानी वहां पर आज सूर्य पूर्व दिशा में 352 डिग्री पर उगा है तो कल 353 डिग्री पर उगेगा, 352 डिग्री पर नहीं उग सकता क्योंकि पूर्व का विस्तार इतना लंबा चौड़ा है। जब सूर्य एक जगह से नहीं उग सकता तो आप भी एक जगह स्थिर नहीं रह सकते। अगर आप स्थिर रहते हैं और दुःख में ही रहते हैं तो दुःख आप क्रिएट करते हैं।



यदि कोणार्क जाएं तो वहां सूर्य मंदिर की विशेषता क्या है? आपने कोणार्क को देखा होगा भुवनेश्वर के पास में। उसमें 365 छोटी छोटी बारियां हैं और आप देखेंगे कि एक दिन इस बारी में से किरण अंदर जो सूर्य है उस पर सीधी पड़ती है तो अगले दिन अगले इश्वरखे से ही सूर्य की किरण पड़ेगी। इसका मतलब इतना डिफरेंस सूर्य के उगने में हुआ। इसलिए सूर्य मंदिर हैं वो वहां। उन पत्थर की मूर्तियाँ को देखने की आवश्यकता नहीं। वे कितने उच्च कोटि के वैज्ञानिक थे, जिन्होंने इस बात को सिद्ध किया।

जब सूर्य एक जगह से नहीं उगता तो आप भी एक जगह स्थिर नहीं रह सकते और अगर रहते हैं तो इसका मतलब आप तनाव में हैं और वह तनाव आपका स्वयं का बनाया हुआ है। हाय, मैंने दो घंटे ज्यादा काम कर लिया आज ज्यारह बजे तक, तो मैं दुःखी हूं, आज उसने मुझे गाली दे दी तो मैं दुःखी हूं। अरे! गाली दी तो उसका मुंह गंदा हुआ, चांद पर थूकेगा तो उसके चेहरे पर पड़ेगा, फिर आप क्यों दुःखी और तनाव ग्रस्त होते हैं? मैं यह नहीं कह रहा हूं कि आप संन्यासी बन जाएं, मैं यह भी नहीं कह रहा कि आप बिल्कुल भोगी बन जाएं। आप बीच में खड़े रहें। जो कुछ हो रहा है, हो रहा है। आप नहीं भी चाहेंगे तो भी होगा, आप चाहेंगे तो भी होगा।

दुःख को ही आप पकड़ते हैं, सुख को आप पकड़ते ही नहीं। मैं आपके चेहरे को देखकर प्रसन्नता व्यक्त करता हूं तो यह सुख है और मैं कहूं कि ये कहां से आ गए उठकर के, तो मैं दुःखी हो जाऊंगा। आप कह सकते हैं कि पैंट पहनें तो बहुत अच्छे लगेंगे। पैंट सूट पहना होता तो बहुत सुखी होता, धोती पहनी है तो बहुत दुःखी हूं।

ये सब दुःख आपके स्वयं के कारण हैं। हमारे जीवन में सुख-दुःख, हृषि विषाद, आह्लाद, पूरी सब्जी, हलवा सब हैं। खाली पूरी तो नहीं खा सकते, खाली हलवा भी नहीं खाया जाएगा, सब रंग जीवन में होने चाहिए। होली का वास्तविक तात्पर्य कुछ और है। रंग गुलाल तो एक अभिव्यक्ति है, अंदर तुम्हारे एक आनंद है तो होली है। मुट्ठी भर गुलाल डालने से होली नहीं हो पाएगी। वह प्रसन्नता आ ही नहीं सकती जीवन में, अगर अंदर से एक आनंद का प्रवाह न हो।

इसलिए जीवन का प्रत्येक पल किसी का होकर के बिताना चाहिए या किसी को अपना बनाकर के बिताना चाहिए, उसको होली कहते हैं। इनमें से एक काम करना पड़ेगा, या तो आप किसी के हो जाएं, जब हो

जाएंगे तो आप स्वार्थ से परे हट जाएंगे । फिर आप में खुद का स्वार्थ नहीं रहेगा । या किसी को अपना बना लें तो भी आप स्वार्थ से परे हट जाएंगे कि आपने किसी को अपना लिया । दोनों स्थितियों में आप खड़े हैं । अब यह तो आपके हाथ में है कि आप या तो आप हुतात्मा हो जाएं या स्वार्थ में पढ़े रहें ।

हुतात्मा माने गुरु, हुतात्मा माने कृष्ण, हुतात्मा माने ईश्वर, हुतात्मा माने आपके उच्च विचार, आपका चिंतन । आप अपने विचारों को नेगेटिव थिंकिंग में डालिए, आपको कोई रोकने वाला नहीं । आप पॉजीटिव थिंकिंग में डालिए तो भी आपको कोई रोकने वाला नहीं ।

मैं चौदह पद्रंह साल का था, मेरे पिताजी मर गए तो मैं चार छ: महीने दुःखी हुआ, उसके बाद जिंदंगी चलती रही और वे आज तक जिंदा रहते तो भी जिंदंगी चलती । संन्यासी था तब भी ठीक थी, आज गृहस्थ हूं तो भी ठीक हैं, आज स्वस्थ हूं तो भी ठीक है, और पूना में छ: महीने तक बीमार पड़ा रहा तो भी ठीक था । यह तो शरीर है, सुख भी आएगा, दुःख भी आएगा । हम अहसास क्या करते हैं सब उस पर निर्भर है और जो हम अहसास करते हैं वही क्रिया हमारे शरीर को नेगेटिव या पॉजीटिव थिंकिंग में लाएगी और उसी से हमारा पूरा साल कटेगा ।

होली अपने आप में एक विश्लेषण करने की क्रिया है, सोचने की क्रिया हैं, चिंतन करने की क्रिया है कि मुझे यह साल कैसे बिताना है, रोते हुए, कलपते हुए,

दुःख देते हुए या प्रसन्नता के साथ मुस्कुराते और छल छलाते हुए । क्षण भर रूक कर यह सोचने की क्रिया होली है क्योंकि सारे काम निपट चुके होते हैं इस समय फसल कट चुकी होती है, वसंत ऋतु आ चुकी होती है, आर्थिक वर्ष खत्म हो चुका होता है सर्दी कम हो जाती है, पतझड़ खत्म हो जाता है तब भी आप गर्मी में तपते हुए जैसे रहें अथवा कांपते रहे तो आपकी इच्छा है ।

जीवन का लक्ष्य है - प्रसन्न होना, जिसे हम नहीं समझ पा रहे हैं, होली उसे समझने की क्रिया है ।

आज अगर होली है और आपके चेहरे पर

जो महीने भर पहले की रेखाएं थीं विषाद की वे रेखाएं अगर कल भी सवेरे मैं आपके चेहरे पर देखूंगा तो मैं आपको मरा हुआ ही समझूंगा, मैं आपको सजीव कहां से देखूंगा, जिंदा आपको देखूंगा कहां से, कुछ चेंज आपमें आएगा तो होली का अर्थ है बरना व्यर्थ है ।

अंदर जो कुछ है वह चेहरे पर दिखाई दे जाता है । चेहरा देखकर पता लग जाएगा कि यह आदमी भला है या धोखे बाज है इसमें प्रसन्नता की अभिव्यक्ति है या नहीं है ।

होली का अर्थ है हम बदलें, हममें नवीनता आए । जैसा कि मैंने पहले कहा..

नित्याय सत्याय हुतात्मकाय

इसका अर्थ है कि नित्य हम नवीन बनें, नित्य हम सत्य बनें, नित्य हम शुद्ध बनें, नित्य हम हुतात्मा बनें और मैं आपको कहता हूं कि नित्य आप धोर स्वार्थी

बनें और मैं ही कहता हूं कि नित्य घोर परमार्थी बनें। मैं। आपको घोर साधु भी नहीं बना रहा हूं, और घोर गृहस्थ भी नहीं बना रहा हूं और इस प्रकार के विचार भारत वर्ष में कोई स्पष्ट कर भी नहीं पाता। या तो कहेगा तू सन्न्यासी बन, या तुमसे छीनेगा या मूर्ख बनाएगा। ऐसा न मेरे मानस में है, न रहा है जिदंगी में। जो जिदंगी में शुरू से फक्कड़ रहा है, वह आज भी फक्कड़ ही तो है। अब आप उनको अच्छा कहें या बुरा कहें। राम को आप अच्छा कहें या बुरा कहें यह तो आपके चिंतन और विचार की बात है। आप मीरा को अच्छा कहें या बुरा कहें यह आपका चिंतन है।

मीरा तो आपने आपमें निश्छल भाव से बढ़ती जा रही थी राजमहल से उस समय में राणासांगा के समय में, उतरी तो उतर गयी और आप अपने ऊपर सौ-सौ बंधन बांधते रहते हैं कि यह हो जाएगा तो क्या होगा?

अरे, होगा जो हो जाएगा, अच्छा होगा या बुरा होगा उस समय देख लेंगे। कल की चिंता को आप इस समय क्यों झेल रहे हैं?

होली... यह चिंतन करने के लिए है।

अब आप तनाव में हैं तो आपके तनाव को मुझे झेलना पड़ता है। आप पूछते हैं कि आप तनाव में हैं, क्या कारण हैं? आप मुस्कराते तो अपने आप मेरे चेहरे पर मुस्कुराहट आ जाएगी। गुरु को हुतात्मा बनना पड़ता है। हुतात्मा का अर्थ जहर भी है और हुतात्मा का अर्थ अमृत भी है, अगर आप पाणिनी की व्याकरण शास्त्र पढ़े तो पायेंगे 365 अर्थ है हुतात्मा के

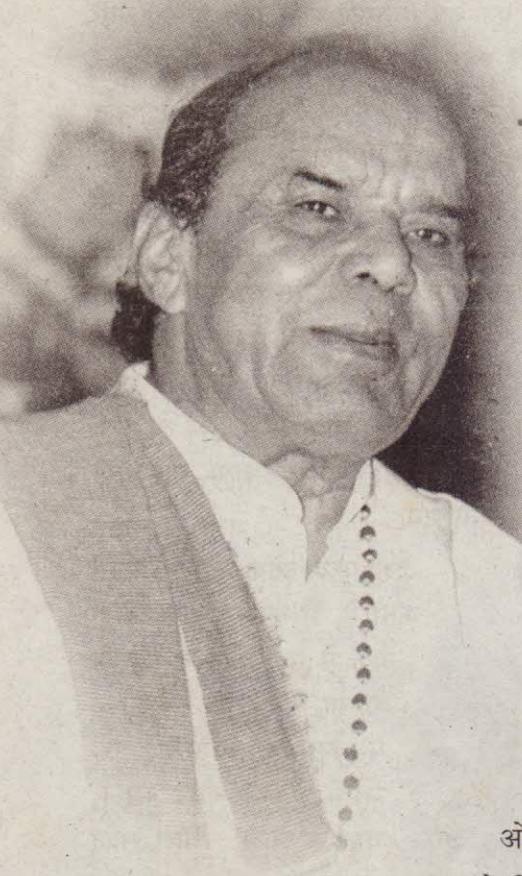
और दिन भी एक वर्ष में हमारे पास 365 ही है। बड़ी एक लिंकिंग है एक सीधा कनेक्शन है।

इसलिए होली के अवसर पर मैं आपको आशीर्वाद दे रहा हूं कि आप मुझसे पूरी तरह जुड़ जाएं या बिल्कुल कट जाएं। मैं आपको दोनों जगह छोड़ रहा हूं, या तो जुड़ जाएं या बिल्कुल कट ऑफ हो जाएं। मुझे कोई दुःख, कोई विषाद होगा ही नहीं। लाखों लोग कर्ते तब भी कोई विषाद होगा ही नहीं। लाखों लोग जुड़े तब भी कोई फर्क नहीं पड़ा। न उसमें सुख या दुःख हुआ, न इसमें सुख या दुःख है। यह तो पानी है, जंगा का पानी जो बह गया, अब गया तो गया।



इसी पृथ्वी लोक में मेरा जितना काम है, मैं करूँगा, जब पृथ्वी लोक में मेरा काम समाप्त हो जाएगा मैं किसी और लोक में चला जा जाऊँगा, उस लोक में भी बीस साल, चालीस साल, पचास साल काम करूँगा। वहां भी जब मेरा काम समाप्त हो जाएगा मैं किसी और लोक में चला जाऊँगा। सैकड़ों लोक हैं - ब्रह्म लोक है, रुद्र लोक है, विष्णु लोक है, शुक्र लोक है। यह पृथ्वी लोक है।

कभी कोई समझेगा। आज नहीं तो दो हजार साल बाद समझेगा। और मुझे इस की आवश्यकता भी नहीं कि लोग समझें मुझे। मैं इस बात के लिए परेशान भी नहीं हूं। इस बात का चिंतन करता ही नहीं हूं मैं। नहीं, समझेंगे तो घर वाले भी नहीं समझेंगे और समझेगा तो दूर बैठा ईश्वर भी समझ लेगा।



जब भीष्म शर शैश्व्या पर पड़े थे, तो एक हजार तीर लगे थे, उनके खून बह रहा था। कृष्ण गए मिलने के लिए तो भीष्म ने कहा - कृष्ण! मुझे सब कुछ समझ आ रहा है, बस एक बात समझ नहीं आ रही है कि कौन सी क्रिया है जिसके कारण मेरा पूरा शरीर बाणों से छिदा हुआ है खून बह रहा है और मेरा सारा शरीर अशक्त है, रुण है। मैंने तो जिंदगी में कोई पाप किया ही नहीं। फिर यह स्थिति, यह अशक्तता क्यों आई?

तो कृष्ण ने वहां पर कहा भीष्म को - तुम्हारे दो कारण हैं कि तुम्हारे शरीर को इतना कष्ट भोगना पड़ रहा है। एक तो तुमने कौरवों के सारे दुःख और पापों को अपने ऊपर ओढ़ा, जो कि गलत थे। उनके पापों को ओढ़ने का भी फल तुम्हारे शरीर को मिल रहा है क्योंकि तुमने उन्हें ओढ़ा। और दूसरा सौ जन्म पहले तुमने एक जीवित सांप को उठा कर एक झाड़ी पर फेंक दिया था जहां पर कांटे थे, उसका पूरा शरीर छिद गया था, वह पाप तुम्हें आज भोगना पड़ रहा है।

जो आज हम कर रहे हैं क्या हमें नहीं भोगना पड़ेगा?

...और कृष्ण ने कहा - कौरवों के सारे पापों को भी तुमने ओढ़ा। द्रौपदी नंगी होती रही और तुम देखते रहे, वह पाप तुमने ओढ़ा, उसका फल भी तुम्हें भोगना पड़ रहा है।

तो शिष्यों के पापों का फल भी गुरु को भोगना ही पड़ता है। तुम्हारे पापों का फल भी मुझे भोगना पड़ेगा, क्योंकि तुमसे मेरा कोई लिंक है। यों मैंने तो कोई पाप किए नहीं, पाप मैं करता नहीं, डांट देता हूं फिर शांत हो जाता हूं। मैं छल करता नहीं, पाप करता नहीं। अब आप मुझे छली कहें, झूठा कहें, धोखेबाज कहें, भला कहें, नित्याय, सत्याय जो चाहें आप कहें। यह आपकी मर्जी। मैं अपने आप मैं स्पष्ट हूं।

और जिस दिन तुम्हारी आंखें खुलेंगी तो वो चीज तुम्हें दिखाई देगी नहीं जो तुम देखना चाहते हो। मैं कभी काम से बीमार होता नहीं हूं, शरीर से कभी होता भी हूं तो उसका कारण मैंने तुम्हें उदाहरण देकर समझा दिया। होंगे शिष्यों के पाप - उनका छल मैंने अपने ऊपर लिया होगा उनका पाप, किए, तो मुझे ओढ़ने पड़ेंगे क्योंकि तुम मेरे आश्रय में हो और आप शुद्ध, सात्त्विक, प्रसन्न रहेंगे तो मुझे भी प्रसन्नता मिल जाएगी, आपके मन में न्यूनता होगी तो मुझे भी न्यूनता मिल जाएगी। मैं अपनी जगह स्थिर खड़ा हूं और बराबर देखता जा रहा हूं कौन कैसे कर रहा है, क्या कर रहा है? बिल्कुल आंखें मेरी खुली हुई हैं। कहीं मेरे मन में संशय है ही नहीं।

यह होली का पर्व है और हम शालीनता के साथ में मुस्कुराते हुए, और गुरु आज्ञा का पालन करते हुए साधनाएं सम्पन्न करें, गुरु जो काम दें वह करे और मस्ती के साथ इस पर्व को मनाएं और वास्तव में जो होली का अर्थ है उसे चरितार्थ करते हुए चेहरे पर एक मुस्कुराहट लाएं, मन में एक आनंद की हिलोर पैदा करें, जो 365 दिन हमारे अंदर बनी रहे, 365 दिन हम काम कर सकें, उसी आनंद में, उसी खुमारी में, वही तो जीवन है!

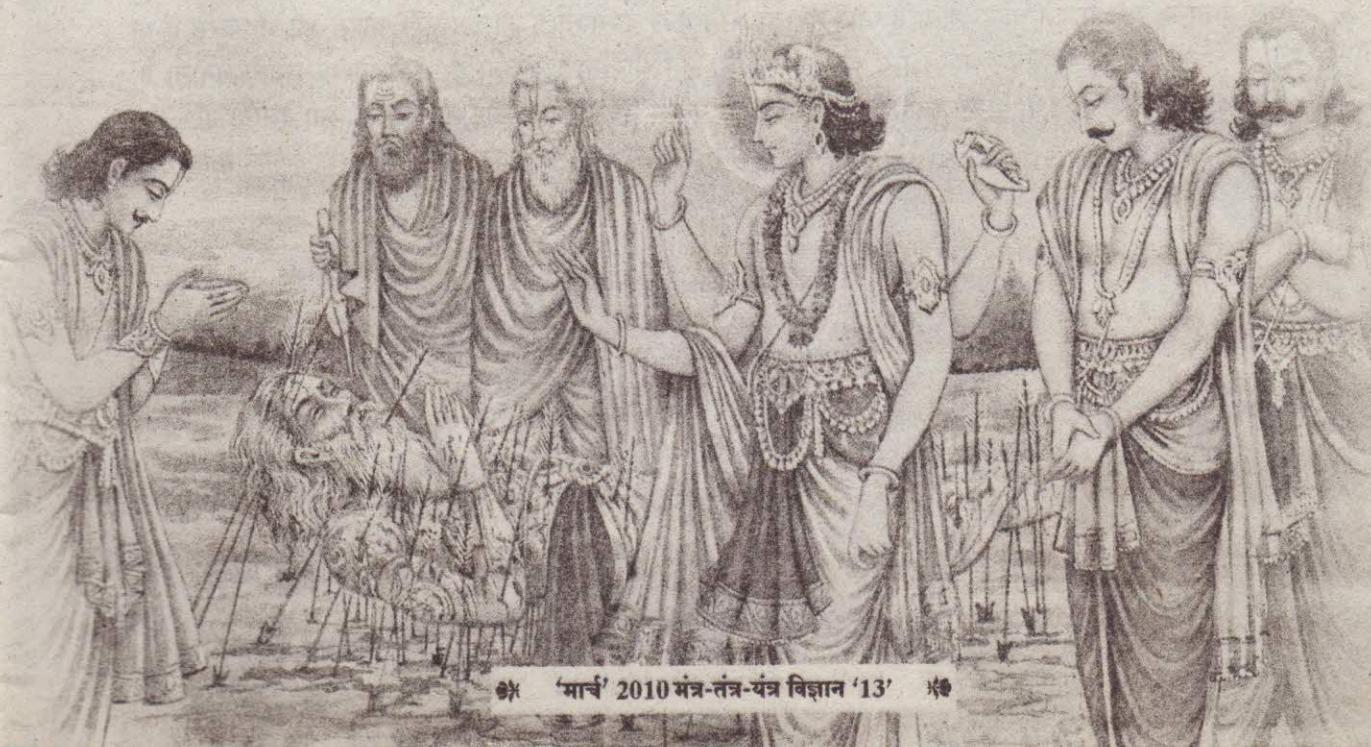
...और अगर आप गुरु के प्रति कोई काम करते हैं तो उसमें मेरा कोई निजी स्वार्थ या लाभ है नहीं, दो पूँडी से तीसरी पूँडी में खा नहीं पाऊंगा। मगर आप अगर मेरे ज्ञान को सुरक्षित रखते हैं और उसके प्रसार में सहायक होते हैं तो आने वाली पीढ़ी याद रख पाएंगी कि यह चीज थी जो हमें ओरिजिनल मिल पाई।

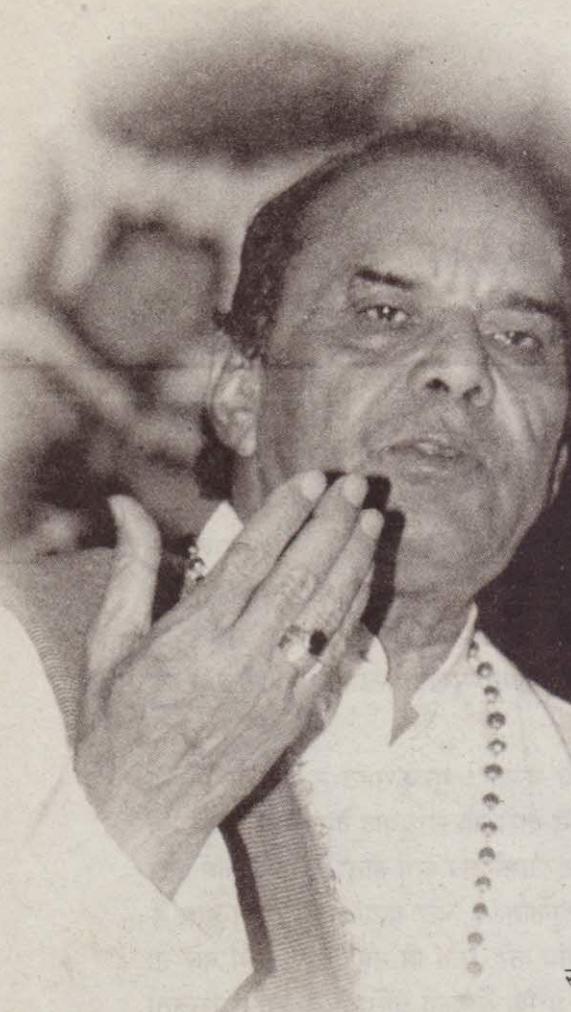
आज तक मालूम ही नहीं कि होली का वास्तविक अर्थ क्या है, कौन स्पष्ट करेगा? पिछले 2000 वर्षों में बताइए किसने स्पष्ट किया?

नहीं, ज्ञान स्पष्ट होगा तो आरिजनैलिटी नहीं आ पाएंगी कहीं पर और मेरे इन विचारों को आप पत्तों पर उतार देंगे या सुरक्षित रख पाएंगे तो ये पश्चिम वाले वे जो हिंदी नहीं जानते हैं वे इस ज्ञान को समझ पाएंगे? आप ऐसा करते हैं तो आपको ही सारा श्रेय मिले, मुझे तो एक परसेंट भी न मिले। और आप गुरु कार्य करते हैं तो आपके खुद के पाप समाप्त होते ही हैं, पुण्य उदय होता ही है, पूरा जीवन सुखी होता ही है और चेहरे पर मुस्कुराहट आती ही है, इसमें कोई संदेह नहीं।

और कभी आप गुरु का अभिवादन करें तो मुस्कुराते हुए तालियां बजाएं। मुस्कुराहट नहीं है तो मैं भी सोचता हूं ये जिंदा हैं या मरे हुए हैं? ताली बजाने का अर्थ होता है सामने वाले को साधुवाद देना और अपने मन की प्रसन्नता को वहां तक पहुंचाने की क्रिया - एक सहज क्रिया और हाथ जोड़ने का अर्थ होता है कि मैं कर्म और धर्म दोनों को मिलाकर आपकी प्रार्थना करता हूं, आपके सामने सिर झुकाता हूं, यह दायां कर्म प्रथान हाथ है और यह बायां धर्म प्रथान हाथ है। कहा गया है कि धर्म करें तो चुपचाप करें, पता ही नहीं चले। कर्म करें तो दिखाई दें। और दोनों हाथों को मिलाकर हाथ जोड़ने का अर्थ ही यह है कि मैं दसों इन्द्रियों के साथ प्रसन्नता व्यक्त करता हूं और धर्म कर्म के साथ आपको साधुवाद देता हूं? इसलिए देवता को या गुरु को नमन करें तो प्रसन्नता के साथ करें और जीवन में प्रसन्नता को उत्पन्न करने का जो पर्व है, उसे होली कहते हैं।

और जैसी कि परंपरा है हर वर्ष होली उत्सव जोधपुर में मनाया जाता है। प्रत्येक स्थान का अपने आप में एक



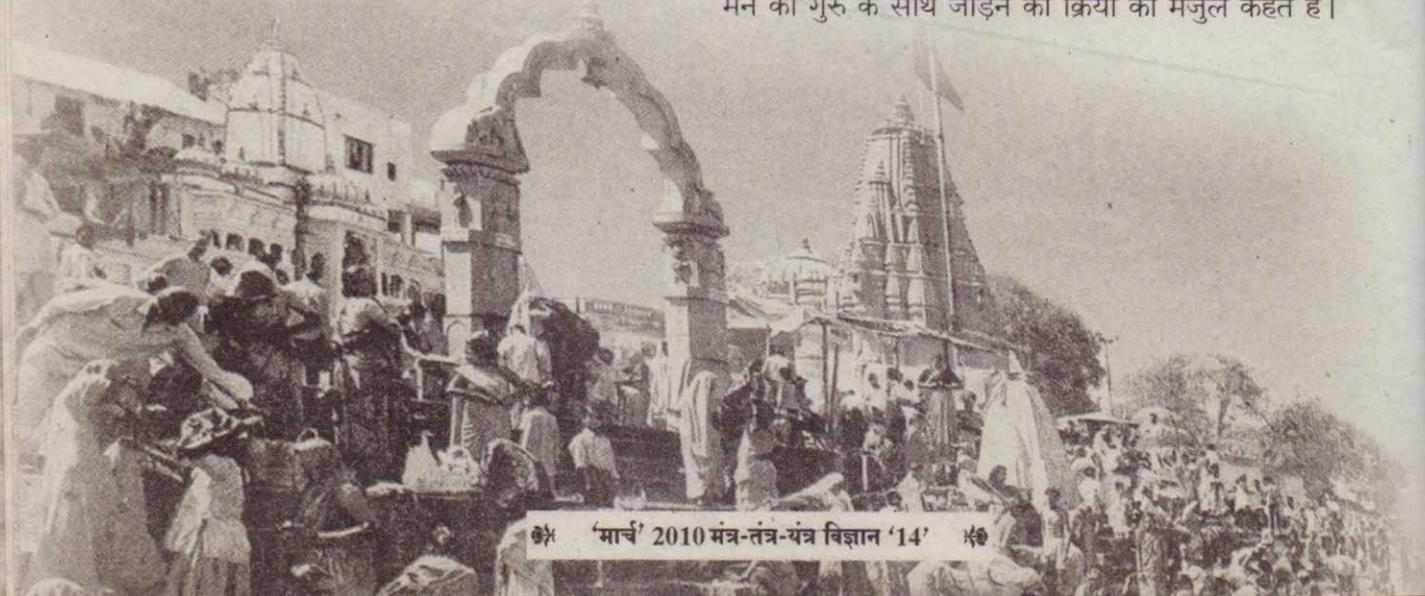


महत्व है। हरिद्वार में इतनी भीड़, और इतनी रेलमपेल, इतने जेबकतरे, इतने भले, इतने साधु, इतने गृहस्थ होते हैं फिर भी हरिद्वार का अपना एक महत्व है। धक्का मुक्की खाते हुए भी, हम कुंभ में जाते हैं, तकलीफ पाते हैं आग लग जाती है, पुल दूट जाते हैं, सैकड़ों लोग मर जाते हैं, फिर भी हम जाते हैं कुंभ में क्योंकि उस स्थान का एक महत्व है, ठीक इसी प्रकार से जोधपुर का अपना एक महत्व है क्योंकि इस स्थान पर कम से कम चार पांच करोड़ मंत्र जप हुआ होगा साधकों के द्वारा पिछले बीस-तीस वर्षों में। इसलिए तपस्या भूमि है, एक तरह से आपकी गुरु भूमि है, आपकी साधना स्थली है।

और इस होली के शिविर को 'होली शिविर न कह कर, इसका नाम मंजुल महोत्सव रखा है और मंजुल का अर्थ है कि हम शरीर से ही नहीं मिलें, गुरु से मन से मिलें। और मन से मिलना अपने आप में बहुत कठिन होता है क्योंकि मन भटकता रहता है और जब तक गुरु से मन से जुँड़ेंगे नहीं तब तक चेहरे पर प्रसन्नता, ओज आनंद की उपलब्धि नहीं आ सकती। और अगर आनंद और हर्ष नहीं हैं तो मेरे हिसाब से जीवन एक पशु के समान है या यों समझ लीजिए हम जीवन को बोझे के समान ढो रहे हैं, बस चला रहे हैं।

जब मन पर ही नियंत्रण नहीं तो गुरु पर नियंत्रण कैसे होगा आपका? गुरु से मन से नहीं जुड़े तो कैसे आप कुछ प्राप्त कर सकते हैं? जब मन पर ही नियंत्रण नहीं होगा तो आपका अपने परिवार पर नियंत्रण कैसे होगा?

सब आदमी कर सकता है संसार में पर मन पर नियंत्रण नहीं कर सकता क्योंकि मन बड़ा चंचल होता है, मन चोर होता है, मन भागने वाला होता है और मन वह सब कुछ करवाता है जो हम नहीं चाहते हुए भी करते हैं या चाहते हुए भी नहीं कर पाते। मन चोर बनाता है, मन धोखेबाज बनाता है, मन विश्वासघाती बनाता है, मन धार्मिक बनाता है, मन देवता बना देता है और मन राक्षस बना देता है और इस मन को गुरु के साथ जोड़ने की क्रिया को मंजुल कहते हैं।



मन को गुरु के साथ जोड़ने की क्रिया, शरीर को गुरु के साथ जोड़ने की बात नहीं कर रहा हूँ। यह पहली बार एक आपको बता रहा हूँ कि हम अपने मन को गुरु के साथ जोड़ें। और जब जोड़ेंगे और मन जुड़ेगा, तो हम मनुष्य कहलाएँगे, अभी तक मनुष्य नहीं हैं। मनुष्य तो एक अलग क्रिया है और मनुष्य शरीर धारण करने के लिए लालायित रहते हैं। और जितने देवता हुए हैं, विष्णु, सद्गुरु, ब्रह्मा और बाकी सबने मनुष्य देह धारण की - कभी कृष्ण के रूप में धारण की, कभी राम के रूप में धारण की, कभी बुद्ध के रूप में, कभी चैतन्य के रूप में। और सभी देवताओं और अप्सराओं ने भी मनुष्य देह धारण की क्योंकि मनुष्य शरीर अपने आपमें श्रेष्ठतम स्थिति है जिसके माध्यम से हम आनंद की उपलब्धि कर सकते हैं।

देवता हंसते नहीं, क्योंकि उन्हें हंसने की क्रिया मालूम नहीं, देवता रोते भी नहीं क्योंकि उन्हें रोने की क्रिया मालूम नहीं, उनको सुख की अनुभूति नहीं होती, उन्हें दुःख की अनुभूति नहीं होती। न राक्षसों को सुख की अनुभूति होती न दुःख की। तो संसार में श्रेष्ठतम वर्ग मनुष्य कहा गया है और मनुष्य कब बनता है?

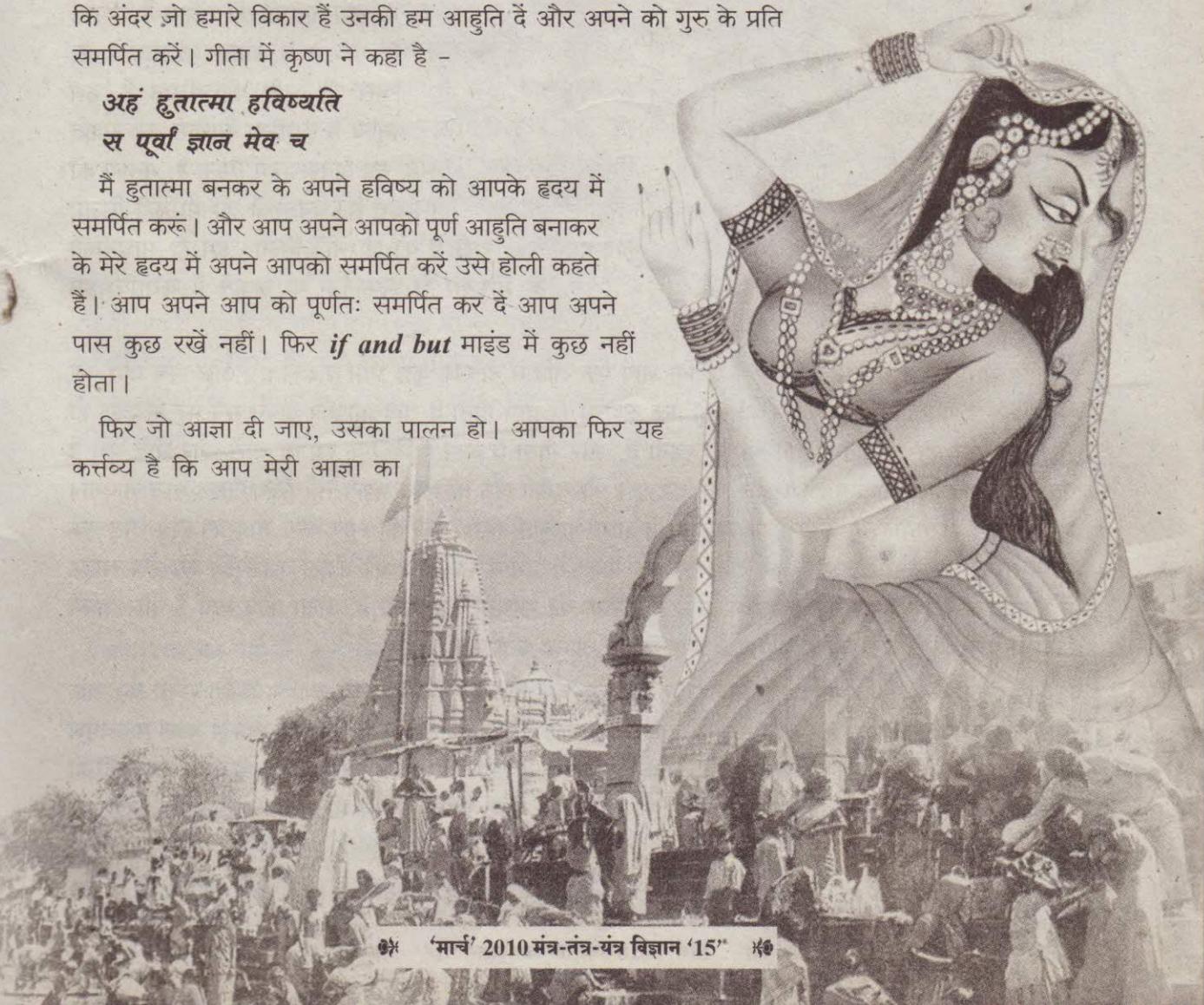
जब मन है तो मनुष्य बनता है, अन्यथा पशु बनता है। ...और पशु कई तरह के होते हैं, हाथी भी पशु है, घोड़ा भी पशु है, गधा भी पशु है और 25 हजार का एक कुत्ता भी पशु है।

मंजुल का अर्थ है कि इस होली के अवसर पर आपका और मेरा हृदय जुड़ जाना चाहिए, अब नहीं जुड़ा तो फिर पांच सौ साल भी नहीं जुड़ पाएगा। जैसा मैंने पहले कहा होली का मतलब यह नहीं है कि हमने उपले लगाकर या लकड़ी लगाकर होली जला दी। जलाने की यह क्रिया नहीं है। जलाने का अर्थ है कि अंदर ज्ञो हमारे विकार हैं उनकी हम आहुति दें और अपने को गुरु के प्रति समर्पित करें। गीता में कृष्ण ने कहा है -

**अहं हुतात्मा हविष्यति
स पूर्वं ज्ञानं मेरं च**

मैं हुतात्मा बनकर के अपने हविष्य को आपके हृदय में समर्पित करूँ। और आप अपने आपको पूर्ण आहुति बनाकर के मेरे हृदय में अपने आपको समर्पित करें उसे होली कहते हैं। आप अपने आप को पूर्णतः समर्पित कर दें आप अपने पास कुछ रखें नहीं। फिर *if and but* माइंड में कुछ नहीं होता।

फिर जो आज्ञा दी जाए, उसका पालन हो। आपका फिर यह कर्तव्य है कि आप मेरी आज्ञा का





पालन करें और मेरा कर्तव्य है कि मैं आपकी समस्याओं को दूर करूं। इसलिए यह मंजुल महोत्सव है। मामूली उत्सव ही नहीं महोत्सव है और इसी महोत्सव में आपको जीवन के सारे रंग, सारे आयाम देख लेने हैं - हंसी, खुशी, प्रसन्नता, छलछलाहट, एक दूसरे से जी भर कर भेटने की क्रिया, अपनी समस्याओं को गुरु को बता कर उन्हें दूर करने की क्रिया। यह सब इस होली के दिन होना चाहिए।

...और देवता क्यों मनुष्य शरीर धारण करते हैं, उन्हें क्या जखरत है? हम देवता बनना चाहते हैं और वे मनुष्य शरीर धारण करते हैं। यह विपरीत क्रिया क्यों हैं?

विपरीत क्रिया इसलिए है कि साधनाएं और दीक्षाएं केवल मनुष्य शरीर को ही प्राप्त हो सकती हैं, देवताओं को प्राप्त नहीं हो सकतीं। देवता दीक्षा ले ही नहीं सकते संभव ही नहीं है, देवता साधना भी नहीं कर सकते। ऋषि कर सकते हैं, ऋषियों ने साधनाएं कीं जो मनुष्य थे। हम ऋषियों की संतान हैं वशिष्ठ के गोत्र के हैं, गौतम के गोत्र के हैं, जिस भी ऋषि की संतान हैं, हम मनुष्य हैं इसलिए साधना कर सकते हैं, यह अवसर हमें मिला है, मनुष्य को ही मिला है। देवताओं को भी नहीं मिला, राक्षसों को भी नहीं मिला। हम ही साधनाओं के माध्यम से सफलता पा सकते हैं क्योंकि हम

मनुष्य हैं।

और साधनाएं कोई ऐसी चीज नहीं है, कि आप एक क्षण में ही सब कुछ प्राप्त कर लें। ...और सब प्राप्त कर भी सकते हैं यदि आप मंजुल बन जाए तो एक क्षण में ही प्राप्त होता है यदि आपका अपने मन पर नियंत्रण हो तो। और मन की जो इंद्रियां हैं वे भागती रहती हैं, और गीता में कहा है कि एक रथ के चारों ओर घोड़े बंधे हैं एक उत्तर, एक पूर्व, एक पश्चिम और एक दक्षिण। और आप एक घोड़े को पकड़ें तो दूसरा उधर भाग जाएगा। मन भी ऐसे ही भागता है कभी विषय वासना में भाग जाएगा, कभी पत्नी की ओर भाग जाएगा। सब घोड़े एक दिशा में नहीं भाग सकते और सब घोड़ों को एक दिशा में भगाने की क्रिया को मंजुल कहते हैं। हम एक साइड में एक दिशा में बढ़े और एक दिशा में बढ़ने की क्रिया को साधना कहा गया है, दीक्षा कहा गया है और अपने आप में पूर्ण होने की क्रिया कहा गया है जिससे हम आनंद उठा सकें।

हम मनुष्य बन सके, आनंद उठा सकें और जो कुछ चाहें बन सकें, इसे मंजुल कहा गया है। सुखी बन सकें और उस सबके लिए यहीं एक क्षण है जिसे होली कहा गया है। समझें तो यह दिन अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है और नहीं समझें तो एक सामान्य उत्सव होकर रह जाएगा, आप आए, बैठें, चले गए, उपलब्धि कुछ नहीं हो पाई और मेरे मन में कसक रह गई कि इन्होंने कुछ लिया ही नहीं, आपके मन में भी कसक रह गई कि आप कुछ प्राप्त कर ही नहीं पाए।

गलती, आपकी भी नहीं हैं, गलती मेरी भी नहीं है। बस मन का जुड़ाव नहीं हो पाया। जो मैंने कहा, वह

आपने नहीं पाया, जो मैंने कहा वह आपने किया नहीं और अपनी बुद्धि को वहां पर भी लागू करते रहे। यह लागू करने की जो क्रिया है वह आपकी बुद्धि है, तर्क है। इसलिए मैंने कहा कि मन मानेगा आपका। और अगर मैंने कहा कि इस मन को एक दिशा में बहना है तो फिर आपको ऐसा करना ही है और ऐसा मैं कोई काम कहूँगा ही नहीं जो आपके खिलाफ होगा। घर बुलाकर मैं आपका अपमान कर भी नहीं सकूँगा, और आपको न्यून दिखा भी नहीं पाऊँगा और अगर आपका मेरे प्रति समर्पण है और विश्वास है तो यह संभव भी नहीं कि संसार में कोई आपके सामने खड़ा हो सके और आपसे आंख मिला सके। ऐसा कभी होने ही नहीं दूँगा।

होली के ये दिन मस्ती के हैं, आनंद के हैं, उल्लास के हैं, जोश के हैं, जवानी के हैं। ...और नब्बे साल का भी जवान हो सकता है और बीस साल का भी वृद्ध हो सकता है। जवानी का अर्थ यह नहीं कि बीस से चालीस साल तक ही जवानी होती है। जवानी का अर्थ है कि जोश हो, वह जवानी है, उमंग हो, वह जवानी है, झुलस कर मिट जाने की क्रिया को जवानी कहते हैं। उफनती हुई नदी जो समुद्र में मिल जाती है वह जवानी कहलाती है। आकाश से उतरी एक बूँद जो लपक कर धरती को छू लेती है वह जवानी कहलाती है। जवानी का कोई टाइम नहीं होता, कोई उम्र नहीं होती, कोई समय नहीं होता।

...और मिलने का कोई क्षण नहीं होता कि चार बजे मिलना है छः बजे मिलना है। नदी अगर मुहूर्त निकालती रह जाएँगी तो फिर समुद्र से नहीं मिल सकती। कोई मुहूर्त होता ही नहीं। इसलिए जो मुहूर्त देखकर कुछ करते हैं वे सब झूठे हैं, व्यर्थ हैं। मुहूर्त जैसी कोई चीज होती ही नहीं। जब मन में तरंग उठी आप उठे, मिल लिए, कर लिया काम, साधना कर ली, सिद्धि कर ली, सफलता प्राप्त कर ली, देवता बन गए। जो कुछ बनना चाहें फिर बनें तो सही आप, कुछ तो बनें आप। राक्षस बनें तो घोर राक्षस बनें, दो हजार लोगों को मारकर अंगुलीमाल डाकू बनें और देवता बनें तो अपने आप में अद्वितीय बनें। कुछ भी बनें पर अद्वितीय बनें। मैं यह तो कहूँगा कि मेरा शिष्य तीन हजार लोगों को मार चुका है, एक हिटलर बन चुका है वापस। यह तो गर्व से कह सकूँ।

पर वह भी आप नहीं होने देते। वह गर्व भी मुझे नहीं लेने देते और साधना सिद्धि में सफलता प्राप्त करके भी मुझे गर्व नहीं लेने देते। तो फिर मेरा जीवन तो बेकार गया।

आप क्षण को पहचानें गुरु को पहचानें और गुरु से हृदय से जुड़ें। होली को मंजुल महोत्सव कहा गया है और मंजुल का अर्थ है एक जुड़ने की क्रिया, एक परिवर्तन की क्रिया। जो कुछ भी आपके चेहरे पर उदासी, तनाव चिंता, थकावट है उस सबको एक गठरी में बांध कर मेरे पास जमा करा दीजिए, शिविर से वापस घर जाएं तो बेशक वापस ले लीजिए, मुझे कोई आपत्ति नहीं।



पर जब तक मेरे साथ हैं होली महोत्सव में, कम से कम मुझे तो दुःखी मत करिये ।

मैं मुस्कुराना चाहता हूं और आप मुझे दुःखी करना चाहते हैं । आप उदास चेहरा लेकर मेरे सामने आ जाते हैं । मैं उदास रहता ही नहीं । जो कुछ बात होती हैं साफ-साफ कह देता हूं कि भाई! ऐसा है, इच्छा है तो करो नहीं तो तुम्हारी मर्जी । कोई बात मैं अपने माइंड में रखता ही नहीं, तुमने मुझे कहा कुछ, मैंने सुन लिया, बस खत्म ।

होली का पर्व हो, जोधपुर स्थान हो, और गुरु सामने हो उससे चौथी, पांचवी चीज आपको चाहिए ही क्या? कुछ है ही नहीं इसके अलावा । जब आपके सामने सब कुछ देने वाला बैठा है, फिर आपको चिंता की आवश्यकता ही क्या है?

आप समझेंगे तो तीन लाइने ही बहुत हैं और नहीं समझेंगे तो मैं जिन्दगी भर आपके सामने चीखता चिल्लाता रहूं तब भी कुछ नहीं हो पाएगा और ठोकर लगेगी एक बार ही बहुत है जागने के लिए । नहीं ठोकर लगेगी तो दस

त ।

हजार साल भी समझाएं, कुछ नहीं होगा । राम, वशिष्ठ से लेकर आज तब समझाते आए हैं पर आदमी वो का वो रहा है । कुछ उनमें अच्छे बने, रामकृष्ण परमहंस बने, विवेकानंद बने, चैतन्य महाप्रभु बने, बुद्ध बने, यह नहीं कि नहीं बने पर क्षणिक बने, कुछ ही बने । और मैं पूरे एक समूह को बनाना चाहता हूं यही डिफरेंस है । उन्होंने केवल आठ दस शिष्यों को बनाया । मैं सैकड़ों शिष्यों को ऐसा बनाना चाहता हूं ।

मेरा और आपका संघर्ष इस बिंदु पर है कि आप जो हैं वैसा का वैसा बने रहना चाहते हैं और मैं आपको बिल्कुल वैसा बनाना चाहता हूं कि इस प्रकार का कोई बने ही नहीं, आप अद्वितीय बनें और मैं आपको ऐसा बनाकर छोड़ूँगा ही, यह मेरी धारणा है, यह मेरा दृढ़ निश्चय है और मुझे अपने आप पर कान्फिंडेंस है ।

...और आप अद्वितीय तब बनेंगे, जब आप पूर्णता के साथ वे साधनाएं करें जो मैं आपको दूं और उन क्षणों का पूर्ण लाभ उठाएं जो कि साधनाओं के लिए श्रेष्ठ हैं । होली के दिवस तांत्रोक्त दिवस कहलाते हैं, पूर्णता के दिवस कहलाते हैं, ये सम्पूर्णता के दिवस कहलाते हैं और प्रत्येक योगी, प्रत्येक यति, प्रत्येक सन्न्यासी, अगर हैं वो और प्रत्येक गुरु अगर वह सही है तो पूरी रात साधनाओं में व्यतीत करता है, सोता नहीं वो पूरी रात । दिन में तो क्रिया कलाप करता है, गुरु है तो शिष्यों से मिलेगा, काम करेगा । मगर पूरी रात साधना में व्यतीत करता है क्योंकि वह जानता है कि ये क्षण वापस पूरे साल भर बाद मिल पाएंगे । होली के दिनों का महत्व इसलिए है कि हम इन क्षणों का पूरा लाभ उठाएं साधनाओं के माध्यम से । मैं यह चाहता हूं कि एक एक क्षण साधनाओं में व्यतीत हो आपका, आप पूर्णता और अद्वितीयता प्राप्त कर सकें, गुरु के सान्निध्य में बैठ सकें, और पूरे शरीर के रोम-रोम को देवमय बना सकें और अपनी मनुष्यता को इतनी ऊंचाई तक पहुंचा सकें कि मैं आप पर गर्व कर सकूं ।

खाना आप भी खाते हैं, खाना मुझे भी खाना पड़ता है, पानी आप भी पीते हैं, पानी मुझे भी पीना पड़ता है, मगर आपको मैं साधना करने को कहता हूं और आप करते नहीं हैं। मैं अपने मन पर नियंत्रण करके करता हूं क्योंकि मुझे मालूम है कि इस क्षण की क्या उपलब्धि है यह होली का पर्व कितना मूल्यवान है और मैं जानता हूं कि साधनाओं के माध्यम से कैसे सब अनुकूल बन सकता है।

इसलिए होली कोई सामान्य दिन नहीं है, यह गप्पे मारकर बिताने का दिन नहीं है यह तो लपक करके, बढ़ करके उन सब साधनाओं को गुरु से ले लेने का दिन है जिन्हें सम्पन्न कर आप अद्वितीय बन सकते हैं श्रेष्ठता प्राप्त कर सकते हैं और मैं चाहता हूं कि आप वे साधनाएं मुझसे प्राप्त करें चाहे वे धन से संबंधित हों, चाहे स्वास्थ्य से संबंधित हों, चाहे मनोकामना पूर्ति से संबंधित हों और चाहे कोई भी हो। जो भी गुरु देना चाहें और जो भी आप लेना चाहें, होली महोत्सव के दिन अवश्य लें।

यों तो बार-बार और रोज आप खाएंगे तो रोज पेट खाली होगा। एक दिन खाने से तो पूरी जिंदगी व्यतीत नहीं हो पाएगी। रोज खाने की क्यों जरूरत है? और अगर रोज खाने की जरूरत है तो रोज साधना की भी जरूरत है। आपने साधना की, फिर दिन भर झूठ बोला, गलती की, अच्छा किया, बुरा किया तो उस साधना का 70% प्रभाव तो खत्म हो गया। फिर वापस आपको साधना करनी पड़ेगी। परंतु धीरे-धीरे कोई क्षण तो ऐसा आएगा जब आप उस ऊंचाई पर पहुंच जाएंगे जहां आप पहुंचना चाहते हैं क्योंकि आप मनुष्य हैं और साधना कर सकते हैं। यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। मनुष्य बनना सामान्य बात नहीं है, मनुष्य बनने के बाद गुरु मिलना भी सामान्य बात नहीं है, गुरु के मिलने के बाद भी ऐसा समय मिलना भी सामान्य बात नहीं है जब आप उच्च कोटि की साधनाएं कर सकें। तीनों का लाभ आप उठा पाएं तो होली के क्षण आपके लिए सार्थक हो सकेंगे और मेरे लिए बहुत प्रसन्नता और आह्लाद के क्षण हो सकेंगे कि मैं आपको कुछ दे पाया और आप कुछ प्राप्त कर पाए। यह प्रसन्नता है, यह आनंद है, यह आह्लाद है जिसे होली कहा गया है।

शालीनता के साथ जितनी मस्ती, हँसी, खुशी, विनोद, आनंद लेना चाहें आप, मैं आपके साथ हूं हर क्षण और आपके चेहरे पर खुशी लाने की ही कोशिश करूँगा और वह सब आपको देने की कोशिश करूँगा जो आपको आज तक प्राप्त नहीं हुई - वे साधनाएं, वे दीक्षाएं और वह जीवन की पूर्णता।

आवश्यकता है कि आप लें, मुझसे प्राप्त

अन्यथा रह जाएगा सब।

और साधना करें तो शास्त्रोचित ढंग से करें। फिर उसमें कहीं कोई अपूर्णता न रहे। पूरे विश्वास और दृढ़ता के साथ साधना करें। अर्जुन ने कहा - कृष्ण! मेरा धनुष क्यों नहीं उठ रहा है, तो कृष्ण ने कहा - तुम साधक हो ही नहीं, तुम गुलाम हो, तुम दास हो, तुम मोह ग्रस्त हो, तुम सोच रहे हो ये मेरे दादा हैं, काका हैं, यह मेरा मित्र है, यह कृष्ण मेरा सारथी है। तुम मोह्यस्त हो गए हो। साधक का कोई मां-बाप, भाई-बहन नहीं होता, केवल एक लक्ष्य होता अपने गंतव्य स्थल तक, तुम अपने लक्ष्य को भूल रहे हो इसलिए तुम गांडीव नहीं उठा पा रहे हो।

कृष्ण ने भी साधक शब्द प्रयोग किया। कृष्ण ने कहा - तुम अपने शरीर को साधने की क्रिया कर ही नहीं सकते, मैं भले ही सौ अवतार धारण कर लूं, एक कृष्ण रूप क्या, पांच कृष्ण रूप धारण कर लूं तो भी तुम साधक नहीं बन सकते। जब तक तुम शरीर को साधोगे नहीं, मेरे सामने साधक बन कर खड़े नहीं हो पाओगे, जब तुम तुम मेरे हृदय से अपना मन जोड़ोगे नहीं तब तक तुम साधक नहीं बन पाओगे और तब तक मैं कुछ तुम्हें दे भी नहीं पाऊंगा।

**मेरमन्तरा मन मारिके, नान्हा करि करि पीस
तब मुख्य आवै सुन्दरी, ब्रह्म इल्लके सीस कबीर**

मैं भी आपसे यही कह रहा हूं कि जब तक आप अपने मन से हुतात्मा नहीं बनेंगे, जब तक गुरु से जोड़ेंगे नहीं, तब तक आप जीवन में कुछ प्राप्त भी नहीं कर पाएंगे। मैं देना भी चाहूं तो भी आप ग्रहण कर नहीं पाएंगे। और हुतात्मा होने का गुरु से जुड़ने का अद्वितीय समय होली है, एक ऐसा समय है जब कि आप आने वाले पूरे वर्ष को अपने लिए अद्वितीय बना सकते हैं।

आपके पाप समाप्त हो सकें, आप साधनाएं सम्पन्न कर सकें, आपके पुण्य उदय हो सकें, आप सुखी हो सकें, आपके चेहरे पर मुस्कुराहट आए, आनंद आए, एक मस्ती आए, ऐसा ही मैं आशीर्वाद देता हूं ऐसी ही कल्याण कामना करता हूं और अपने हृदय में आपको बिठाता हुआ, आपके सिर पर वरद हस्त रखता हुआ एक बार पुनः आशीर्वाद देता हूं।

- सद्गुरुदेव परमहंसःस्वामी
निखिलेश्वरानंद जी



वार्षिक सदस्यता

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर
आप पार्वेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार



भाग्योदय लक्ष्मी यंत्र

जीवन में सौभाग्य जाग्रत करने का निश्चित
उपाय, घर एवं व्यापार-रथल पर वरसों वरस रथापित
करने योग्य, सभी प्रकार की उन्नति में सहायक ...

नवरात्रि के चैतन्य काल में मंत्रसिद्ध एवं
प्राणप्रतिष्ठत, प्रामाणिक एवं पूर्ण रूप से शारत्रोक्त
विधि विधान युक्त ...

जीवन में भाग्योदय के अवसर कम ही आते हैं, जब
कर्म का सहयोग गुरु की कृपा से होता है तो
अनायास भाग्य जाग्रत हो जाता है। जहां भाग्य है,
वहां लक्ष्मी है और वहीं आनन्द का वातावरण है।
आप इस यंत्र को अवश्य रथापित करें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. 4 स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।
वार्षिक सदस्यता शुल्क - 258/- + 45/- डाक खर्च = 303/-, Annual Subscription 258/- + 45/- postage = 303/-
Fill up and send post card no. 4 to us at :

-: सम्पर्क :-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342031, (राजस्थान)
Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342031, (Raj.), India
फोन (Phone) .0291-2432209, 2433623 टेलीफैक्स (Telefax) . 0291-2432010

मार्क००डेर द्वितीय



दुर्गा सप्तशती कथा संकलन ओ॒ द्विष्णुष्ट छंड़

जो अपना प्रभाव तत्काल देते हैं

जष ओई अथा ऐवल अथा रूप में पढ़ी जाती है तो आप उक्त अथा के मूल कहक्य औक्त ज्ञानगमित थातों ओ भूल जाते हैं। जषकि हमाके ऋषियों द्वाका वित दुर्गा सप्तशती ऐवल देव-दानव संग्राम एकी अथा नहीं है, यह तो आक्षुकी प्रथृतियों पर द्विव्य शक्ति एकी विजय गाथा है, यह द्विव्य शक्ति प्रत्येक मनुष्य के भीतक व्याप्त है औक्त जो ज्ञानगम इन द्विव्य शक्तियों ओ जाग्रत अक्त लेता है वही जीवन संग्राम में विजयी होता है, देवी एक उक्तंक्व्य नाम मनुष्य के भीतक व्याप्त, अनगिनत शक्तियों के ही कप है। इक्तके काथ है छुछ विशेष मंत्र जिन्हें ज्ञानपुट मंत्र अहा गया है। उक्तका नियमित जप 'शक्ति माला' के अवश्य अक्तें -

मूलतः यह माना जाता है कि मार्कण्डेय ऋषि द्वारा कही गई कथा और उनके द्वारा की गई दैवीय स्तुति का वर्णन ही दुर्गा सप्तशती है। मूलतः दुर्गा सप्तशती एक महान् रचना है जिसे मार्कण्डेय ऋषि ने लिपिबद्ध किया पूरे 13 अध्यायों में और 700 श्लोक होने के कारण यह आख्यान सप्तशती कहलाया।

इस महान् रचना में मार्कण्डेय ऋषि ने एक दुःखी राजा 'सुरथ' तथा समाधि नामक वैश्य अपने-अपने दुःखों की शांति के लिए महान् ऋषि मेधा ऋषि के आश्रम में जाकर उनसे ज्ञान प्राप्ति, मानसिक शांति और दुःखों के निवारण की इच्छा व्यक्त की। उस समय उन्होंने पहला प्रश्न यही पूछा कि है महाऋषि! ममता और मोह दोनों हमारे भीतर अवश्य हैं लेकिन ज्ञान होते हुए भी क्यों हमारा मन सांसारिक विषयों में लगा रहता है और कौन सी ऐसी महामाया है जो ज्ञानियों के चित्त को भी मोह ग्रस्त बना देती है।

ऋषि ने उन्हें भगवती महामाया के सम्बन्ध में बताया और इस प्रकार दुर्गा सप्तशती भगवती दुर्गा के तीन रूपों, तीन कहा कि यह आद्या शक्ति भगवती नित्य है और उन्होंने सारे विश्व को व्याप कर रखा है। जब-जब संसार में संकट आता है और देवों के कार्य के लिए अभिभूत होती हैं तब उन्हें 'उत्पन्ना' कहा जाता है। ऋषि ने पराम्बा शक्ति के तीन चरित्र बताये और उनका विस्तार से वर्णन किया।

इस प्रकार दुर्गा सप्तशती भगवती दुर्गा के तीन रूपों, तीन चरित्रों का विस्तृत वर्णन है जिन्हें प्रथम चरित्र, मध्यम चरित्र और उत्तम चरित्र कहा जाता है। इसी के आधार पर इस पूरी कथा का विवरण है।

प्रथम चरित्र - जब प्रलय के पश्चात शेषशश्या पर योगनिद्रा में निमग्न विष्णु के कर्ण मल से मधु और कैटभ नामक के दो असुर उत्पन्न हुए और वे श्री हरि के नाभि कमल पर स्थित ब्रह्मा को ग्रसने के लिए उद्यत हो गये, तब ब्रह्मा ने भगवती

योगनिद्रा की स्तुति करते हुए उनसे तीन प्रार्थना की 1. भगवान विष्णु को जगा दीजिये, 2. उन्हें दोनों असुरों के संहारार्थ उद्यत कीजिये और 3. असुरों को विमोहित कर श्री भगवान द्वारा उनका वध करवाइये। तब भगवती ने ब्रह्मा को दर्शन दिया। भगवान योगनिद्रा से उठकर असुरों से युद्ध करने लगे। दोनों असुरों ने योगनिद्रा द्वारा मोहित कर दिये जाने पर भगवान से वर मांगने को कहा। अन्त में उसी वरदान के अनुसार वे भगवान विष्णु द्वारा मारे गये।

महापराक्रमी असुर हुए। उन्होंने इन्द्र का राज्य और यज्ञों का भाग तक छीन लिया। वे दोनों सूर्य, चन्द्र, कुबेर, यम, वरुण, पवन और अग्नि के अधिकारों के अधिपति बन बैठे। तब देव शोकग्रस्त हो मृत्युलोक में आये और हिमालय पर पहुंचकर करुणार्द्ध, हृदय से प्रार्थना करने लगे। भगवती पार्वती प्रकट हुई। उन्होंने देवों से पूछा - आप लोग किसकी स्तुति कर रहे हैं? इसी समय देवी के शरीर से शिवा निकली और कहने लगी, शुभ्म निशुभ्म से पराजित होकर स्वर्ग से निकाले गये

मध्यम चरित्र - प्राचीनकाल में महिष नामक एक महाबली असुर ने जन्म लिया, वह अपनी अदम्य शक्ति से इन्द्र, सूर्य, चन्द्र, यम, वरुण, अग्नि, वायु तथा अन्य सभी देवों को पराजित कर स्वयं इन्द्र बन बैठा और सभी देवों को स्वर्ग से निकाल दिया। स्वर्ग सुख से वंचित देव मृत्युलोक में भटकने लगे। अन्त में उन लोगों ने ब्रह्मा के साथ भगवान विष्णु और शिव के निकट पहुंचकर अपनी कष्ट कथा कह सुनायी। देवों की करुण कहानी सुनकर 'हरि हर' के मुख से एक महान तेज निकला। तत्पश्चात् ब्रह्मा, इन्द्र, सूर्य, चन्द्र, यमादि देवों के शरीर से भी तेज निकले। वह तेज एकत्र होकर एक दिव्य देवी के रूप में परिणित हो गया।

ये इन्द्रादि देव मेरी स्तुति कर रहे हैं। पार्वती के शरीर से निकलने के कारण अम्बिका कौशिकी कहलायीं। उनके निकल जाने से पार्वती कृष्णवर्णा हो गयी तथा काली नाम धारण कर हिमालय पर रहने लगीं।

विधि, हरि और हरि त्रिदेवों अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु और महेश
ने तथा अन्य प्रमुख देवों ने उस तेजोमूर्ति को अपने-अपने
अस्त्र-शस्त्र प्रदान किये। तब देवी अट्टहास को सुनकर
असुरराज सम्पूर्ण असुरों को साथ लेकर उस शब्द की ओर
दौड़ पड़ा। वहां पहुंचकर उसने उग्र स्वरूपा देवी को देखा।
फिर तो वे सभी असुर देवी से युद्ध करने लगे। भगवती और
उनके वाहन सिंह ने कई कोटि असुरों का विनाश कर दिया।
भगवती के हाथों असुर के पंद्रह सेनानी - चिक्षुर, चामर,
उद्ग्र, कराल, वाष्कल, ताम्र, अन्धक, असिलोमा, उग्रास्य,
उग्रवीर्य, महाहनु, विडालास्य, महासुर, दुर्धर और दुर्मुख आदि
मारे गये। तब महिषासुर महिष, हस्ती, मनुष्यादि रूप धारण
कर भगवती से युद्ध करने लगा और अन्त में मारा गया।

इधर परम सुन्दरी अम्बिका को शुभ-निशुभ के भूत्य चण्ड मुण्ड ने देखा तो दोनों ने जाकर शुभ से उनके अतुल सौन्दर्य की प्रशंसा की। भूत्यों की बात सुनकर शुभ ने सुग्रीव नामक असुर को अम्बिका को ले जाने के लिये भेजा। सुग्रीव ने भगवती के पास पहुंचकर शुभ-निशुभ के ऐश्वर्य और शौर्य की प्रशंसा करते हुए उनसे पाणिग्रहण (विवाह) की बात कही। देवी ने उन्नर दिया - जो मझे संग्राम में पराभत

करके मेरे बलदर्प को नष्ट करेगा, उसी को मैं पतिरूप में स्वीकार करूँगी, यही मेरी अटल प्रतिज्ञा है। सुग्रीव ने शुभ्म-निशुभ्म के निकट पहुँचकर भगवती अम्बिका की प्रतिज्ञा विस्तार पूर्वक कह सुनायी। असुरेन्द्रों ने कुपित होकर देवी को बाल पकड़कर खींच लाने के लिए धूमप्रलोचन असुर को भेजा, किन्तु देवी ने तो हंकार मात्र से ही उसे भस्म कर दिया।

अपने समग्र शत्रुओं के मारे जाने पर आळादित हो देवों ने आद्या शक्ति की स्तुति की और वर मांगा कि हम लोग जब-जब दानवों द्वारा विपदाग्रस्त हों, तब-तब आप हमें आपदाओं से विमुक्त करें तथा इस चरित्र को पढ़ने सुनने वाला प्राणी सम्पूर्ण सुख ऐश्वर्य से सम्पन्न हो जाय। तथास्तु कहकर देवी ने देवों को इच्छित वरदान दिया और स्वयं तत्काल अन्तर्धान हो गयी।

पश्चात् असुरराज ने भारी सेना के साथ चण्ड-मुण्ड नामक असुरों को भगवती कौशिकी को पकड़ लाने के लिये भेजा। वे वहां पहुंचकर भगवती को पकड़ने का प्रयत्न करने लगे। तब उनके ललाट से भयानक काली देवी प्रकट हुई, उन्होंने सारी असुर सेना का विनाश कर दिया और चण्ड मुण्ड का सिर काटकर वे अम्बिका के पास ले आयीं। इसी कारण उनका नाम चामुण्डा पड़ा। चण्ड-मुण्ड वध सुनकर असुरेश ने सात सेनानायकों को भगवती से युद्ध करने के लिए भेजा। उस समय ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, वराह, नृसिंह, कात्तिकीय - इन सात प्रमुख देवों की शक्तियां असुर सेना के साथ युद्ध करने के लिये आ पहुंचीं। फिर अम्बिका के शरीर से भयंकर शक्ति निकली, जो लोक में शिवदूती नाम से विख्यात हुई।

उसने दूत को शुभ-निशुभ के पास भेजकर कहलवाया कि

और यज्ञाधिकार उन्हें लौटाकर पाताल में चले जाओ।

बलोन्मत्त शुम्भ निशुम्भ देवी की बात की अवहेलना करके युद्ध स्थल में सेनासहित आ डटे। भगवती ने देवीय शक्तियों की सहायता से असुर सेन्य का संहार प्रारम्भ कर दिया, तब असुर सेनाध्यक्ष रक्त बीज भगवती और देव शक्तियों से युद्ध करने लगा। उसके शरीर से जितने रक्त बिन्दु भूमि पर गिरते थे उतने ही रक्त बीज उत्पन्न हो जाते थे। अन्त में देवी ने चामुण्डा को आज्ञा दी कि वह अपने मुख में ले ले और इस तरह उन नये असुरों को भक्षण कर डाले। चामुण्डा ने ऐसा ही किया और भगवती ने उस असुर का सिर काट डाला। तत्पश्चात् निशुम्भ भगवती से युद्ध करने लगा और मारा गया।

अब शुम्भ ने क्रोधित होकर अम्बिका से कहा - तू दूसरे का बल लेकर अभिमान कर रही है। भगवती ने उत्तर दिया -

एकै वाह जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा ।
पश्यता दुष्ट मर्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः ॥
ततः समस्तास्या देव्यो ब्रह्मणीप्रमुखा तथम् ।
तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका ॥

भगवती दुर्गा ने कहा कि मैं एक मात्र प्रकृति का कारण, वरण और प्रलय का स्वरूप हूं, सब शक्तियां मेरे द्वारा ही उद्भूत हुई हैं और सारी शक्तियां मेरे अन्दर ही समाहित हो जाती हैं। एक रूप होते हुए भी मैं संसार में अनेकों रूप में हूं।

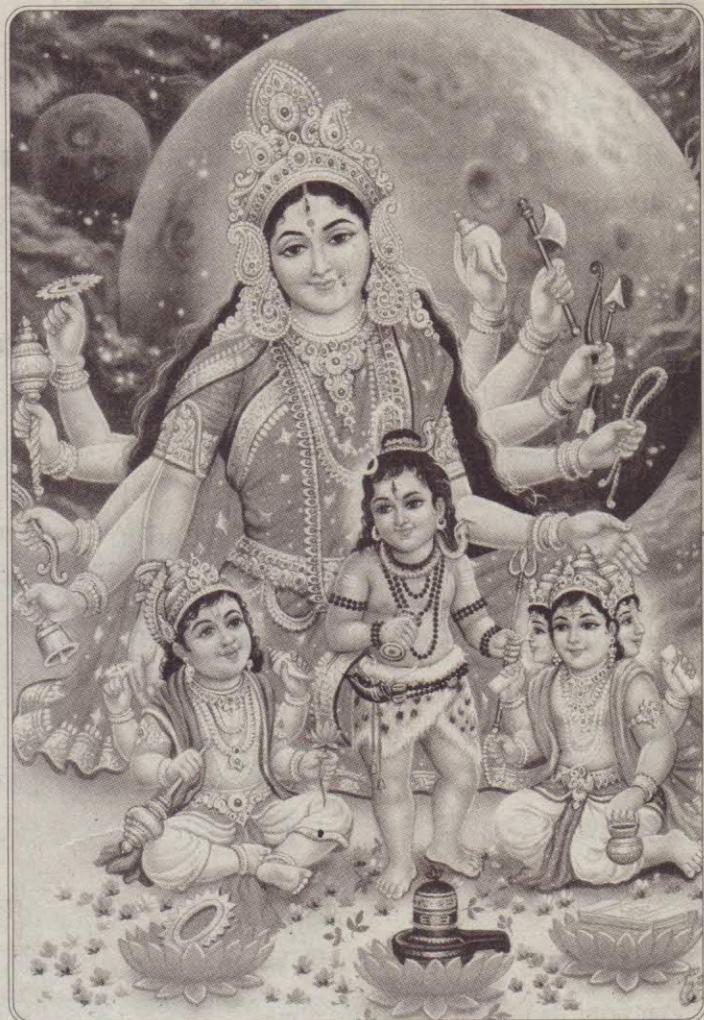
इसके बाद ब्रह्मणी, ऐश्वर्य, शक्ति इत्यादि सभी देवियां अम्बिका के शरीर में विलीन हो गईं और भगवती अम्बिका ने शुम्भ का नाश कर दिया।

देवताओं ने भगवती अम्बिका की स्तुति की क्योंकि देवी के प्रताप से ही संसार के सारे राक्षसों का अन्त हो गया था, तब देवी ने कहा कि 'संसार का उपकार करने वाला वर मांगें।' देवताओं ने कहा, 'जब-जब हमारे शत्रु उत्पन्न हों तो आप उनका नाश कर हमें आश्वस्त करें।'

भगवती दुर्गा ने वचन दिया कि जब-जब देव अथवा मानव संकट के समय मुझे याद करेगा, तब-तब मैं अपने भक्तों की रक्षा के लिए अवश्य ही आऊंगी।

उपस्थिति

इसके पश्चात् त्रयोदश अध्याय में भगवती दुर्गा की उत्पत्ति और उसके प्रभाव के तीन चरित्र सुनाकर मेधा कृष्ण ने राजा



सुरथ और समाधि वैश्य को देवी भगवती की साधना उपासना का आदेश दिया। राजा सुरथ सूर्य से उत्पन्न होकर सार्वि बने और वैश्य को ज्ञान प्राप्त हुआ।

इस प्रकार दुर्गासिसशती एक महान् ग्रंथ है, जिसमें इन त्रयोदश अध्यायों का पाठ करने से पहले देवी कवच, अर्गला स्तोत्र और देवी कीलकं अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए। इन तीनों के पश्चात् विनियोग न्यास और ध्यान सम्पन्न कर सप्तशती पाठ करना चाहिए।

देवी साधना से सम्बन्धित इसी सप्तशती के कुछ विशेष मंत्र दिए जा रहे हैं। जिनके जप मात्र से सम्बन्धित कार्य सम्पन्न हो जाता है।

ये मंत्र निम्न प्रकार से हैं -

1. विपत्ति नाश के लिए

मंत्र

शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

भारतीय संस्कृति की यह विशेषता रही है, कि हमारे ऋषि परम्परा ने विभिन्न देवी-देवताओं की आराधना और अर्चना के माध्यम से अपनी भौतिक या आध्यात्मिक मनोवांछित कार्य सिद्धि के लिए कई सोपान निर्मित किये हैं। भगवती दुर्गा की आराधना-साधना जिन उद्देश्यों के लिए इन निश्चित दिनों में करते हैं, वे हमारे लिए अभीष्टप्रद होती ही हैं। शक्ति की साधना हमारे लिए उतनी ही उपादेय है, जितनी कि जीवन के लिए श्वास लेना। बिना उतनी आराधना के जीवन की पूर्णता संभव नहीं है। जो भी महापुरुष हमारे परम्पराओं में प्रसिद्ध हुए हैं या अपनी लोक कल्याणकारी भावता से ओत-प्रोत होकर समाज को या विश्व को कुछ दे पाये हैं, उसमें शक्ति आराधना का समुट संबलित रहा है, क्योंकि शक्ति के बिना शिव भी अपूर्ण ही कहे जाते हैं।

2. भय नाश के लिए

मंत्र

सर्वस्वरूपे सर्वेषे सर्वशक्तिसमन्विते ।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्जे देवि नमोऽस्तु ते ॥

3. रोग नाश के लिए

मंत्र

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान
सकलानभीष्टान ।
त्वामाश्रितानां च विष्णवाराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां
प्रयान्ति ॥

4. आरोग्य और सौभाग्य की प्राप्ति के लिए

मंत्र

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम् ।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विष्ठो जहि ॥

5. बाधा शान्ति के लिए

मंत्र

सर्वाश्राद्यप्रशमनं त्रैलोक्यस्याख्यलेश्वरि ।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम् ॥

6. दारिद्र्यदुःखादिनाश के लिए

मंत्र

दुर्जे स्मृता हरसि भीति मशेषजन्तोः ।

स्वस्थैः स्मृता मत्तिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्यदुःखमयहारिणि का त्वदन्या ।
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्धचित्ता ॥

7. शक्ति प्राप्ति के लिए

मंत्र

सृष्टिस्थिति विनाशनां शक्ति भूते सन्नातनि ।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

8. प्रसन्नता प्राप्ति के लिए

मंत्र

प्रणातानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि ।
त्रैलोक्यवांसिनामीड लोकानां वरदा भव ॥

9. बाधा मुक्त होकर धन पुत्रादि की प्राप्ति के लिए

मंत्र

सर्वबाधाविनिर्मुक्तो धन धन्यसुतान्वितः ।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥

10. स्वप्न सिद्धि अद्विद्वि जानने के लिए

मंत्र

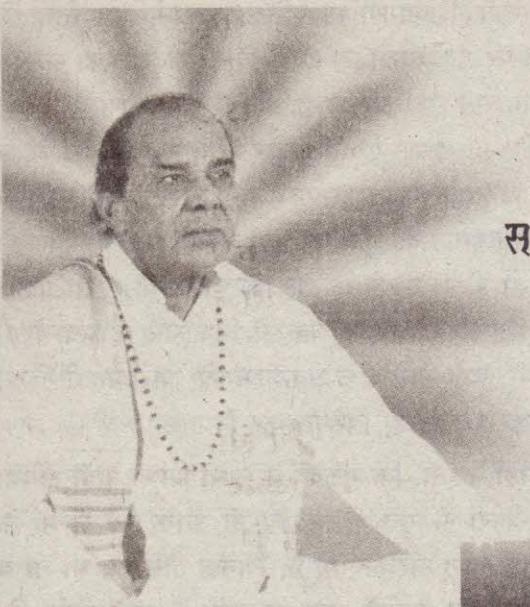
दुर्जे देवि नमस्तुभ्यं सर्वकामार्थसाधिके ।
मम सिद्धिमसिद्धिं वा स्वप्ने सर्वं प्रदर्शय ॥

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में शक्ति आवश्यक है और शक्ति प्राप्त करने के लिए तथा प्राप्त शक्ति के चिरस्थायित्व के लिए शक्ति साधनाएं अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए। जिस व्यक्ति के जीवन में कर्म और ज्ञान रूप में शक्ति होती है उसे जीवन की सभी भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियां अवश्य ही प्राप्त होती हैं। संकल्प लेकर आप कार्य प्रारम्भ करें, भगवती जगदम्बा तो मातृ स्वरूपा हैं इसीलिए शास्त्रों में बार-बार लिखा आता है -

न मंत्रं न यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाहानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथा ।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातृस्त्वदनुसरणं क्लेशशहरणम् ॥

हे मां! मुझे न मंत्रों का ज्ञान है न तंत्र का ज्ञान है, सांसारिक मोह माया में मैं भली प्रकार से आपका ध्यान और स्तुति भी नहीं कर सकता हूं। स्तोत्र कथा की भी जानकारी नहीं है, न तो मुद्राएं जानता हूं, न मैं व्याकुल होकर विलाप करना जानता हूं। ...लेकिन एक बात जानता हूं, केवल आपका अनुसरण करना अर्थात् पीछे चलना जो कि समस्त दुःखों को हरण करने वाला है।

॥जय जगदम्बे ॥



सद्गुरु रहस्य नहीं रस की खान है
 सद्गुरु तो शिष्य के जीवन सूर्य है
 सद्गुरु प्रकाश तप से ही आलोकित है शिष्य जीवन
 समझ बन्धु समय की धार पर

शद्गुरुकृदेव निश्चिल

ज्ञान कोई वस्तु नहीं है, जो व्यक्ति अपनी बुद्धि से प्राप्त कर ले, इसका आधार तो व्यक्ति की श्रद्धा होती है। वास्तव में श्रद्धा हमारे अन्दर वह पात्रता निर्मित करती है, जिससे गुरु प्रदत्त ज्ञान को हम धारण कर सकें।

गुरु का अर्थ है - ज्ञान, तृप्ति, आनन्द, मस्ती और पूर्णता, जिसकी खोज सदैव इस जीवात्मा को रही है... और रहेगी। उपनिषद् काल में ऋषियों, महर्षियों और ज्ञानियों की श्रेणी उजागर हुई, अवश्य ही उन्होंने गुरु साधना में पूर्णता प्राप्त की होगी, तभी तो यह ज्ञान पूर्णत्व प्रदाता है।

सूर्य नित्य ही इस धरा की यात्रा में गतिशील बना रहता है। वे इस धरा पर

रहस्य मानो उसके अन्दर निरन्तर रहने वाले किसी आलोड़न-सूर्य किसी अर्ध्य प्राप्ति की आशा में इस धरा पर नहीं आता विलोड़न में छिपा होता है और स्वयं में प्रतिपल विखंडित वरन् व्यक्ति उन्हें अर्ध्य देकर स्वयं अपने ही जीवन को उदात्त होता हुआ, उस विखंडन के उद्देशों को सहन करता हुआ तप व पवित्र बनाने की ही चेष्टा करता है।

से भरा होने के उपरान्त भी वह निरन्तर प्रकाश को देने की क्रिया में संलग्न रहता है।

यही कार्य सद्गुरु का भी होता है। उनका आगमन और प्रस्थान सदैव इसी भाँति होता रहा है। वे इस धरा पर 'उदित' होते हैं और फिर प्रकाश करने के लिए बढ़ जाते हैं उस ओर, जो अंधकार में डूबा हो, क्योंकि विराट होता है उनका पथ और विराट होते हैं उनके लक्ष्य! सूर्य तो वस्तुतः कभी अस्त होता ही नहीं और इसी प्रकार से गुरु भी कभी विरत नहीं होते, केवल उनके क्रिया-कलापों के क्षेत्र इस ग्रह से अन्य ग्रहों पर विस्तारित भर होते रहते हैं।

सद्गुरु के अन्तर्मन में भी इसी प्रकार प्रतिक्षण अनेकों-अनेक ज्वालामुखी फटते रहते हैं, उन्हें संताप व वेदना देते ही रहते हैं... और ये ज्वालामुखी होते हैं - शिष्य की न्यूनताओं के, उसकी अहंमन्यता के, उसकी कृतन्यता के, उसके व्यभिचार के, उसकी धृता के, उसके छल-कपट, द्वेष और मक्कारी के।

यह किसी पर व्यक्तिगत आक्षेप नहीं है किन्तु व्यवहार में यही देखने में आता है, कि गुरुदेव ने जिसे भी कोई साधना

यदि हम सूर्य का 'वैज्ञानिक विश्लेषण' करें, तो ज्ञात होता है, कि उस ग्रह मात्र में निरन्तर विस्फोट होते रहते हैं, जिससे अपरिमित ऊर्जा व ताप उत्पन्न होता रहता है। इसी वैज्ञानिक तथ्य को यदि भावमय ढंग से कहें, तो सूर्य की ऊर्जा का स्थापित करने की चेष्टा में संलग्न हो गया। इसके उपरान्त

अथवा सिद्धि दे दी वही एक अधिनायक बनने की प्रक्रिया में आ गया, शक्ति अथवा चैतन्यता मिलते ही उसके अन्दर अहंकार का ज्वार उमड़ पड़ा, वह स्वयं को गुरु से भी ऊपर

भी गुरु के प्रयास उसी प्रकार मंद नहीं पड़ते हैं, जिस प्रकार से सूर्य का प्रकाश मंद नहीं पड़ता है। वे तो अपना प्रकाश बिखेरने की क्रिया में संलग्न रहते ही हैं।

अपने भावमय व क्रियाशील स्वरूप में सूर्य सदृश्य होने के उपरान्त भी सद्गुरु इस ब्रह्माण्ड के कोई निर्जीव ग्रह नहीं होते हैं अपितु अपने हृदय, अपनी चेतना और अपनी करुणा के विस्तार के कारण ब्रह्माण्ड के सर्वाधिक चैतन्य व्यक्तित्व ही होते हैं। यदि उनमें करुणा और जीवों के प्रति एक प्रकार का आग्रह न होता तो वे अपनी परम शांत स्थिति, अपनी समाधि को त्यागना ही क्यों चाहते? जिस समाधि के सुख को प्राप्त कर कोई भी साधक इस जगत के क्षुद्र द्वन्द्वों में लौटना चाहता ही नहीं, गुरुदेव उसी सर्वोच्च सुख को त्यागने की क्रिया कर स्वयं को बलात् अपने शिष्यों के जीवन के छोटे-छोटे द्वन्द्वों में उलझा देते हैं।

जीवन तो स्वयं में एक श्रृंखला होती है और उस श्रृंखला का तो केवल ज्ञान चक्षुओं से ही साक्षात् किया जा सकता है। सद्गुरु अपने आगमन के पश्चात् उन कारणों की श्रृंखला जानने के उपरान्त भी, अपने शिष्य को, उससे मुक्त कराने की चेष्टा करते हैं जिनके कारण वह विविध कष्टों एवं बन्धनों में फँसा छटपटा रहा होता है। ऐसा करना उनकी कोई विवशता नहीं होती है अपितु विशुद्ध रूप से करुणा ही होती है। इसी कारणवश सद्गुरु को सर्वोच्च रूप से प्रणम्य माना गया है। जीव तो अपने कर्मों के फलानुसार निरन्तर जन्म-मरण के चक्र में, एक प्रकार से कहें तो वह बस बह ही रहा होता है, उसमें गुरु को हस्तक्षेप करने की आवश्यकता ही क्या और क्यों? किन्तु करुणा का कोई प्रवाह होता है, चिन्तन की कोई

...और इसके प्रत्युत्तर में कोई शिष्य उन्हें क्या देता है? केवल दुःख और तनाव अथवा अपने 'अहं रूपी नाखूनों के तीखे घाव!' कभी मैंने एक कथा पढ़ी थी, कि एक साधु पानी में बहते किसी बिच्छू को बार-बार बचाने की कोशिश कर रहा था और वह बिच्छू बार-बार उस साधु को ही डंक मारता जा रहा था। किनारे पर खड़े एक ग्रामीण से जब नहीं रहा गया, तो उसने उस साधु से जानना चाहा, कि वह फिर भी उस बिच्छू को क्यों बचाना चाह रहा है? साधु का सहज स्मित के साथ उत्तर था - 'अपनी-अपनी प्रकृति है।'

साधु-पुरुष पूज्यपाद गुरुदेव 'निखिल' आज भी इस समाज में इसी ढंग से निरन्तर गतिशील बने हुए हैं। केवल यह

समाज ही नहीं, शिष्यगण भी प्रतिक्षण अपनी कुप्रवृत्तियों से उनके चित्त पर डंक मारते जा रहे हैं किन्तु सद्गुरु का समस्त आग्रह इसी बात पर केन्द्रित है, कि किस प्रकार से उनको (शिष्यों को) जन्म-मरण की अविरल बहती धारा से बाहर निकालने के उनके प्रयास सफल हों। जिस प्रकार से उस साधु ने अपने स्नान की बात को भूल कर बिच्छू को निकालने के प्रयासों में ही स्वयं को केन्द्रित कर दिया था, उसी प्रकार से अनेक शिष्यों को जीवन चक्र से निकालने के प्रयासों में गुरुदेव ने भी अपने आनन्द के अवगाहन को, जिसे महायोगीजन नित्यप्रति करते रहते हैं, विस्मृत कर दिया है।

मैं यह नहीं कहता, कि गुरुदेव के सभी शिष्य पापी अथवा अशुभ संस्कारों से युक्त हैं अवश्य ही उनके पूर्व जन्मों के कोई न कोई श्रेष्ठ संस्कार ही हैं, जिनके होते हुए भी तो वे इस जन्म में गुरु-चरणों तक आ सके हैं और जैसा कि अनेक स्वयं ही बताते रहते हैं, कि वे पूर्व जन्म के योगी हैं, योगीराज हैं, किन्तु जो कुछ वे कर रहे हैं वे किसी योगी के लक्षण तो नहीं प्रतीत होते। मैं नहीं जानता, कि बुद्धि का कैसा मोटा पर्दा उनकी चेतना के सामने इस प्रकार से पड़ गया है, कि वे किसी प्रकाश का अनुभव नहीं कर पा रहे अथवा उनके रक्त का दोष है या उस अन्न का दोष जिससे उनका पोषण हुआ? किन्तु अवश्य ही कुछ ऐसा जो अत्यन्त ही खेदजनक है... और उससे भी अधिक खेदजनक तो यह है, कि वे इससे मुक्त होने की क्रिया भी नहीं करना चाहते अपितु एक विचित्र से व्यामोह में स्वयं को आबद्ध करके पता नहीं किस दिशा में चलने का उपक्रम कर रहे हैं। सम्भवतः उन्हें यह तथ्य ही विस्मृत हो गया है, कि पद, धन, यश, विलासिता आदि अन्ततोगत्वा जंजीर ही तो हैं और अन्तर इस बात से नहीं पड़ता, कि जंजीर सोने की है अथवा लोहे की।

विगत में किसी ऋषि ने अत्यन्त खिल होकर कहा था, कि 'काल के चक्र में पड़ कर तो रघुवंशमणि श्रीराम का आगमन भी संदिग्ध मान लिया गया, फिर किस यश की कामना? साम्राज्य को धिक्कार है ऐश्वर्य को धिक्कार है।' इन स्पष्ट वचनों के बाद भी यश, पद व प्रतिष्ठा को लेकर मोहान्धता की दशा का अर्थ समझ में नहीं आ पाता। वे तो कोई और ही स्थितियां होती हैं जब पद, प्रतिष्ठा और सम्मान को ढूँढ़ने नहीं जाना पड़ता वरन् वे ही चारों ओर नृत्य करके कहती हैं, कि मेरा वरण कर लो। वही पौरुष का लक्षण, पौरुष का गुण होता है, वही जीवन का आनन्द भी होता है।

भगवान् बुद्ध के शिष्य आनन्द का नाम यदि आज तक

अमर है तो केवल इसी कारणवश है, क्योंकि वे भगवान बुद्ध की चेतना से जुड़े थे, स्वामी विवेकानन्द का नाम इसलिए अमर है क्योंकि वे श्री रामकृष्ण परमहंस के 'मुख' बने थे,

मण्डन मिश्र का नाम अमर है, तो केवल इस कारणवश, क्योंकि उन्होंने (अन्यथा उच्चकोटि का विद्वान होने के उपरान्त भी) अपनी समस्त विद्वता को भगवत्पाद आद्यशंकराचार्य के चरणों में निवेदित कर विधिवत् शिष्यत्व ग्रहण कर अपने ज्ञान के लघुत्व को स्वीकार किया था, उनके चरणों में प्रणम्य हुए थे। इन सभी ने अपनी चेतना को शून्य मान लिया था और गुरु की चेतना को ही अपना अंग बनाने की क्रिया की थी। इसी कारणवश आज तक समाज इन सभी का नाम अत्यन्त श्रद्धा व सम्मान से लेता है। इन सभी के नाम यदि आज तक अमर हैं, तो केवल गुरु की चेतना से जुड़ने के कारण ही अमर हैं।

...यूं नाम तो अमर है पादपद्म का भी और किसी के अमर होने के लिए वह मार्ग भी खुला हुआ है, किन्तु उसका नाम आज तक एक गाली है। किसी भी शिष्य के लिए इससे बड़ा कोई अपमान हो ही नहीं सकता, कि उसे पादपद्म की संज्ञा दी जाए, क्योंकि पक्षद्रोही को कम से कम भारतीय समाज तो क्षमा नहीं करता है। जो क्षमा करने का साहस रखते हैं, जरा उनसे यह पूछ कर देखिए, क्या वे अपनी संतान का नाम 'विभीषण' रखना चाहेंगे? आखिर विभीषण भी एक श्रेष्ठ हरिभक्त हुआ है और उसकी प्रशंसा में बहुत कुछ कहा गया है।

दूसरी ओर एक व्यक्तित्व कर्ण का भी रहा है जिसने जीवन में जो आदर्श बना लिया फिर उससे विमुख हुआ ही नहीं, साक्षात् भगवान कृष्ण के सम्मुख उपस्थित होने के उपरान्त भी उसमें कोई विचलन न हो सका। इसी से न केवल इतिहास में, वरन् समाज की स्मृतियों में आज तक कर्ण जीवित है। समाज उसका नाम प्रेम और सम्मान से लेता है, अपनी संतान का नाम 'कर्ण' रखता है।

स्मरण रखिए, कि चन्द्रमा व छोटे-छोटे तारों में स्वयं का कोई प्रकाश नहीं होता है। यह सूर्य का ही प्रकाश होता है, जो उन पर प्रतिबिम्बित होकर उन्हें भी प्रकाशवान बना जाता है। एक बोध कथा है, कि जब दिवस के अवसान पर सूर्य की विदा का क्षण आया, तो उसके मुख पर क्लान्ति की रेखाएं परिलक्षित होने लग गयीं, जिन्हें देख नन्हे दीपकों ने कारण जानना चाहा। सूर्य को खेद था कि उसके प्रस्थान के बाद इस धरा पर प्रकाश की किरणों का कौन विस्तार करेगा? प्रत्युत्तर में उन नन्हे दीपकों ने उसे विश्वास दिलाया कि वे अपनी

क्षमतानुसार प्रकाश बिखेरने की क्रिया में तब तक संलग्न रहेंगे जब तक सूर्य का पुनः इस धरा पर आगमन का क्षण नहीं आ जाता।

आज पूज्यपाद गुरुदेव भी यही क्रिया सम्पन्न करना चाहते हैं, जिससे जब 'सूर्य' उस ओर प्रस्थान कर जाए जिस ओर प्रकाश नहीं है, तो तब तक उनके शिष्य ही इस धरा पर प्रकाश का विस्तार करने का कार्य करते रहें। कोई दीपक बन कर अंधकार से लड़ने का कार्य करे, तो कोई तारों की स्निग्धता इस समाज में बिखेर सके। कोई चंद्रमावत् बन कर आलाद का एक हेतु बने, तो कोई ध्रुव तारे की भाँति दिशा-सूचक का कार्य करता रहे। यही 'सूर्य' के धधकने एवं विस्फोटों में प्रतिक्षण स्वयं को आप्लावित रखने के प्रति वास्तविक श्रद्धा-अभिव्यक्ति हो सकती है, ऐसा करना ही सूर्य को दिया गया वास्तविक अर्ध्य हो सकता है।

...प्रार्थना, उदित होते हुए सूर्य की ही की जाती है, उसे प्रातः काल की बेला में ही अर्ध्य दिया जाता है, दोपहर में बारह बजे अथवा सायंकाल की बेला में अर्ध्य नहीं दिया जाता है। आज के क्षण, ऐसे ही क्षण है। आज गुरुदेव के प्रति आपकी दी जाने वाली भावनाओं का अर्ध्य अर्थवत्ता से युक्त होगा। कल को तो सैकड़ों-हजारों आकर जुड़ेंगे यदि उस समय आ भी गए, तो उसमें विशेषता भी कैसी? दूसरी ओर यह भी तो सम्भव है, कि कल तक बहुत देर हो जाएगी, क्योंकि ऐसे व्यक्तित्वों की चेतना कुछ निश्चित नहीं, कि कब उस भावभूमि का स्पर्श कर ले, जिसे सिद्धाश्रम कहा गया है।

कभी स्वामी विवेकानन्द ने इस विषय में जो कुछ कहा था, वह आज भी पूर्णतया प्रासंगिक है, कि 'एक विशाल चक्र को प्रारम्भ में धुमाने के लिए अत्यन्त बल की आवश्यकता होती है और यह कार्य केवल 'पुरुष' ही कर सकते हैं, बाद में तो जब यह धूमने लग जाएगा तब तो कोई बच्चा भी इसे अपनी उंगलियों के स्पर्श मात्र से धुमाता रह सकेगा।' यह तो एक चक्र-प्रवर्तन की ही बात है, जैसा चक्र-प्रवर्तन भगवान बुद्ध ने करना चाहा था। गुरुदेव द्वारा बार-बार आह्वाहित के पीछे भी उनका मात्र यही मंतव्य है अन्यथा वे किसी भी शिष्य के आगमन के पूर्व से ही एक विश्वविरच्यात् व्यक्तित्व रहे हैं अतः आपसे उन्हें कोई भौतिक कामना नहीं है, न उपदेश देने का मानस है, न प्रचार प्राप्त करने की अपेक्षा और न ही यह आह्वान आपको किसी कर्तव्य-पथ की ओर चलने की विवशता से बांधना चाहता है ...यह तो बस प्रेम के पथ पर चलने का एक सहज सा आमंत्रण भर ही है।

सद्गुरु अवतरण



क्या यह सत्य है कि सद्गुरु का अवतरण और निर्वाण होता है? यदि मन पर हाथ रख कर यह प्रश्न पूछेंगे तो क्या जवाब मिलेगा?

क्या राम, कृष्ण, शिव, वरुण, इन्द्र, अग्नि, वायु का कभी अवतरण अथवा निर्वाण हुआ है?

क्या सूर्य का कभी अवतरण अथवा निर्वाण होता है? कभी नहीं।

यह हमारी कल्पना और भ्रम ही है कि सूर्य उदय हुआ और सूर्य अस्त हुआ जबकि वास्तव में तो सूर्य अपनी जगह स्थिर होकर अपनी प्रकाश-रश्मियां निरन्तर दे रहा है। हम पृथ्वी वासी अपना गणित लगाते हैं, हर व्यक्ति पृथ्वी की भाँति अपने जीवन चक्र के गोल घेरे में धूमती हुई, कभी वर्षा, कभी सर्दी, कभी गर्मी का अनुभव करती है। मनुष्य जीवन में भी कभी दुःख, शंका, कभी बाधाएं, कभी खुशियां, कभी आळाद क्रतुओं की भाँति आते और जाते रहते हैं।

लेकिन एक बात हम विशेष ध्यान रखते हैं कि अंधकार में भी हमें प्रतीक्षा रहती है कि सूर्य अवश्य उगेगा और इस धरती को और हमें प्रकाश और ऊष्मा देगा। इसलिए हम जीवन में भी बाधाओं, परेशानियों को अंधकार समझते हैं और यह आशा रखते हैं कि ये बाधाएं अंधकार की भाँति अवश्य समाप्त होंगी और हमारे जीवन में भी सूर्य अवश्य आयेगा। यह सूर्य कौन है...?

गुरु ही सूर्य हैं -

जिस दिन शिष्य विचार कर लेता है कि उसके जीवन में गुरु ही सूर्य हैं और वे ही उसे प्रकाश, ऊष्मा, ऊर्जा, शक्ति विकास की गति प्रदान कर देते हैं, उस क्षण वह गुरु रूपी सूर्य के सामने नमन करते हुए पुनः अर्ध्य अर्पित करता है, उगते हुए सूर्य की लालिमा को देखकर प्रसन्न होता है।

21 अप्रैल तो हमारे जीवन का सूर्योदय है -

निखिल शाश्वत हैं, सत्य हैं, शिव हैं और सुन्दरतम् हैं। इसलिये गुरु को 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' कहा गया है। और हम प्रतीक्षा करते हैं, हमारे जीवन के सूर्योदय दिवस 21

अप्रैल की, जिस दिन इस धरा पर सद्गुरुदेव ने अपनी पहली प्रकाश किरण और हम शिष्यों को ऊर्जा तथा चैतन्यता प्रदान की; इसलिए अवतरण दिवस की महामहिमा है। यह दिवस शिष्य के लिये रामनवमी है, कृष्ण जन्माष्टमी है, महाशिवरात्रि है और इससे भी बढ़कर शिष्य के स्वयं के जीवन-उदय का क्षण है, जब उसने पहली बार जाना कि सूर्य कैसा होता है और उसका प्रकाश किस प्रकार आनन्द देता है। उसके पहले तो हम संसार के अंधकार में भटक रहे थे अथवा यह भी हो सकता है कि हमने स्वयं अपनी आंखों पर अज्ञान का ऐसा पर्दा लगा रखा होगा कि हमें सद्गुरुदेव निखिल जैसा सूर्य दिखाई ही नहीं दिया ...लेकिन जब हमने सद्गुरुदेव के ज्ञान प्रकाश को अपने शरीर, मन, रोम-रोम, कण-कण में भर लिया है तो यह दिवस हमारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दिवस है। नमन है सद्गुरुदेव निखिल को और नमन है 21 अप्रैल के उस महान् क्षण को, जिस दिन निखिल रूपी सूर्य उदय हुआ।

हम अपने भावों का अर्ध्य दें, अपने भावों का अभिव्यक्ति करण करें, हम खुशी और प्रसन्नता से नाचें-गायें, हर्ष और उल्लास से मन के मयूर को नृत्यमय कर दें कि आज है -

निखिल जन्मोत्सव, निखिल जयंती...

आज है 21 अप्रैल

हम सब मिलेंगे पाटलिपुत्र पटना में और न मिल सकें तो भी अपने-अपने घर में, अपने-अपने कार्य स्थल में, अपने हृदय समाट गुरु का पूजन कर उन्हें भावों का अर्ध्य, अंजलि अवश्य प्रदान करेंगे और यह संकल्प लेंगे कि हे सद्गुरुदेव! यह जीवन आपसे ही आलोकित है, यह महिमा आपकी ही दी हुई है। यह जीवन आपको समर्पित है। हमारे पास प्रेम, विश्वास, श्रद्धा, समर्पण के भाव हैं और आपका दिया हुआ, गुरु मंत्र है -

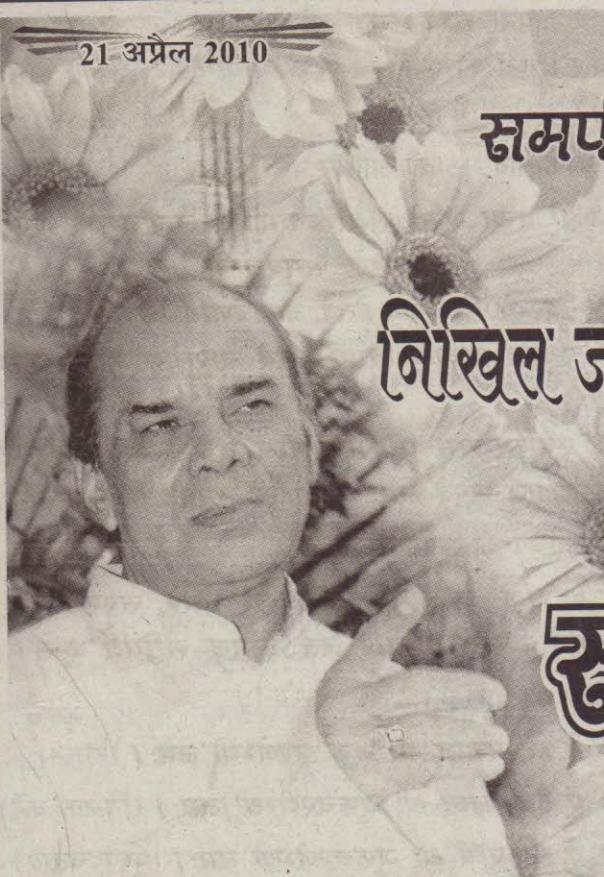
ॐ परम तत्वाव नारायणाय गुरुभ्यो नमः ।

**गुरुब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरुः साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥**

समर्पण, प्रेम, श्रद्धा के पुष्पों से हृदय के भावों से निखिल जयंती - निखिल जन्मोत्सव

पूजा करें

ज्ञानगुण पूजा सम्पूर्ण विधान



प्रातः स्नानादि नित्य क्रिया को समाप्त कर शुद्ध भावनाओं से पूजा स्थल में, जो पहले से स्वच्छ कर लिया गया हो, पूर्व या उत्तर दिशा की ओर आसन बिछा कर बैठें। अपने सामने एक चौकी पर सफेद वस्त्र बिछा कर उसमें पूज्य गुरुदेव का प्राण प्रतिष्ठित चित्र स्थापित करें।

सामग्री - 'निखिलेश्वरानन्द दिव्य चैतन्य सिद्धि यंत्र', 'गुरु प्रत्यक्ष दर्शन गुटिका', 'गुरु प्राण संजीवनी माला'।

पूजन से पूर्व शुद्ध धी का दीपक जला लें, धी का दीपक पूजन काल में सदैव अपने दाहिनी ओर रखें। निम्न मंत्र से दीपक का पूजन मौली एवं अक्षत से करें -

ॐ दीप ज्योतिषे नमः

ॐ दीपस्थ देवतायै नमः

फिर प्रार्थना करें -

भो दीप! देव रूपस्त्वं कर्म साक्षी ह्यविघ्नकृत।
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावदत्र स्थिरो भवः॥

इसके बाद दोनों हाथ जोड़ कर अपने इष्टदेव का पूर्ण श्रद्धा के साथ स्मरण करें -

सर्वमंगल मांगल्यं वरेण्यं वरदं शुभम्।
नारायण नमस्कृत्यं सर्वकर्मणि कारयेत्॥

पवित्रीकरण

बाएं हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की अंगुली से अपने ऊपर जल छिड़कें -

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वास्थांगतोऽपिवा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सः बाहाभ्यन्तरः शुचिः॥

संकल्प

अपने दाहिने हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि - 'आज प्रथम वैशाख शुक्ल सप्तमी बुधवार, निखिल जयंती को अपने इष्ट एवं देवताओं को साक्षी रखते हुए यह विशेष निखिलेश्वरानन्द गुरु पूजन सम्पन्न कर रहा हूं। मेरे जीवन में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति हो, सद्गुरुदेव का आशीर्वाद सदैव मुझे प्राप्त होता रहे।' संकल्प पूरा करने के पश्चात् जल को जमीन पर छोड़ दें।

गुरु प्रणाम

दोनों हाथ जोड़ें -

ॐ	ऐं	गुरुभ्यो	नमः
ॐ	ऐं	परम गुरुभ्यो	नमः
ॐ	ऐं	परात्पर गुरुभ्यो	नमः
ॐ	ऐं	पारमेष्ठि गुरुभ्यो	नमः

जीवन्यास

अपने हृदय पर दाहिना हाथ रखकर अपनी प्राण प्रतिष्ठा करें -

आं हीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः
मम प्राणः इह प्राणः ।
आं हीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः
मम जीव इह स्थितः ।
आ हीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः
मम सर्वाणि इन्द्राणि, वांग मनः चक्षुःत्वक
श्रोत्र ग्राण जिहा इहैव आगत्य सुखं चिरं तिष्ठतु ।

गणपति का ध्यान करें -

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्तुण्डाय
धीमहि तज्ज्ञो दन्ति प्रचोदयात् ।
ॐ गं इदं स्नानं गणेशाय नमः ।
ॐ गं एष गंधः सचन्दनं सपुष्पं गणेशाय नमः ।
ॐ गं एष धूपः साक्षातं गणेशाय नमः ।
ॐ गं एष दीपः नैवेद्येन सहितं गणेशाय नमः ।
दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम कर लें ।

गुरु-ध्यान

अर्थातः प्रातरुत्थाय शर्वास्थः सुसमाहितः ।
शिरस्थ कमले ध्यायेत् स्व गुरुं ब्रह्म स्वप्निम ॥
अर्थात् सिर स्थित सहस्रदल कमल के मध्य में हंस पीठ के ऊपर गौर शरीर, प्रसन्न मुखमण्डल, शांत मूर्ति, सुर शक्ति सहित, शिव स्वरूप गुरुदेव आपका शिष्य ध्यान कर रहा है ।

ध्यायेच्छिरशि शुक्लाब्जे द्विनेत्रं द्विभुजं गुरुं ।
श्वेताम्बरं परिधानं श्वेत माल्यानुलेपनं ॥
वराभय करं शान्तं करुणामय विग्रहं ।
वामनेत्पल धारिण्यं शवत्यालिंगित विग्रहं ॥

ब्रह्मरंध्र के मध्य में श्वेत वर्ण, द्विभुज, द्विनेत्र गुरु स्थित हैं उनके वस्त्र श्वेत हैं, श्वेत माला पहने हुए, श्वेत चंदन लगाये हैं, उनके एक हाथ में वर तथा दूसरे हाथ में अभय है, उनकी मूर्ति शांत और करुणामय है, उनके बायीं ओर रक्त-वर्ण शक्ति है, इस प्रकार ध्यान करें ।

फिर दाहिना हाथ अपनी नाभि पर रख कर उस पर बायां हाथ रख कर नाभि स्थल में गुरुदेव का ध्यान करें -

ॐ वराभय करं शान्तं, शुक्लवर्णं स शत्तिकम् ।
ज्ञानानन्द मयं साक्षात्, सर्वं ब्रह्म स्वरूपकम् ॥
शुक्ल वर्ण वाले गुरुदेव साक्षात् ब्रह्म एवं ज्ञान स्वरूप

हैं, वे अपनी साधनात्मक शक्ति सहित सहस्रार में स्थित होकर शिष्य को एक हाथ से वर तथा दूसरे हाथ से अभय प्रदान कर रहे हैं ।

इसके बाद गुरु का आह्वान करें -

ॐ एं परम गुरवे सशत्तिकम् श्री नारायणाय गुरवे
आवाहनं समर्पयामि ।

ॐ स्वरूप निरूपण हेतवे नारायणाय श्री गुरवे नमः ।
ॐ स्वच्छ प्रकाश विमर्श हेतवे नारायणाय श्री गुरवे
नमः ।

ॐ स्वात्माराम पंजर विलीन तेजसे श्री परमेष्ठि
नारायणाय गुरवे नमः आवाहनं समर्पयामि पूजयामि ।

गुरु चित्र को स्नान करावें -

ॐ गंजे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सद्विधि कुरु ।
चित्र को पोंछ दें ।

ॐ एं इदं स्नानं श्री गुरु चरणेभ्यो नमः । (स्नान)

ॐ एं एष गन्धः श्री गुरुचरणेभ्यो नमः । (तिलक करें)

ॐ एं इदं पुष्पं श्री गुरुचरणेभ्यो नमः । (पुष्प चढ़ावें)

ॐ एं एष धूपः श्री गुरुचरणेभ्यो नमः । (धूप दिखाएं)

ॐ एं एष दीपः श्री गुरुचरणेभ्यो नमः । (दीप दिखाएं)

ॐ एं इदं नैवेद्यं समर्पयामि । (नैवेद्य अर्पित करें)

गुरु चित्र के सामने एक थाली रखें । अष्ट गंध या कुंकुम से त्रिकोण बना लें । मध्य में ॐ लिखकर 'निखिलेश्वरानंद दिव्य चैतन्य सिद्धि यंत्र' को स्थापित करें । 'गुरुत्व प्रत्यक्ष गुटिका' दाहिनी ओर स्थापित करें ।

यंत्र को स्नान करावें ।

स्नानं समर्पयामि श्री गुरु चरणेभ्यो नमः

इसके बाद निम्न मंत्र बोलते हुए कुंकुम से चावल रंग कर बाएं हाथ में लेकर यंत्र पर चढ़ावें ।

ॐ गुं गुरवे नमः ।

ॐ गुं परम गुरवे नमः ।

ॐ गुं परात्पर गुरवे नमः ।

ॐ गुं पारमेष्ठि गुरवे नमः ।

ॐ गुं अनन्तात्मने नमः ।

ॐ गुं परमात्मने नमः ।

ॐ गुं ज्ञानात्मने नमः ।

ॐ गुं अनन्तात्मय नमः ।

ॐ गुं पारिजाताय नमः ।
 ॐ गुं ऐश्वर्याय नमः ।
 ॐ गुं पद्माय नमः ।
 ॐ गुं अरनन्दकन्दाय नमः ।
 ॐ गुं संविल्लाभाय नमः ।
 ॐ गुं प्रकृतिप्रियाय नमः ।
 ॐ गुं ज्ञानाय नमः ।
 ॐ गुं आधार शक्तये नमः ।
 ॐ एं एष सांगाय सपरिवाराय सर्वशक्ति मयाय
 गुरुदेवाय निखिलेश्वराय नमः ।

इसके बाद गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य और ताम्बूल (सुपारी) इन छः उपकरणों से निखिलेश्वरानन्द दिव्य चैतन्य यंत्र का विशेष पूजन करना चाहिए।

1. पृथ्वी को गन्ध स्वरूप मानें, 2. आकाश को पुष्प स्वरूप मानें, 3. वायु को धूप स्वरूप मानें, 4. अग्नि को दीप स्वरूप मानें, 5. अमृत को नैवेद्य स्वरूप मानें, 6. वातावरण को ताम्बूल (सुपारी) स्वरूप मानें।

गन्ध - दोनों हाथों के अंगुष्ठ और कनिष्ठा उंगलियों के योग से गुरुदेव को गन्ध समर्पित करें -

ऐं कनिष्ठिकाभ्यां लं पृथिव्यात्मकं गन्धं स शक्तिकं
 श्री गुरुवे समर्पयामि नमः ।

धूप - दोनों हाथों की तर्जनी और अंगुष्ठ के सहयोग से धूप समर्पित करें -

ऐं तर्जनीभ्यां यं वागात्मकं धूपं स शक्तिकं श्री गुरुवे
 समर्पयामि नमः ।

दीप - दोनों हाथों की मध्यमा और अंगुष्ठ के योग से दीप दिखायें -

ऐं मध्यमाभ्यां रं बहात्मकं दीपं स शक्तिकं श्री गुरुवे
 समर्पयामि नमः ।

नैवेद्य - दोनों हाथों की अनामिका और अंगुष्ठ के योग से नैवेद्य समर्पित करें -

ऐं अनामिकाभ्यां अमृतात्मकं नैवेद्यं स शक्तिकं श्री
 गुरुवे समर्पयामि नमः ।

ताम्बूल - दोनों हाथ जोड़कर ताम्बूल (सुपारी) प्रदान करें -

ऐं करतलकर पृष्ठाभ्यां सर्वात्मकं ताम्बूलं स शक्तिकं
 श्री गुरुवे समर्पयामि नमः ।

इस प्रकार छः उपकरणों से गुरुदेव का पूजन करें। यदि ये

पदार्थ उपलब्ध हों तो वे पदार्थ यंत्र के आगे समर्पित करें, और न हों तो मानसिक रूप से ऊपर लिखे अनुसार मानसिक उपकरण पूजन समर्पित करें, इसके बाद करन्यास करें -

करन्यास	अंगन्यास
ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
ॐ तर्जनीभ्यां नमः	शिरसे स्वाहा
ॐ मध्यमाभ्यां नमः	शिखायै वषट्
ॐ अनामिकाभ्यां नमः	कवचाय हुं
ॐ कनिष्ठिकाभ्यां नमः	नेत्रब्रयाय वौषट्
ॐ करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः	अस्त्राय फट्

कर न्यास में सभी उंगलियों को तथा अंगन्यास में सारे शरीर का स्पर्श करना चाहिए।

पीठ पूजा

निम्न मंत्र बोल कर निखिलेश्वरानन्द दिव्य चैतन्य सिद्धि यंत्र एवं गुरु प्रत्यक्ष दर्शन गुटिका पर गंध और पुष्प चढ़ावें।

ॐ ह्रीं एते जंथ पुष्पे पीठ देवताभ्यो नमः ।
ॐ ह्रीं एते जंथ पुष्पे पीठ शक्तिभ्यो नमः ।
ॐ एं इदं पुष्पं ब्रह्माण्डस्वरूपाय निखिलेश्वराय नमः ।
ॐ एं एष धूपः ब्रह्माण्डस्वरूपाय निखिलेश्वराय नमः ।
ॐ एं एष दीपः ब्रह्माण्डस्वरूपाय निखिलेश्वराय नमः ।
ॐ एं इदं नैवेद्यं ब्रह्माण्डस्वरूपाय निखिलेश्वराय नमः ।
ॐ एं इदं आचमनीयं श्री निखिलेश्वराय नमः ।
ॐ एं इदं ताम्बूलं श्री निखिलेश्वराय नमः ।

आवरण पूजा

निम्न मंत्रों से यंत्र पर सुगन्धित पुष्प चढ़ावें।

ॐ एं एष जंथ पुष्पे निखिलेश्वरानन्द देवताभ्यो नमः
ॐ एं एष जंथ पुष्पे परम गुरुभ्यो नमः
ॐ एं एष जंथपुष्पे परात्पर गुरुभ्यो नमः
ॐ एं एष जंथ पुष्पे पारमेष्ठि गुरुभ्यो नमः

यदि शिष्य अथवा शिष्या दीक्षित हो तो गुरु मंत्र 'ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः' मंत्र का जप करें, यह मंत्र जप एक माला अर्थात् 108 बार उच्चारण करें।

गुरु पंक्ति नमस्कार - इसके बाद गुरु पंक्ति नमस्कार करें-

ॐ गुरुभ्यो नमः ।
ॐ परम गुरुभ्यो नमः ।
ॐ परापर गुरुभ्यो नमः ।
ॐ सर्व गुरुभ्यो नमः ।

इसके बाद गुरु प्राण संजीवनी माला से 11 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ ॐ निनि लिखिलेश्वराय नमः ॥

तदन्तर पांच माला मंत्र जप गुरु मंत्र का करें -

॥ ॐ परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

फिर गुरु को प्रणिपात होकर नमस्कार करें -

अस्त्रण्ड मंडलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् ।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
न गुरोरथिकं तत्त्वं न गुरोरथिकं तपः ।
तत्त्वं ज्ञानं परं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
अज्ञानं तिमिरानन्धस्य ज्ञानांजनं शलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः ॥
नमोऽस्तु गुरवे तस्मै इष्ट देव स्वस्त्रिये ।
यस्य वाग्मृतं हन्ति विषं संसार संज्ञकम् ॥
भव पाश विनाशाय ज्ञानं दृष्टि प्रदर्शिने ।
नमः सद्गुरवे तस्मै भुक्ति मुक्ति प्रदायिने ॥
नरकृति परब्रह्मरुपायाज्ञानं हारिणे ।
कुलधर्मं प्रकाशाय तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

इस प्रकार गुरुदेव को नमस्कार कर वाग्भव बीज मंत्र 'ऐं' द्वारा तीन बार प्राणायाम करें, गुरु को अपने सामर्थ्य अनुसार दक्षिणा अर्पित करें। नियमित रूप से गुरु स्तोत्र तथा गुरु स्तवन का पाठ करने से समस्त कार्य गुरुमय हो कर सफलतादायक फलित होते हैं।

जप समर्पण

ॐ गुहाति गुह्यं गोप्ता त्वं गृहणास्मत् कृतं
जपं सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत् प्रसादान्महेश्वर ।

इसके बाद आरती करें तथा प्रसाद वितरण करें। साधना समाप्ति के बाद यंत्र को अपने पूजा स्थान में ही स्थापित रखें तथा हर माह की 21 तारीख को पूजन करें और गुरु प्राण संजीवनी माला को किसी विशेष कार्य पर जाते समय अपने गले में धारण करें। इस माला का उपयोग केवल गुरु मंत्र जप में ही करना है। नित्य पूजन के पश्चात् माला गुरु चित्र के आगे रख दें। 'गुरु प्रत्यक्ष दर्शन गुटिका' को तीन दिन पश्चात् जल में विसर्जित कर दें।

इस गुरु पूजन को आप हर माह की 21 तारीख को भी सम्पन्न कर सकते हैं।

गुरु आरती

जय गुरुदेव दयानिधि दीनत हितकारी ।

जय जय मोह विनाशक भव बन्धन हारी ॥

ॐ जय-जय-जय गुरुदेव...

ब्रह्मा विष्णु सदा शिव गुरु मूरत धारी ।

वेद पुराण बखानत गुरु महिमा भारी ॥

ॐ जय-जय-जय गुरुदेव...

जप तप तीरथ संयम दान विविध कीजै ।

गुरु विन ज्ञान न होवे कोटि यतन कीजै ॥

ॐ जय-जय-जय गुरुदेव...

माया मोह नदी जल जीव बहे सारे ।

नाम जहाज बिठा कर गुरु पल में तारे ॥

ॐ जय-जय-जय गुरुदेव...

काम क्रोध मद मत्सर चोर बड़े भारी ।

ज्ञान खड़ग दे कर में गुरु सब संहारे ॥

ॐ जय-जय-जय गुरुदेव...

नाना पंथ जगत में निज-निज गुण गावें ।

सब का सार बता कर गुरु मारग लावें ॥

ॐ जय-जय-जय गुरुदेव...

गुरु चरणामृत निर्मल सब पातक हारी ।

वचन सुनत श्री गुरु के सब संशयहारी ॥

ॐ जय-जय-जय गुरुदेव...

तन मन धन सब अर्पण गुरु चरण कीजै ।

ब्रह्मानन्द परम पद मोक्ष गति दीजै ॥

ॐ जय-जय-जय गुरुदेव...

क्रोध उन्मत्त भैरव

तीव्र तंत्रात्मक
वशीकरण

जिव भैरव के द्वारा प्रकट होती है

तंत्र साधिकर्णे द्वारा प्रिय साधिवा



काल कराल विकराल तीव्र उन्मत्त क्रोध भैरव की साधना तांत्रिक अवश्य ही सम्पन्न करते हैं। जिससे उनके नेत्रों में वशीकरण की महान् शक्ति आ जाती है। सामान्य साधक तंत्र की इन विशेष साधनाओं से अवश्रीत रहता है, सोचता है कि ऐसी तीव्र साधना करने से उसका कोई अनिष्ट नहीं हो जाये और उच्च कोटि के तांत्रिकों ने इसे तामसी तीव्र विद्या के रूप में प्रचार कर गृहस्थ साधकों से वंचित रखा। लेकिन जो श्री साधक शिव भक्त है, शिव साधना अभिषेक करते हैं, उन्हें किसी श्री साधना में डरने की आवश्यकता नहीं है। भैरव शिव के द्वारपाल और रक्षाकारक देव हैं, उनके साधक को सदैव शक्ति प्रदान करते हैं।

वशीकरण तंत्र की यह अद्भुत चमत्कारिक साधना

तंत्र की हजारों शाखाओं का स्वरूप अलग-अलग है, साधना महाकाय उन्मत्त भैरव

क्रियाएं एक दूसरे से विपरीत हैं, लेकिन दुर्भाग्य है कि तंत्र का शुद्ध रूप से प्रचार प्रस्तुतीकरण बहुत कम हुआ है, इस कारण सामान्य जन में इसके प्रति फैली धारणाएं गन्दे रूप से ही विकसित हुई हैं, भैरवाष्टक तंत्र शमशान साधनाओं का

स्वरूप है, जहां किसी भी तंत्र क्रिया से किसी भी अन्य सात्त्विक अनुष्ठान से कार्य न पूर्ण हो तो “भैरवाष्टक तंत्र” ही एक मात्र उपाय बचता है। यह वह तन्त्रास्त्र है, जिसका वार कभी खाली नहीं जाता है। कहावत है कि लोहे को लोहा काटता है, उसी प्रकार प्रेत बाधा जैसे तीव्र प्रयोगों को शान्त करने हेतु, प्रबल शत्रु के नाश हेतु इस उन्मत्त तीव्र भैरव तंत्र का सहारा लिया जाता है।

तीव्र वाममार्गी, योगिनी, चण्ड, क्रोध, रुस, कौल के आदिदेव ‘क्रोध भैरव’ हैं और जो व्यक्ति वाम तंत्र का प्रयोग करता है, उसे भैरव के इस स्वरूप की नित्य प्रति साधना अवश्य करनी चाहिए।

क्रोध भैरव के क्रोध के सम्बन्ध में लिखा है कि इनका स्वरूप वियोग वक्त्र, वज्रपाणि, सुरान्तक, क्रोध अधिपति, आकाश रूपी मुख वाले, महाकाय, प्रलय अग्नि की प्रभा के समान दैदीप्यमान, अभेद-भेद कारक, रौद्र रूपी देवों और सिद्धों दोनों द्वारा नमस्कृत, त्रिलोक के अधिपति का स्वरूप है जिनके अधीन सारे भूत-प्रेत, पिशाच, भैरव-भैरवियां हैं। उन क्रोध भैरव को, उन्मत्त भैरव को बार-बार नमस्कार है।

वाम तंत्र की साधनाओं का स्वरूप निराला ही है, इसमें मूल रूप से भूत-सिद्धि, वशीकरण, सर्व स्तम्भन, मारण की साधनाएं हैं। इसके अलावा वाक् सिद्धि, काव्य सिद्धि का विधान भी मुख्य रूप से लिखा गया है। शरीर सम्बन्धी किसी भी प्रकार के दोष दूर करने हेतु भैरव तंत्र से श्रेष्ठ कोई उपाय नहीं है।

अब प्रश्न उठता है कि भैरव तंत्र का उपयोग कब किया जाय, और किस प्रकार किया जाय, जिससे तंत्र का प्रयोग करने वाले साधक को स्वयं भी कोई हानि नहीं पहुंचे और सकल मनोरथ कार्य भी सिद्ध हो जाय, इस हेतु शास्त्रोक्त कथन है कि -

एक वृक्षे देवग्रहे बने वज्रधरालये ।
निम्न जासंगमे वारिपितभूत्यावथापिता ।
सिद्धयन्तिभूतभूतिन्यो नृणाभीष्ट फलप्रदाः ॥

अर्थात् किसी वृक्ष के नीचे, शिवालय में, वन में, नदी के संगम पर अथवा शमशान में बैठ कर उपासना करने से भैरव और भैरव के सहयोगी भूत इत्यादि की सिद्धि प्राप्त होती है, और मनुष्य को इष्टफल मिलता है।

भैरव साधना का एक गोपनीय पक्ष
यह भी है कि जहां वे एक उग्र देव हैं वहीं अन्तर्मन में पूर्ण शांत व चैतन्य देव भी हैं जिनकी यथोष्ट स्वरूप में उचित साधना विधि से उपासना करने पर यह संभव ही नहीं है कि उनके साधक के जीवन में किसी प्रकार का भौतिक आभाव रह जाए।

इसी तथ्य का और अधिक गूढ़ विवेचन यह है कि जहां जीवन में सुख-समृद्धि का आगमन किसी तेजस्वी साधना के माध्यम से संभव होता है वहां, वह अन्य साधनाओं की अपेक्षा कहीं अधिक स्थायी, आभायुक्त एवं जीवन में निश्चित स्वरूप से सुखद परिवर्तनकारी होती है।

जब साधक के जीवन को ही शत्रु द्वारा संकट उत्पन्न हो जाय अथवा शत्रु ने उसे द्वेष भाव से पीड़ा अथवा हानि पहुंचाई हो, धन हरण कर लिया हो, विरुद्ध प्रयोग किया हो, तो तीव्र भैरव तंत्र का प्रयोग करना चाहिए।

उन्मत्त भैरव और उन्मत्त भैरवियां

उन्मत्त भैरव साधना में जब भैरव पूजन किया जाता है तो उनके साथ आठ उन्मत्त भैरवियों का पूजन अनिवार्य है, ये आठ उन्मत्त भैरवियां हैं -

1. शशि देव्या, 2. तिलोत्तमा, 3. कांचनमाला, 4. कुलहारिणी, 5. रत्नमाला, 6. रम्भा, 7. उर्वशी, 8. रमाभूषिणी।

केवल कृष्ण पक्ष में ही तीव्र भैरव तंत्र से सम्बन्धित साधनाएं सम्पन्न की जाती हैं।

साधना क्रम

उन्मत्त भैरव की साधना का क्रम सभी साधनाओं में एक है, लेकिन अलग-अलग कार्यों हेतु अलग-अलग प्रकार के मंत्र का विधान दिया गया है, इसे ध्यान में रखना आवश्यक है।

भैरव साधना में भूत-प्रेत, पिशाच इत्यादि शक्तियों का आह्वान किया जाता है और भैरव द्वारा इन शक्तियों से ही इच्छित कार्य सम्पन्न कराया जाता है, इस कारण साधक को कई बार बड़े ही विचित्र अनुभव होते हैं। साधना करते समय ऐसा लग सकता है, मानो पृथ्वी घूम रही है, पंखों की फड़फड़ाहट, विचित्र ध्वनियाँ, सामग्री का इधर-उधर होना, दीपक की लौ तीव्र हो जाना, मुर्दे की गन्ध इत्यादि अनुभव हो सकते हैं लेकिन जिसे सिद्धि प्राप्त करनी है और जो दृढ़ संकल्प से साधना करना चाहता हो उसे भैरव तंत्र का प्रयोग करने से पहले पूर्ण विधि-विधान सहित गुरु-पूजन अवश्य ही सम्पन्न कर लेना चाहिए। गुरु साक्षात् शिव स्वरूप होते हैं और जहां गुरु पूजन होता है, वहां साधना के मार्ग की आपदाएं अपने आप शांत हो जाती हैं।

साधना विधान क्रम

जैसा कि ऊपर लिखा है, यह साधना एकान्त में सम्पन्न करनी चाहिए और साधना के दौरान बार-बार विघ्न न पड़े और न ही किसी वस्तु के लिए उठना पड़े तो साधक को पूर्ण सामग्री की व्यवस्था पहले से कर लेनी चाहिए, इस हेतु 'तंत्र कार्य कालवक्त्र उन्मत्त भैरव महायंत्र', 'अष्ट भैरवी चक्र' आठ मिट्टी के दीपक, तेल, फल, आठ सुपारी, तिल, सिन्दूर, लाल वस्त्र, काले वस्त्र की व्यवस्था आवश्यक है।

जिस एकान्त स्थान पर प्रयोग कर रहे हैं, वहां काला वस्त्र बिछाएं और उस पर दो तिल की ढेरियां बना कर एक पर 'उन्मत्त भैरव महायंत्र' और दूसरी ढेरी पर 'अष्ट भैरवी चक्र' स्थापित करें, उसके चारों ओर तिल से ही एक गोल घेरा बनाएं, अब इस गोल घेरे के भीतर और कुछ भी सामग्री नहीं रखनी है, इसके बाहर आठ दीपक चारों ओर जला दें, सिन्दूर से भैरव की पूजा करें -

**ॐ नमस्तेऽमृतसम्भूते बलवीर्यवद्धिनि ।
बलमात्युश्च मे दहि पापन्मे त्राहि दूरतः ॥**

हे अमृत सम्भूते! मुझे बल वीर्य और दीर्घ आयु प्रदान करें, मेरी पाप राशि को ध्वस्त करें, मैं भैरव साधक आप को बार-बार प्रणाम करता हूं।

तत्पश्चात् तेल का अर्पण भैरव यंत्र पर करना चाहिए, फिर 21 बार निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

**ॐ विष्व वज्रजालेन हुं हुं सर्वभूतान् हुं फट् ॐ
वज्रमुखे सर-सर फट् ॥**

अब साधक को धूप, लोबान प्रज्वलित करना चाहिए।

अष्ट भैरवी पूजन में अष्ट भैरवी चक्र पर इत्र, केसर से तिलक कर दोनों हाथ जोड़ कर निम्न अष्ट भैरवियों का आह्वान करें -

**ॐ हीं शशिदेव्या, ॐ हीं तिलोत्तमा, ॐ हीं
कांचनमाला, ॐ हुं कुलहारिणी, ॐ हुं रत्नमाला,
ॐ हुं सम्भा, ॐ श्रीं उर्वशी, ॐ समाभूषिणी ॥**

इस प्रकार पूजन कर वीर मुद्रा में बैठ कर साधक एक पृष्ठ माला अर्पित कर अपनी साधना प्रारम्भ करें, अब अलग-अलग कार्यों हेतु अलग-अलग मंत्रों का जो विधान और जप संख्या है, वह स्पष्ट की जा रही है -

उन्मत्त भैरव वशीकरण प्रयोग

प्रथम मंत्र

॥ ॐ हूं स्वाहा ॥

इच्छित व्यक्ति का नाम लेकर अपने नाम के साथ उच्चारण कर उस मंत्र की 11 माला जप करना चाहिए।

द्वितीय मंत्र

॥ इं इं इं हां हां हां हें हें ॥

पांच हजार मंत्र जप भैरव माला से करने से मनुष्य तो क्या देवता भी साधक की ओर आकर्षित होते हैं।



सौभाग्य विधान

दामर तंत्र के अनुसार - पुष्य नक्षत्र में श्वेतार्क की जड़ उखाइकर दाहिने बाहु में बांधने से अत्यन्त दुर्भाग्यशाली व्यक्ति भी पूर्ण सौभाग्य को प्राप्त करता है।

भूत-प्रेतादि दोष निवारण प्रयोग

भैरव पूजन कर अपने सामने एक सरसों की ढेरी बना कर इस मंत्र से अभिमन्त्रित कर बाधा ग्रस्त, रोग ग्रस्त व्यक्ति पर मंत्रोच्चार करते हुए सरसों का प्रहार करें तो सभी प्रकार के दोष दूर हो जाते हैं।

मंत्र

॥ ॐ ॐ हीं हीं हः हः फट् स्वाहा ॥

भैरव तंत्र का विधान लम्बा-चौड़ा है। जीवन में हजारों बाधाएं हैं तो उनकी शांति के लिए हजारों प्रयोग भी हैं। भैरव तंत्र में उपरोक्त विवरण के अलावा विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों, औषधियों, शमशान प्रयोगों का भी विशद् विवरण आता है, गुरु कृपा से आगे के अंकों में इसकी चर्चा अवश्य करेंगे।

साधना सामग्री - 270/-



शनु हुच्चा, मारण, विद्वेषण, स्तम्भन



तीव्रतम्

विद्वेषण स्तम्भन साधना

साधना के समय किसी प्रकार का विद्वन न हो,
आप अपने पूर्ण मनोयोग से फल प्राप्ति की, शक्ति प्राप्ति की इच्छा के साथ ही
साधना सम्पन्न करें। साधना में भावना का भी स्थान प्रबल है
दृढ़ भावना, दृढ़ इच्छा शक्ति होनी ही चाहिए।

साधना का तात्पर्य है अपने भीतर सिद्धि, शक्ति उत्पन्न करना। जब बाहरी बाधाएं कम हो जाती हैं अथवा पूर्ण रूप से दूर हो जाती हैं, तभी तो व्यक्ति अपनी उन्नति कर सकता है, अपनी शक्ति का सही उपयोग कर साधारण स्थिति से श्रेष्ठता की ओर बढ़ सकता है।

बाधाएं निमंत्रण देकर नहीं आती हैं, बाधाएं तो अकस्मात् सामने आ जाती हैं। यदि शनु प्रबल हो जाय तो किस समय हानि पहुंचा दे इसका अनुमान लगाना कठिन है, हर समय शंका-कुशंका से ग्रस्त रहता है, जीवन साधारण बन कर रह जाता है, इसीलिए तो साधना की जाती है, जिससे शक्ति का उद्भव हो सके। शक्ति के मार्ग में किसी प्रकार की बाधा उसके प्रवाह को रोक देती है, और जब शक्ति का प्रवाह रुक जाता है तो साधक को भीतर ही भीतर नष्ट करने लगता है, इसलिए हर स्थिति में बाधाओं का निराकरण आवश्यक है, और जब ये बाधाएं आपकी जानकारी में हों, अर्थात् आपको मालूम हो कि अमुक व्यक्ति अथवा व्यक्तियों का समूह आपके विरुद्ध कार्य कर रहा है, आप अपने मार्ग पर बढ़ रहे हैं, लेकिन इस युग में तो किसी को भी दूसरों की उन्नति सुहाती नहीं है, और वे आपके विरुद्ध घड़यन्त्र करते हैं, कई बार तो आप जिन्हें अपना मित्र तथा शुभचिन्तक समझते हैं, वे ही आपको हानि पहुंचाने में सबसे आगे रहते हैं।

जीवन में अक्सर धोखे होते रहते हैं, लेकिन यदि आप को मालूम है कि अमुक आपका शनु है, तो फिर उसका उपाय क्यों नहीं किया जाय, शनु की शक्ति को ही क्यों न इतना क्षीण बना दिया जाय कि वह आपके विरुद्ध कार्य ही न कर सके, यहीं तो साधना है, सिद्धि का मार्ग है। साधना सिद्धि का तात्पर्य यह नहीं है, कि आप घर की छत पर बैठ गये और स्वर्ण वर्षा होने लगे, साधना का तो तात्पर्य है कि आपके कार्य के मार्ग में कठिनाई नहीं हो, आत्म शक्ति, इच्छा शक्ति, कार्य शक्ति, तीव्रतम् जाग्रत हो, जो कार्य करें, वह सहज पूरा हो जाय और आपको अपना लक्ष्य मिल जाय।

अद्भुत तांत्रिक वार्ताली साधना

वार्ताली साधना, शिव साधना, का एक प्रमुख भाग है, आदि देव शिव की यह विशेष शक्ति-शनुहन्ता, मारण, विद्वेषण, स्तम्भन की शक्ति है। जब शनु अत्यन्त प्रबल हो जाय और सामान्य प्रभाव से वश में न आए तो तंत्र शास्त्र में प्रमुख इस साधना का प्रयोग करना चाहिए।

इस साधना का प्रयोग निम्न कार्यों के लिए भी किया जा सकता है -

★ जब व्यापार में निरन्तर हानि हो रही हो और कार्य बहुत प्रयास करने पर भी पूरे नहीं हो रहे हों।

- ★ जब राज्य बाधाएं बढ़ने लगें और किसी भी प्रकार का होता, यह बात हमेशा याद रखनी चाहिए। कार्य हर दृष्टि से रुक जाय, यह बाधा किसी भी प्रकार साधना सामग्री की हो सकती है।
- ★ जब आपके अधिकारी आपके अनुकूल न हों, और आपको तंग करने का प्रयास करते ही रहें।
- ★ जब किसी कार्य द्वारा मानहानि, अपयश की आशंका हो।
- ★ किसी मुकदमे में हार की संभावना हो, और मुकदमा निपट ही नहीं रहा हो।
- ★ जब मानसिक अशांति बढ़ जाय और आगे बढ़ने का कोई मार्ग न मिले।
- ★ जब शत्रु प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रूप से हानि पहुंचाने लगें।
- ★ घर पर किसी प्रकार का तांत्रिक प्रयोग आपके विरुद्ध किये जाने लगे और घर में हर समय कलह, रोग का वातावरण रहने लगे।
- ★ घर पर भूत-प्रेत-पिशाच का डर हो, अदृश्य आत्माएं अपना प्रकोप दिखाने लगें।

इन सब विपरीत स्थितियों के निराकरण हेतु वार्ताली साधना ऐसी तीव्र, अचूक, शक्ति प्रदायक, तुरन्त फल प्रदायक साधना है, जो प्रबल से प्रबल शत्रु को भी आपके वश में कर देती है।

साधना कब करें?

यह साधना मूल रूप से कृष्ण पक्ष में ही सम्पन्न की जाती है, तथा यह रात्रि साधना है, सर्वोत्तम समय कृष्ण पक्ष की अष्टमी और अमावस्या की रात्रि है। साधना के समय किसी प्रकार का विघ्न न हो, आप अपने पूर्ण मनोयोग से फल प्राप्ति की, शक्ति प्राप्ति की इच्छा के साथ ही साधना सम्पन्न करें। साधना में भावना का भी स्थान प्रबल है। दृढ़ भावना, दृढ़ इच्छा शक्ति होनी ही चाहिए।

साधना प्रयोग

इस साधना हेतु कुछ विशेष कार्यों की आवश्यकता है, उसी अनुरूप कार्य होना चाहिए। साधना काल में जो-जो वस्तुएं आवश्यक हैं, उन वस्तुओं की व्यवस्था पहले से ही कर लेनी चाहिए, साधना काल में बीच में उठना एक प्रकार से साधना में विघ्न है।

एक समय में एक विशेष कामना, इच्छा पूर्ति अथवा एक विशेष कार्य हेतु ही साधना सम्पन्न करनी चाहिए, साधना प्रारम्भ करने से पहले जो कार्य पूर्ण करना चाहते हैं, उस कार्य का संकल्प अवश्य लेना चाहिए, भिन्न-भिन्न लक्ष्यों की पूर्ति का, एक साथ प्रयास करने से एक भी लक्ष्य पूरा नहीं

इस साधना हेतु आवश्यक सामग्री में - धी, दूध, ताम्र पात्र में जल, रक्त चन्दन, अगरबत्ती, केसर, चन्दन, सुगन्धित पुष्प, के अतिरिक्त ताम्र पत्र पर अंकित प्राण प्रतिष्ठायुक्त 'वार्ताली पूजन यंत्र' तथा 'वार्ताली स्तंभन यंत्र' आवश्यक है।

इन सभी सामग्रियों का उपयोग कैसे किया जाय, यह आगे स्पष्ट किया जा रहा है।

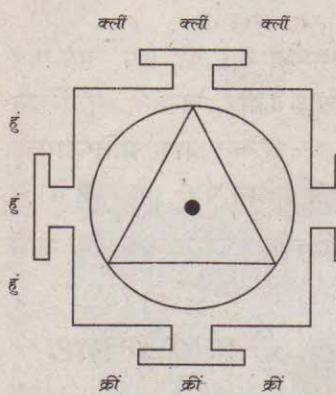
सुखी जीवन की कुंजी आपके हाथ

सुखी या दुखी रहना हमारी मानसिक आदत होती है, जिसे हम विकसित करते हैं। खुशादिल इनसान हमेशा जश्न मनाता है। दूसरे शब्दों में, आप खुशादिल बन जाइए, यानि कि सुखी रहने की आदत डाल लीजिए और जीवन एक लंबा जश्न बन जाएगा, यानी कि आप जीवन के हर दिन, हर पल का आनंद ले सकेंगे। सुखी रहने की आदत से ही जीवन सुखी बनता है और यूंकि हम इस आदत को विकसित कर सकते हैं, इसलिए अपने सुख का निर्माण करने की शक्ति हमारे अपने हाथों में ही होती है।

सुख की आदत सिर्फ सुखी चिंतन के अभ्यास से विकसित होती है। सुखद विचारों की मानसिक सूची बनाएं और उन्हें हर दिन कई बार अपने दिमाग में दोहराएं। अगर दुख का कोई विचार आपके दिमाग में घुसपैठ करने की कोशिश करे, तो तत्काल ऊक जाएं, उसे बाहर निकाल दें और उसके बदले में सुख के विचार भर लें। हर सुबह बिस्तर छोड़ने से पहले कुछ देर लेटे रहें और चेतन मस्तिष्क से सुख के विचार भरे। दिन में आपको वया-वया सुखद अनुभव हो सकते हैं, इन कल्पनाओं की तस्वीरों को अपने दिमाग से गुजरने दें। उनका आनंद लें। यह कभी न सोचें कि आपका दिन खराब गुजरेगा। हो सकता है कि आपके इतना कहने या सोचने भर से ही आप सचमुच घटनाओं को बुरा बनाने में मदद कर रहे हों।

जब आप सुबह उठें, तो कहें... यह दिन प्रभु ने बनाया है, हम इसमें खुश रहेंगे और इसका आनंद लेंगे। अगर आप इन शब्दों के अर्थों पर मनन करते हैं, तो आप सुख के मनोविज्ञान के सहारे दिन के दौरान को परिवर्तित कर देंगे।

वार्ताली साधना प्रयोग



साधना दिवस की रात्रि को प्रथम प्रहर के पश्चात् अर्थात् 10 बजे के बाद स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण करें, एक थाली में सभी सामग्री अपने पास रख दें।

सर्वप्रथम अपने सामने लकड़ी के पीढ़े पर लाल वस्त्र बिछाकर धी का

दीपक जलाकर गुरु पूजन कर, साधना की मानसिक आज्ञा प्राप्त कर, अपने इष्ट देव का पूजन करें तथा शिव का पूजन प्रारम्भ करें, जब यह कार्य पूर्ण हो जाय तो अपने मन को स्थिर कर साधना की ओर अग्रसर हों।

सर्वप्रथम अपने सामने वार्ताली पूजन यंत्र को धी से एक अलग थाली में अच्छी तरह लेप कर उसके उपरान्त दूध और जल की धारा से धोकर स्वच्छ जल से पौछ कर पीढ़े के मध्य में चावलों की ढेरी बना कर उस पर पुष्प की एक पंखुड़ी रखें उसके पश्चात् निम्न मंत्र बोलते हुए यंत्र को उस पंखुड़ी पर स्थापित करें -

ॐ ज्लौं वार्तालीय कैलाशांचल मध्य स्थितितात्यै नमः ॥

तत्पश्चात् यंत्र पर, रक्त चन्दन, हल्दी, अंगर, केसर चढाएं।

अब वार्ताली देवी का ध्यान करें - रक्तवर्णीय, त्रित्री, सिंह पर स्थित, शत्रुओं में प्रबल भय देने वाली, साधक के हृदय में स्थित होने वाली, मुण्ड माला धारण किये हुए वार्ताली देवी का मैं ध्यान करता हूं, मेरी कामना पूर्ण करें।

इसके पश्चात् क्रमानुसार सामने नौ पीठ शक्तियों -

जया, विजया, निता, अपराजिता, नित्या, विलासिनी, दोग्धी, अधोरी तथा मंगला की स्थापना पूजा करें।

वार्ताली देवी की दो प्रमुख साधनाएं हैं। प्रथम साधना शत्रु स्तंभन और द्वितीय साधना मनोकामना पूर्ति कार्यसिद्धि। शत्रु स्तंभन सम्बन्धी साधना हेतु एक कागज पर हल्दी से चित्र में दिया हुआ वार्ताली स्तंभन यंत्र बना कर अपने दायीं ओर रखें और उसके आगे तेल का दीपक जलाएं, इसके बाद सिन्दूर द्वारा पूजन करें तथा अपने दोनों हाथों में पुष्प लेकर चढाएं तथा दाएं हाथ में जल लेकर संकल्प कर अपनी जो विशेष इच्छा हो वह जोर से बोल कर जल को भूमि पर छोड़ दें।

अब दीपक को अपने हाथ में लेकर वार्ताली पूजन यंत्र के सामने आरती के रूप में धुमाते हुए निम्नलिखित वार्ताली मंत्र को ज्यारह बार बोलें।

वार्ताली मंत्र

॥ॐ क्रीं क्रीं वार्ताली क्रीं क्रीं फट् ॥

इसके पश्चात् सामने पात्र में रखे हुए जल को थोड़ा चरणामृत रूप में स्वयं ग्रहण करें।

वार्ताली स्तंभन यंत्र की गणेश तथा क्षेत्रपाल, भैरव पूजन के पश्चात् गणेश के सामने प्रसाद रखें, भैरव के भी सामने प्रसाद रखें तथा हाथ धो कर वार्ताली देवी का ध्यान करते हुए वार्ताली स्तंभन मंत्र का जप करें।

वार्ताली कार्य सिद्धि मंत्र

॥ॐ क्रीं वाराहा वार्तालीय नमः ॥

इस मंत्र की ज्यारह माला जप उसी स्थान पर बैठ कर करना है, कामना पूर्ति हेतु, पुष्प, तिल, तथा सुरा अर्पित करनी चाहिए।

इस साधना में कुछ विशेष बातें हैं - शत्रु स्तंभन कार्य हेतु मंत्र जप 'हरिद्रा माला' से करना चाहिए।

शुभ कार्य हेतु 'स्फटिक माला' से मंत्र जप करना चाहिए।

किसी कार्य की विजय सिद्धि हेतु 'रुद्राक्ष माला' से मंत्र जप करना चाहिए।

पूजन समाप्त होने पर पुनः क्रमशः गुरु, शिव, गणेश, भैरव, वार्ताली का ध्यान कर अपना स्थान छोड़ना चाहिए।

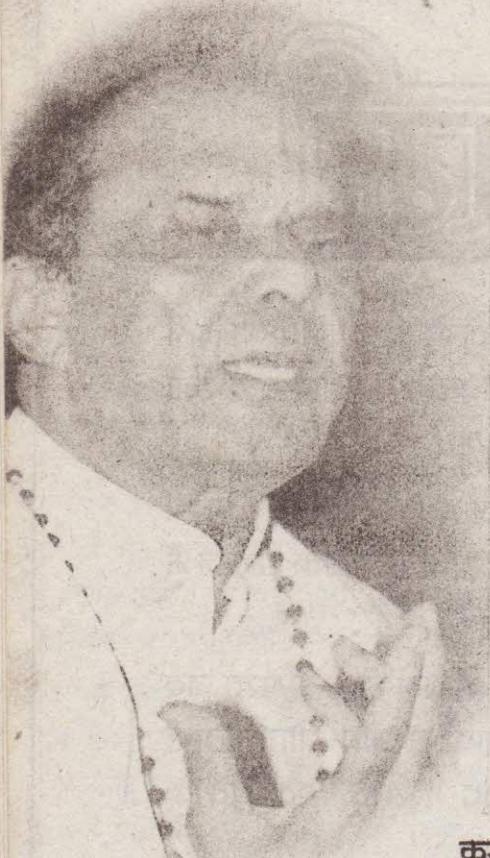
वार्ताली स्तंभन यंत्र लिखे कागज के नीचे अपने विरोधी का नाम अवश्य लिखा होना चाहिए, इस कागज को एक मिट्टी के पात्र में गुण्डल, तिल, मरसों तथा पुष्प डाल कर जला देने से प्रबल से प्रबल शत्रु का भी नाश हो जाता है।

पूजन के पश्चात् वार्ताली यंत्र को अपने पूजा स्थान में एक ओर स्थापित कर दें तथा जब भी किसी प्रकार की शत्रु बाधा, अथवा कोई अन्य बाधा आये तो अष्टमी अथवा अमावस्या को पूजन अवश्य करना चाहिए।

यह चैत्र नवरात्रि साधना पैकेट तो उपहार स्वरूप ही है साथ ही इसके माध्यम से गुरु कार्य के रूप में आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाएं तथा कार्ड क्रं 6 पर अपने दोनों मित्रों का पता लिखकर भेजें। कार्ड मिलने पर 570/- की वी.पी.पी. द्वारा आपको इस साधना की मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।

शिष्य धर्म

- ❖ केवल प्रवचन सुनने या दीक्षा लेने या शिविर में भाग लेने से ही कोई शिष्य नहीं हो जाता। शिष्यता का अर्थ है गुरु के शब्दों को अपने हृदय पर अंकित करना तथा गुरु द्वारा दिखाए मार्ग पर निरन्तर आगे बढ़ते रहना।
- ❖ शिष्य उसे कहते हैं जिसका अपना कोई अस्तित्व ही न हो। वह तो गुरु का ही प्रतिबिम्ब होता है तथा गुरु की ही चेतना का एक अंश होता है जो कि समाज में रहकर गुरु की दिव्यता एवं तेजस्विता का प्रसार करता है।
- ❖ हालांकि शिष्य का अपना शरीर होता है, अपना निजी जीवन होता है परंतु जब उसका मन विसर्जित हो जाता है तथा केवल गुरु के भावों से ओत-प्रोत होता है तब वह वास्तव में तो पूर्णतः गुरुमय ही होता है समुद्र में समाई एक बूँद के समान।
- ❖ प्रेम ही वह डोर है जिसके द्वारा शिष्य गुरु से जुड़ा रहता है। प्रेम तो ऐसा शब्द है जिसके आगे भक्ति, श्रद्धा, समर्पण सब तुच्छ से शब्द लगते हैं क्योंकि प्रेम है तभी इन सबका प्रादुर्भाव संभव है।
- ❖ शिष्य वह है जो कि निजी स्वार्थों से ऊपर उठा होता है क्योंकि उसे पूर्ण विश्वास होता है कि सदगुरु स्वयं उसकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करेंगे।
- ❖ शिष्यता तो वास्तव में जीवन का सौंदर्य है एक ठूँठ से जीवन में वसंत के आगमन सा है। शिष्यता जब जन्म लेती है तो व्यक्ति का जीवन ही रूपांतरित हो जाता है तथा वह पूर्णता की ओर अग्रसर हो जाता है।
- ❖ आध्यात्म हो या भौतिक जगत, शिष्य के लिए पूर्णता की कुंजी है सदगुरु। इसलिए वह अन्य प्रयासों में समय व्यर्थ गंवाने की अपेक्षा सदगुरु में ही अपना सारा ध्यान केन्द्रित करता है।
- ❖ किसी भी व्यक्ति के जीवन में शिष्यता एक सुनहरे प्रभात के समान है जिसके आगमन से मोह, अंहकार का अंधकार समाप्त होकर दिव्यता का प्रकाश फैल जाता है और यह प्रभाव संभव है सदगुरु की कृपा के द्वारा। इसीलिए शिष्य अपना सर्वस्व गुरु चरणों में समर्पित कर देता है।



गुरु-वाणी

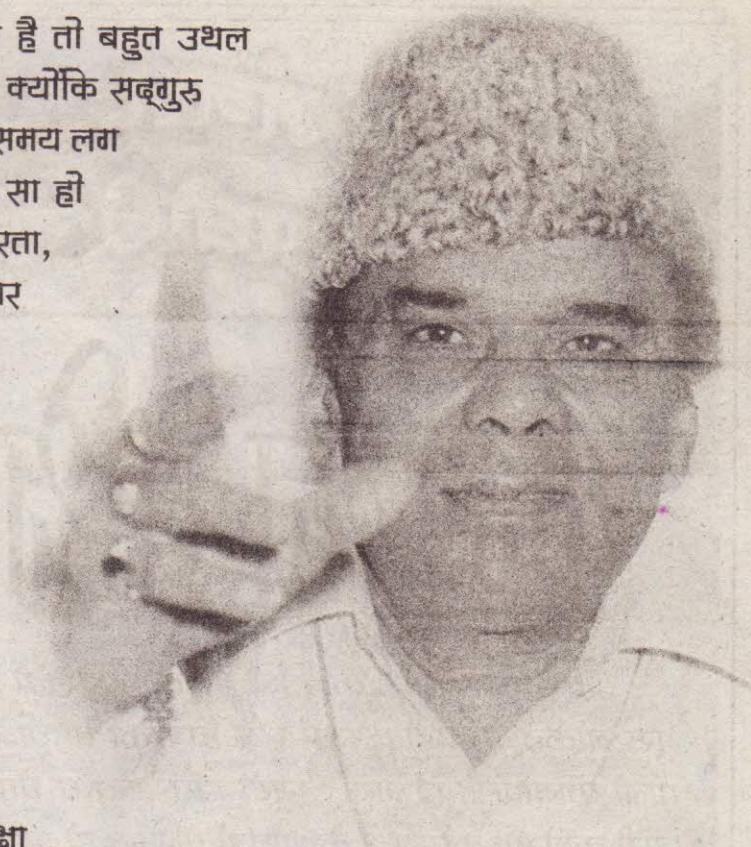
◆ व्यक्ति के जीवन का बहुत बड़ा सौभाग्य होता है कि वह अपने जीवन में सद्गुरु से मिले और उससे भी बड़ा सौभाग्य होता है जब वह सद्गुरु को पहचान ले तथा उसके प्रति समर्पित हो जाए।

◆ बहुत कम लोग सद्गुरु के पास पहुंच पाते हैं। गुरु तो जीवन में बहुत मिल सकते हैं परंतु एक उच्च कोटि का सद्गुरु मिलना तभी संभव होता है जब व्यक्ति के पूर्व जन्म के पुण्यों का उदय हो जाए।

◆ परंतु केवल सद्गुरु से मिलने या उसकी जय जयकार करने से कुछ प्राप्त नहीं हो सकता, उसके लिए तो फिर आपको समर्पण की कला सीखनी पड़ेगी, श्रद्धा एवं विश्वास पैदा करना पड़ेगा।

◆ कोई गुरु स्वार्थ से प्रेरित हो सकता है परंतु सद्गुरु की शिष्य से कोई स्वार्थ हीता ही नहीं। वह अपने हित की चिंता किए बिना सदा शिष्यों के कल्याण के लिए तत्पर रहता है। इसलिए सद्गुरु मिल जाए तो व्यक्ति को बिना संकोच के अपना जीवन उसके हाथ में सौंप देना चाहिए।

- ❖ सद्गुरु का जब जीवन में प्रवेश होता है तो बहुत उथल पुथल होती है और ऐसा स्वाभाविक है क्योंकि सद्गुरु शिष्य के कर्मों को नष्ट करता है। इस समय लग सकता है कि जीवन बहुत अनिश्चित सा हो गया है परंतु व्यक्ति में अगर साहस, धीरता, गंभीरता है तो वह सद्गुरु के कहे अनुसार अग्रसर होता रहता है तथा आखिर में स्वयं एहसास करता है कि सद्गुरु से उसे क्या प्राप्त हुआ, सद्गुरु ने उसके जीवन को कैसे निखारा!
- ❖ व्यक्ति जन्मों तक साधना और तपस्या करता रहे, आराधना और भक्ति करता रहे परंतु वह पूर्णता तभी प्राप्त कर पाता है जब सद्गुरु से वह मिले और वे उसका मार्ग दर्शन करें।
- ❖ सद्गुरु को शिष्य से किसी चीज की अपेक्षा नहीं होती, वह अगर शिष्यों से कुछ चाहता है तो श्रद्धा, विश्वास एवं समर्पण और बदले में शिष्य को प्रेम, स्नेह तथा आध्यात्मिक बल प्रदान करता है।
- ❖ सद्गुरु कहीं भी रहे, उसका ध्यान हमेशा शिष्यों की ओर ही लगा रहता है, जिस प्रकार मादा कछुआ दूर से ही मात्र अपनी दृष्टि से अंड़ों को सेती रहती है उसी प्रकार सद्गुरु दूर होते हुए भी शिष्यों को अपने प्रेम और ममत्व से आप्लावित करता रहता है।



विशाल में रंगल...
आधोरी की विद्युत माया

चान्दिका याकिणी साधना

अकस्मात् आधोरी की दृष्टि मेरे कंठ प्रदेश में झूलते
गुरु लॉकेट पर पड़ी। उसमें लगे चित्र को पहचानते ही
मानो कायापलट हो गया, उसके हात-भाव व चेहरे की
सारी कठोरता कोमलता के भाव में परिणत हो उठी। वज्र
की भाँति उसकी मजबूत हथेली मेरी असाहय गर्दन की
बजाय मेरे सिर पर टिक गयी। मैं इस अद्भुत परिवर्तन
को देख रहा था। शिशु की भाँति किलकारियां भरते हुए
वह मेरी कुशल क्षेम बार-बार पूछने लगा, परन्तु पूर्वगामी
संदर्भ के प्रभाव से अभी भी मेरे कंठ से स्वर निकल नहीं
पा रहे थे...

आधोरी ने प्रकट किये चान्दिका याकिणी साधना के

रहस्य

“जय बद्री विशाल”।

सामने से आते एक सौम्य साधु को देख मैंने श्रद्धापूर्वक
नमन किया।

“जय केदारनाथ”।

मधुर स्वीकृति का यह प्रतीक, स्निग्ध कोमलता के साथ
तपस्यी के मुख से इच्छित हुआ। यही अभिवादन, यही जयघोष
पुण्य हिमालय का सम्बल बन जाता है। इतना कहने की देर
नहीं, कि अनजान यात्रियों से भी आनंदीयता का सम्बन्ध
स्थापित हो जाता है। आंगनुक के गंतव्य स्थान का पता भी
लग जाता है और प्रणाम भी हो जाता है। अतीत काल में
चली आने वाली इसी परम्परा में लौहचुम्बक की भाँति मैं

खिंचा चला आया था। रास्ते में कहीं रुकना होता, तो किसी
भी दुकान की अटारी पर ठहर जाता, परंतु उसी की दुकान से
विमिन्न खाद्य वस्तुएं कथ करने की अनिवार्य शर्त होती,
आज्ञाकारी बालक की भाँति, जिनका पालन करने पर वे सहर्ष,
मुझे अपना अतिथि बना लेते।

उत्तराखण्ड के इसी दिव्य पथ पर चलकर पंच पांडवों ने
स्वगरीहण किया था। स्वयं भगवान शंकर के अवतार कहे
जाने वाले आद्य शंकराचार्य के पद्धिति भी इस मार्ग पड़ चुके
हैं। इस पथ के रजकण, पाषाण शिलाएं, वृक्ष और लताएं
द्वारा युग से ही सबके सुख-दुःख के वार्तालाप, आनंद,
क्लान्ति के निःश्वासों के साक्षी रहे हैं, इसी परम सौभाग्य को

समझते हुए, मैं मन ही मन आनन्दित भाव से जल्दी-जल्दी पग भर रहा था। विश्वम्भर श्री बद्रीनाथ धाम की यात्रा करने की मेरी पवित्र हृदयाकांक्षा अब पूरी होने को आ चुकी थी।

मंदिर प्रांगण में कदम रखते ही सारा शरीर रोमांचित हो उठा। सामने ही श्री बद्रीनाथ जी की दिव्य मंजुल मूर्ति श्यामल स्वरूप में बहुमूल्य वस्त्राभूषण एवं दिव्य मुकुट धारण किए शोभायमान हो रही थी। काले पाषाण के डस श्री विग्रह में भगवान पदमनाभ ध्यान मुद्रा में विराजित हैं। ललाट में हीरकखंड हैं, भाव विह्वल अवस्था में मेरे मुख से अनायास ही प्रभु के स्तुति शब्द निःसृत हो उठे-

शान्ताकारं भुजगशयनं पदमनाभं सुरेशं
विश्वाधारं जगन्सदृशं मेघवर्णं शुभांगम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्द्यान्नगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभव्यहरं सर्वतोके कनाथम् ॥१॥

सशङ्कचक्रं सकिरीटकुण्डलम्
सपीत वस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्।
सहावक्षः स्थल कौस्तुभश्रियं,
नमामि विष्णुं सिरसा चतुर्भुजम् ॥२॥

विष्णु सहस्रनाम का पाठ करते हुए ही भाव समाधि सी हो गई, कितने समय तक ध्यानस्थ रहा, इसका बोध नहीं। पुनः चैतन्य होने पर भव्य श्री विग्रह के समक्ष अंतर्निविदन करते हुए ऐसा लगा, मानों प्रभु मंद-मंद मुस्कराने हुए असीम करुणापूर्वक नयनों से आशीर्वाद प्रदान कर रहे हों। निर्विकार, नित्यानंद, परम ज्ञानस्वरूप श्री विष्णु को साष्टांग प्रणिपात कर मैं लौट चला। ईश्वरीय प्रेरणा के वशीभूत मेरे मन में अलकनंदा का दर्शन करते हुए केदारनाथ जाने की इच्छा थी।

पर्वतखण्ड से नीचे उतरकर मैंने पगड़ंडी का रास्ता चुना। केदारनाथ के लिए सीधी सड़क धूमकर जाती है, परंतु वहां से एक छोटा रास्ता भी है जो कि पहाड़ को पार करके जाता है। हालांकि इस मार्ग में कम पैदल चलना पड़ता है, फिर भी प्रत्येक के लिए यह सम्भव नहीं, क्योंकि इसकी चढ़ाई सीधी व दुर्गम है और पग-पग पर खतरों का सामना करना पड़ता है। मेरे मन में उस समय ही विचार कौंध गया, कि साधना क्षेत्र में यदि आगे बढ़ना है, तो हमेशा चुनौतीं पूर्ण रहों को ही स्वीकार कर कठिन जीवन जीने का अभ्यास करना चाहिए। इसीलिए मैं शीघ्र ही पगड़ंडी पर उतर कर प्रकृति के निर्मल दृश्यों का अनंद लेते हुए आगे बढ़ गया।

लगभग आधी दूरी पार करने पर 'इन्दस' दिखाई दिया। पर्वतों के मध्य स्थित लम्बे जलाशय का जल स्वच्छ दर्पण

इत्र तुल्य वैभव प्रदान करने वाली चन्द्रिका यक्षिणी

उफनता यौवन जौ समुद्र में उठते उवार की श्रांति बरजता है वह मादक सींचदर्य जौ रौम रौम को आंदोलित कर देता है वह मादक शीतलता भानी पूर्णिमा का चन्द्रमा रिला ही वह अद्भुत शक्ति जौ केवल चन्द्रिका यक्षिणी में ही संभव है

आपके लिये ये हैं तो यह सींचदर्य रस और शक्ति का संसार और अंडार...

की भाँति चमकीला है, इसी के चतुर्दिक घना जंगल है, जिसे देखते ही आनंद मिश्रित भय का संचार हो उठता है, क्योंकि कहीं-कहीं पर, तो सूर्य रथियां भी पृथ्वी का स्पर्श नहीं कर पातीं। आगामी विपदा से पूर्णतः अनजान मैं स्नान कर विश्राम हेतु सरोवर के तट पर बैठा ही था, कि एक पैशाचिक हंसी सुनायी पड़ी

तभी सामने घने अरण्य में से एक साधु प्रकट हुआ। साधु क्या, अघोरी ही लगा-लंबी भीमकाय काया, सिर पर उलझी जटायें, विशाल रक्षित नेत्र, व्याघ्र के समान बढ़े हुए नाग्वून। उसकी आँखों में एक विशेष चमक थी, जैसी कि हिंसक पशुओं में दिख पड़ती है। मैं अंदर ही अंदर कांप उठा - “न मालूम यह जंगली राक्षस कौन है?” सुना था, उधर के पहाड़ों में अभी भी कुछ आदिम जातियां इस प्रकार की हैं, जो सर्वथा नग्न रहती हैं और नरभक्षी हैं, किसी बाहरी मनुष्य को देखते ही वे उस पर हमला कर देते हैं।

झूमता हुआ वह अघोरी अत्यन्त करीब आ गया था। एक हाथ में छोटा सा चिमटा और दूसरे हाथ में लोहे की बनी कोई नुकीली वस्तु यम के वे दोनों ही प्रतीक साक्षात् मुझे ही लक्ष्य करके तेजी से निकट आते प्रतीत हुए। ऐसा भयकर व्यक्तित्व इससे पहले मैंने कभी देखा न था। यदि यह किसी मजबूत

पखेस उड़ने स्वाभाविक हैं, आंखों से कोथ की चिंगारियां निकल रही हैं - यह देखकर मेरे तन-मन में सिहरन दौड़ गयी।

‘राजा, जोगी, अग्न, जल इनकी उल्टी रीत’ न मालूम कब क्या कर बैठें, इनसे उलझना मुसीबत मोल लेना है, तुरन्त ही मैं दो कदम पीछे हटा था, कि वह कनफटा जोरों से अट्टहास कर उठा, ऐसा लगा जैसे बौने बांस का जंगल वायुवेग से खड़खड़ा गया हो, वह हंसी प्राणों को कंपाने वाली थी। मेरी मुंदती हुई आंखों के सामने एक बारगी से मेंग घर, मेरे पूर्व जीवन का दृश्य, मेरे स्वप्न सब तैरने लगे, न इधर आता न इस प्रकार की भयावह मृत्यु का ग्राम बनता, परन्तु अब तो अफसोस करने का भी कोई प्रयोजन नहीं।

अकस्मात् अघोरी की दृष्टि मेरे कंठ प्रदेश में झूलते गुरु लॉकिट पर पड़ी। उसमें लगे चित्र को पहचानते ही मानो कायापलट हो गया, उसके हाव-भाव व चेहरे की सारी कठोरता कोमलता के भाव में परिणत हो उठी। वज्र की भाँति उसकी मजबूत हथेली मेरी असहाय गर्दन की बजाय मेरे सिर पर टिक गयी। मैं इस अद्भुत परिवर्तन को देख रहा था। शिशु की भाँति किलकारियां भरते हुए वह मेरी कुशल क्षेम बार-बार पूछने लगा, परन्तु पूर्वगामी संदर्भ के प्रभाव से अभी भी मेरे कंठ से स्वर निकल नहीं पा रहे थे। अत्यन्त कठिनाई से मैंने भय का निवारण करते हुए, उसने अत्यन्त आत्मीयता के साथ हाथ पकड़कर अपने पास बिठा लिया और अपनी गूढ़ अन्तर्दृष्टि मुझ पर टिका दी।

... मढ़ होश अकने थो आतुर गहवी थाली आंखें, एक ही पल में थटाक्ष अक पुनः जकल थन जाने थी अद्वा लिए! जाके शकीक थी माद्धकता थो अनेक कंगां थे श्रृंगाक के ओौक उत्तोजण थनाती हुर्द थाली धनी कर्तिणी थी तकह थल खाती थेणी थे काथ लचण अक थढ़ती हुर्द ...

आप थी ओक तो थढ़ना चाह कही है यक्षिणी इक्ष साधना थे माध्यम के ...

हवा में उड़ता हुआ भोजन

मेरी आंखों से भूख प्रकट हो रही थी। अघोरी ने हंसते हुए कुछ अस्पष्ट गुनगुनाहट प्रारम्भ की जैसे कोई मंत्र पढ़ रहा हो ... तभी हवा में उड़ता हुआ एक काष्ठ खंड दिख पड़ा, जिसमें एक गठरी बंधी हुई थी। जैसे ही वह पास आया, अघोरी ने कुछ गलियां हवा में उछालीं और झपट कर ढंडे को पकड़ लिया। पोटली खोलकर देखा - उसमें स्वादिष्ट भोजन था, ऐसा लगा कि अभी-अभी किसी ने पकाकर भेजा हो। भोजन को शिलों पर रख उसने फिर किसी स्त्री पर धाराप्रवाह गालियों की वर्षा आरम्भ की, मानो वह कम भोजन पर नाराज हो। चीखते हुए उसने आदेश दिया - “इस्ये चार गुना लेकर आ, यहां जो तेरा दुलारा बैठा हुआ है, इसे कौन खिलायेगा?”

आज्ञालक सेवक के समान डंडा लौट चला। धनधोर जंगल में ऐसे राजसी भोजन को देखने में अचम्भित था। उस तरफ तो गेंहू की कृषि भी नहीं होती थी, फिर भी उसमें गर्म-गर्म गेंहू की रोटियां, कई प्रकार के साग थे और अनेक मिष्ठान भी। उसके अनुरोध पर मैंने वह अत्यन्त स्वादिष्ट भोजन ग्रहण करना आरम्भ किया। अघोरी की आंखों में उस समय ठीक वैसी ही करुणा व्याप्त थी, जैसी करुणा पुत्र को भोजन कराते समय मां की आंखों में होती है, जिसे मैं भयानक नरपिशाच समझ रहा था, उसके सीने में भी कोमल हृदय है, यह मैं स्पष्ट अनुभव करने लगा।

तभी वह लकड़ी का डंडा हवा में तैरता हुआ पुनः दिखाई पड़ा, इस बार उसकी पोटली काफी बड़ी थी, कदाचित पहले से चार-चार गुना अधिक भोज्य पदार्थ इस बार भेजा गया था। अघोरी ने झपट कर उस पोटली को खोला और बिना कुछ कहे-सुने खाने में जुट गया। कुछ ही क्षणों में उसने पूरा भोजन उदरस्थ कर लिया।

अघोरी की विलक्षण साधना

कौतूहल से भरी यह सारी रात मैंने उसके सान्निध्य में ही बिताई। अत्यन्त स्नेहमय व्यवहार करते हुए वह अघोरी मेरी जरूरत का सारा सामान उसी रीति से मंगा लेता, ताकि किसी भी प्रकार से मुझे असुविधा न हो। मेरा साधनात्मक रुझान देखकर अगले दिन प्रातः ही इस विलक्षण किया का रहस्य बताते हुए कहा - यह ‘चन्द्रिका यक्षिणी’ साधना का प्रत्यक्ष प्रभाव है, जिससे इस घोर जंगल में भी आनंद मंगल किया जा सकता है, अभी तुम इस स्तर पर नहीं हो, कि उस अपूर्व सौन्दर्यवती, यौवन से परिपूर्ण यक्षिणी से साक्षात् कर सको, अतः इस काष्ठ खंड के द्वारा भोजन मंगाना पड़ा।”

“यक्षिणियां देव वर्ग में गिनी जाती हैं। आनन्दप्रद, प्रचुर धनदायक और सर्वत्र अबाध गति से विचरण करने में समर्थ,, ‘चन्द्रिका यक्षिणी’ की साधना साधु या गृहस्थ दोनों ही कर सकते हैं। जहां यह जननी रूप में सिद्ध होने पर साधक को विदेश यात्रा या स्वादिष्ट भोजन की प्राप्ति कराती है, वहां प्रेयसी रूप में सिद्ध होने पर भोग और विलास के साथ-साथ उत्तेजक यौवन सम्पदा भी प्रदान कर जाती है।”

भले ही यह तांत्रोक्त साधना है, किन्तु अपने स्वरूप और प्रस्तुतिकरण में यह अत्यन्त ही सौम्य यक्षिणी है और जीवन पर्यन्त साथ रहती हुई सभी सुख व भोग प्रदान करने वाली है। कायाकल्प, दिप्-दिप् करता सौन्दर्य, अचूक वशीकरण सिद्धि, पौरुष, इच्छानुसार धन और मनोवांछित पूर्ति सिद्धि-चन्द्रिका यक्षिणी की प्रत्यक्ष अनुभूति।

यक्षिणी की तीव्र साधनात्मक शक्ति को आत्मसात् करने के लिए साधना करने से पूर्व ‘यक्षिणी दीक्षा’ प्राप्त करना श्रेष्ठ माना गया है, इससे साधना काल में किसी प्रकार की भयावह स्थिति या विघ्न बाधा साधक को विचलित नहीं कर पाते और प्रथम बार में ही यक्षिणी का नववधू की भाँति सलज्ज, कोमल स्वरूप का दर्शन भी संभव हो जाता है।

साधना विधान

यह साधना 14 अप्रैल 2010 वैशाखी अमावस्या के दिन या शुक्रवार या किसी भी अमावस्या को यह साधना सम्पन्न बार सकते हैं। रात्रिकालीन इस साधना में एकान्त अतिआवश्यक है, रात्रि दस बजे के पश्चात् लाल धोती व गुरु पीताम्बर धारण कर पूजा कक्ष में लाल आसन बिछाकर उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठें। सामने मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित ‘चन्द्रिका यक्षिणी यंत्र’ तथा ‘चन्द्रिका यक्षिणी माला’ स्थापित कर दें। तेल का दीपक प्रज्जवलित करें। सर्व प्रथम गुरु पूजन व गुरु मंत्र की एक माला जप कर पूर्ण सफलता के लिए गुरुदेव से प्रार्थना करें।

इसके बाद हाथ में अक्षत लेकर दसों दिशाओं में फेंकते हुए निम्न मंत्र के उच्चारण के साथ रक्षा विधान करें -

अपसर्यन्तु ये भूताः भूता भूमि संस्थिताः
ये भूताः विघ्न कर्तास्ते नश्यन्तु शिवाज्ञाया।
अपक्रमन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्
सर्वेषामविरोधेन पूजा कार्यं समारम्भे ॥

तत्पश्चात् ताम्रपात्र में स्थापित ‘चन्द्रिका यक्षिणी यंत्र’ का पूजन कुंकुम, अक्षत, पुष्प तथा धूप-अगरबत्ती से करें,

यक्षिणी साधना के द्वारा साधक को कुबेर साधना के लाभ स्वतः ही प्राप्त हो जाते हैं, क्योंकि वह तो कुबेर के वर्ग की है, जो अपने साधक को कुबेर की भाँति विविध प्रकार के द्रव्य, आभूषण और चमत्कारिक वस्त्रों का डेर लाकर दैनंदी में सुर्भर्ती होती है।

मनोवांछित रूप से यक्षिणी का चिन्तन करते हुए मन ही मन आह्वान करें।

आह्वान

आवाहयामि देवि त्वं सर्वशक्ति प्रदायिनी
सर्व मंगलरूपा त्वं सर्व कार्यं शुभंकरी
आवाहयामि स्थापयामि नमः

ॐ ह्रीं इदं स्त्रानं

ॐ ह्रीं एव धूपः

ॐ ह्रीं एव दीपं

ॐ ह्रीं इदं विलेपनं

ॐ ह्रीं इदं सोपकरणं नैवेद्यम्

इसके बाद इत्र के द्वारा स्वयं को सुगंधित बनाकर ‘यक्षिणी माला’ से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं चंद्रिके! अगच्छ इच्छितं साधय ॐ फट ॥

यदि बीच में किसी प्रकार की ध्वनि, पदचाप, वस्त्रों की सरसहाट या पायल की ध्वनि सुनाई दे, तो विचलित न हों, न सिर धुमाकर देखने का प्रयास करें। दो दिन तक नित्य यही क्रम अपनायें।

साधना समाप्त कर यंत्र तथा माला नदी में प्रवाहित कर दें।

सिद्ध होने के उपरान्त वह साधक की इच्छानुसार प्रत्यक्ष होती हैं और अप्रत्यक्ष रूप से साधक को हर प्रकार की सुविधा उपलब्ध कराती हुई प्रतिक्षण साथ रहती हैं।

शुक्राचार्य महान् ऋषि थे
जिन्होंने अमृत संजीवनी साधना सिद्ध की थी
देवगुरु बृहस्पति के पुत्र 'कच' भी उनके शिष्य बने
शुक्राचार्य प्रणीत

हेलत्व ग्रहणीष्ट

निष्पारण-साधना

ग्रहों का मानव जीवन पर प्रभाव पड़ता है लेकिन यह प्रभाव अच्छा भी हो सकता है और दुष्प्रभाव भी, यदि व्यक्ति के ग्रह अनुकूल हैं तो वह जो भी कार्य करता है वे निरन्तर सफल होते रहते हैं लेकिन प्रतिकूल ग्रह स्थिति में अथक प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं मिलती।

आखिर इस विपरीत ग्रह प्रभाव वाली स्थिति को कैसे समाप्त किया जाय। प्रस्तुत है ऋषि शुक्राचार्य द्वारा रचित 'हेलत्व साधना', जो प्रतिकूल से प्रतिकूल ग्रह को अनुकूल बना देती है।

यह तो सत्य है, कि ग्रहों का प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्धारण ग्रहों के आधार पर स्वतः हो है। यह बात महज अंधविश्वास से नहीं कही जा रही है, वरन् जाता है; यदि कूर ग्रह, शनि, राहु की प्रथानता हो, तो व्यक्ति वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परीक्षण किया जाय, तो यह प्रकट हो का स्वभाव भी तदनुरूप हो जाता है।

जाता है, कि मानव के जन्म लेते ही उस पर ग्रहों का प्रभाव पड़ता है, जिससे जीवन का प्रत्येक पक्ष संचालित होता है, चाहे वह प्रेम का सम्बन्ध हो, धन-सम्पत्ति हो, स्वास्थ्य, भाग्योदय, अथवा विवाह से सम्बन्धित हो।

यह तथ्य वैज्ञानिकों ने भी अनुभव किया है, कि प्रत्येक मानव शरीर की संरचना शरीर में निहित रासायनिक तत्वों पर निर्भर करती है। इन तत्वों का निर्धारण प्रत्येक शरीर में

मैंने देखा है, कि किसी भी व्यक्ति के जन्म के समय की कुण्डली को यदि सही प्रकार से बना दिया जाय, तो उस व्यक्ति का भविष्य अक्षरशः सही-सही बताया जा सकता है।

मानव जीवन के कुछ पक्षों को लेकर ज्योतिषीय दृष्टि से जो मैंने अनुभव किया है, उसे प्रस्तुत कर रहा हूँ, कि किस प्रकार से ये ग्रह प्रेम सम्बन्धों पर प्रभाव डालते हैं... प्रेम पर ही नहीं, धन सम्बन्धी कार्यों पर, स्वास्थ्य, भाग्योदय, विवाह भिन्न-भिन्न होता है और ये तत्व ही अपनी ग्राह्यता व लक्षण और प्रेयसी के विचार पर भी।

के अनुरूप विभिन्न ग्रहों की रश्मियों को ग्रहण करते हैं, फिर प्रेम के क्षेत्र में मैंने दो कुण्डलियों का विवरण किया, तो

देखा कि दोनों - स्त्री और पुरुष विवाहित थे, किन्तु एक-दूसरे के सम्पर्क में आकर इस तरह से प्रणय बद्ध हो गए थे, जैसे प्रकृति इनके मिलन की योजना पहले ही बना चुकी हो; दोनों ग्रहों के प्रभाव से ही एक-दूसरे के समीप आये और इस तरह से एक-दूसरे के निकटस्थ हो एक, जैसे वे एक ही हों। दोनों की कुण्डलियों का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ, कि दोनों का लग्नेश मंगल है और दोनों की दुर्धरा योग की उत्तम कुण्डलियां हैं और दोनों का ही गुरु नवमस्थ एवं उत्तम स्थिति का सूचक है। अतः ये दोनों जब भी एक-दूसरे के प्रभाव में आते, यदि ये अलग-अलग विवाहित होते, तो भी इनका सम्बन्ध अपने जीवनसाथी से अलग होकर परस्पर स्थापित होता।

यदि पुरुष की कुण्डली में आठवें, नवें भाव में चन्द्र तथा बुध का परिवर्तन हो तथा स्त्री की कुण्डली में पांचवें, सातवें भावों में शुक्र तथा सूर्य का परिवर्तन विचारणीय है, जो पुरुष को अष्टमेश, नवमेश के विपर्यय के कारण तथा स्त्री का सप्तमेश-शुक्र का पंचमेश नीच राशिस्थ सूर्य से विपर्यय होने के कारण अधम सम्बन्धों, भाग्य व जीवनसाथी से सम्बन्ध में परिलक्षित होता है। इनका आपसी सम्बन्ध सामजिक दृष्टि से औचित्यहीन है, जो इसी विपर्यय के कारण हुआ है।

यदि स्त्री की कुण्डली में सप्तम भाव का नीच सूर्य की राशि में शत्रु भावी शनि-शुक्र की युति तथा सप्तम में केतु की स्थिति अपनी उपलब्धियों को केवल अपने गृहस्थ में नियोजित करती है। यदि उसका किसी के साथ प्रेम सम्बन्ध स्थापित हुआ,



तो भी वह उस सम्बन्ध को मात्र अपने हितों के लिए ही बनायेगी। यही स्थिति काफी अंश तक सप्तम भाव में वृष-परिलक्षित होती है, इस प्रकार के ग्रहों के प्रभाव से युक्त स्त्री केतु के सन्दर्भ में होती है, ऐसे पुरुष भी अपनी पत्नी से रहस्य बना कर प्रेम सम्बन्ध स्थापित करते हैं। ऐसे ग्रह योग वाली प्रेयसी हमेशा ही अपने स्वार्थ के लिए ही चिन्तित होगी।

इसी प्रकार से व्यक्ति के धन सम्बन्धी कार्यों पर भी ग्रह का प्रभाव पड़ता है। ज्योतिष के प्राचीन ग्रंथों में बृहस्पति को धन का कारक माना गया है, वैसे ही बृहस्पति को सर्वाधिक शुभ ग्रह माना गया है। पाराशर, वराहमिहिर, कालीदास, व्यंकटेश शर्मा आदि सभी ने बृहस्पति को धनकारक ग्रह माना है।

जबकि वास्तविकता में ऐसा नहीं है, यदि बृहस्पति उच्चभाव का है, तो वह उसका खोया हुआ धन या राज्य लौटाता है; युधिष्ठिर का गुरु उच्चभाव का था, अतः उसे उसका खोया हुआ राज्य ही प्राप्त हुआ, उसे अन्य किसी विशेष लाभ की प्राप्ति नहीं हुई।

प्रायः यह देखने में आया है, कि जिन पुरुषों की स्त्रियां

स्वस्थ नहीं रहतीं या जिन्हें पत्नी से सुख प्राप्ति में बाधायें कर सकते हैं -

उपस्थित होती हैं, उनकी कुण्डली में बृहस्पति की सातवीं दृष्टि शुभ नहीं रहती है तथा उनकी पनियां रोगशस्त्र रहती हैं और उनके दाम्पत्य जीवन में बाधायें आती रहती हैं।

युवावस्था में जिन व्यक्तियों को आर्थिक संकट व्याप रहता है या उनका व्यवसाय स्थिर नहीं रहता अथवा वह समस्त भोग नहीं पाते हैं या निरर्थक ध्रुमण की स्थिति बनी रहती है, उन पर अक्सर शनि की साढ़े साती का प्रभाव रहता है। ऐसे व्यक्तियों के भाग्य का भी प्रभाव पड़ता है तथा वे जिन कार्यों में हाथ डालते हैं, वह पूर्णतः सफल नहीं हो पाता है।

इसके विपरीत जिनका भाग्योदय आश्चर्यजनक ढंग से होता है, उनका शनि ग्रह अत्यधिक उच्च, बलवान् तथा मित्र ग्रही होता है, तो शनि की साढ़े साती होने पर भी विशेष प्रभाव पड़ता है। इसके विपरीत साढ़े साती होने पर यदि शनि निर्बल है, तो व्यक्ति अत्यधिक कष्टों से पीड़ित रहता है।

यदि व्यक्ति आर्थिक संकट का सामना करता है, उसकी पारिवारिक स्थिति कलहपूर्ण हो, तो उसके ऊपर शनि का कुप्रभाव ही देखने में आया है। ऐसे में व्यक्ति की वाणी असंयत तथा मानहानि की आशंका निरन्तर बनी रहती है।

वैवाहिक स्थितियों में ग्रहों का प्रभाव उपस्थित रहता है। जिनके हाथों में विवाह योग तो स्पष्ट होता है, परन्तु फिर भी विवाह सम्पन्न नहीं होता, तो उनके ग्रहों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है, कि उनकी कुण्डली में शुक्र ग्रह पर बाधक योग बना हुआ देखा गया है।

ग्रह व्यक्ति के अनुकूल न हों, तो व्यक्ति के बने-बनाये कार्यों को बिगाड़ सकते हैं; यदि वह सम्पन्न है, तो उसे खाक में मिला सकते हैं, एक सभ्य व्यक्ति पर यदि उसके ग्रहों का विपरीत प्रभाव पड़ने लगे, तो वह दुराचारी, कृतघ्न तक बन सकता है। ग्रह दशा विपरीत हो, तो उसके समक्ष ऐसी कठिनाइयां उत्पन्न होने लग जाती हैं, जिनका कोई उपयुक्त कारण दिखाई नहीं पड़ता है, फिर भी वे दिनों-दिन बढ़ती जाती हैं।

ग्रहों की स्थितियां यदि व्यक्ति पर कुप्रभाव उपस्थित कर रही हैं, तो 'शुक्राचार्य' ने इनके दुष्प्रभावों को समाप्त करने के विषय में एक अद्वितीय प्रयोग की व्याख्या की है, जिसके माध्यम से इन ग्रहों के प्रभाव को अनुकूल बनाया जा सकता है। ग्रहों के प्रभाव को शांत करने और इन्हीं ग्रहों के प्रभाव को अनुकूल बनाने के लिए शुक्राचार्य द्वारा निर्मित 'हेलत्व प्रयोग' है, जिसे सम्पन्न कर आप भी इसका प्रभाव हाथों-हाथ अनुभव

साधना विधान

इस साधना में आवश्यक सामग्री - 'हेलत्व यंत्र' और 'हेलत्व माला' है।

यह एक दिवसीय प्रयोग है। जिसे शुक्रवार या किसी भी मास की शुक्र पक्ष की तृतीया को ही करें। इसके अतिरिक्त सर्वार्थ सिद्धियोग के दिन भी इस साधना को कर सकते हैं।

साधक पीले वस्त्र धारण करें।

लाल रंग का वस्त्र बाजोट पर बिछाकर उस पर हेलत्व यंत्र स्थापित करें तथा यंत्र का पूजन करें -

नवग्रहस्मरण

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी,
भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः
कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्॥

हेलत्व माला से निम्न मंत्र की नौ माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ॐ ह स क ल रक्षायै क्षं फट्॥

प्रार्थना

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी

भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।

गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः

सर्वे ग्रहाः शान्तिकर भवन्तु॥

सूर्यः शौर्यमधेन्दुरुच्चपदवीं सन्मंगलं मंगलः

सद्बुद्धिं च बुधो गुरुश्च गुरुतां शुक्रः सुखं शं शनिः।

राहुबाहुबलं करोतु सततं केतुः करोत्कूर्तिं

नित्यं प्रीतिकर भवन्तु मम ते सर्वेऽनुकूला ग्रहः॥

निवेदन और नमस्कार

अनव्या पूजया सूर्यादि लवग्रहाः प्रीतिकर भवन्तु न मम॥

प्रयोग समाप्ति के पश्चात् यंत्र, माला तथा यंत्र पर चढ़ाये हुए अक्षत व पुष्प को बाजोट पर बिछे कपड़े में बांधकर नदी में प्रवाहित कर दें।

नवग्रह शांति का अद्भुत प्रयोग प्रत्येक साधक के लिये उपयोगी हैं क्योंकि हम जीवन में कई बार विपरीत स्थितियां पाते हैं और उन्हें में अवरोध आता है गुरु शुक्राचार्य द्वारा प्रणीत यह साधना मानव जाति के लिए वरदान स्वरूप है।

साधना सामग्री - 300/-

सुखी गृहस्थ जीवन का आधार क्या है?

व्यापार क्या है - साधा फैरै?

गृहस्थ जीवन क्षम्भ व्युह क्या है

यह क्या जीवन का आवश्यक साधा है



प्रेम



व्यवहारिकता

पूर्ण विरचास

आपसी सामंजस्य

मधुरता

त्याग

समर्पण

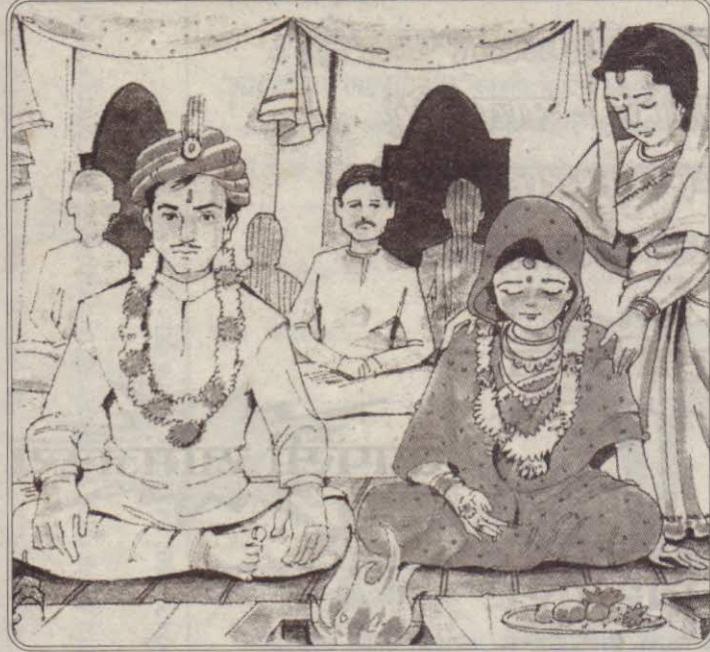
इन सात तत्वों को गृहस्थ जीवन में लाइए
सप्तपदी के सात साधनात्मक सूत्र

दुनिया में छः अरब लोग हैं उसमें तीन अरब पुरुष और तीन अरब नारी हैं, उन तीन अरब में से एक का चुनाव ईश्वर ने आपके लिए किया है, इसीलिए कहा जाता है 'राम मिलाए जोड़ी' तो किर आपके वैवाहिक गृहस्थ जीवन में पूर्ण सुख और आनन्द क्यों नहीं है? आपने गृहस्थ जीवन के आधारभूत सात सूत्रों का पालन नहीं किया है इसीलिए कड़वाहट आ जाती है। प्रत्येक सूत्र को विवेचन सहित बार-बार पढ़िये और इन सूत्रों को समझकर अपने जीवन में उतारें और दोनों साधना करें -

इस समाज में विवाह जीवन का एक आवश्यक अंग माना गया है, जिसमें कुछ हंसी-ठिठोली है, तो कहीं गंभीरता है, कहीं मान-मनुहार है और इन सबके साथ है समर्पण, एक दूसरे के प्रति अगाध विश्वास। व्यक्ति के जीवन में यह सब आरम्भ होता है विवाह के सात फेरों के बाद, जो न सिर्फ सात फेरे होते हैं, अपितु सात वचन होते हैं जिन्हें पूरी उम्र भर निभाने की बात होती है। ये फेरे विवाह के समय अधिकतर जातियों में लिए जाते हैं। आखिर इन सात फेरों का रहस्य दूँड़ने के लिए अन्यत्र कहीं और नहीं जाना पड़ता है। विवाह क्या है, क्यों सिर्फ सात ही फेरे लिए जाते हैं?

प्रत्येक फेरे का अपना अलग महत्व होता है, उसका अपना अलग दायित्व होता है। प्रत्येक फेरा जीवन के विविध आयामों को लिए होता है, प्रत्येक फेरे में भविष्य के प्रति कर्तव्य तथा पति-पत्नी के दायित्वों के विषय में बताया गया है, वैवाहिक जीवन की मर्यादा, उसकी उच्चता के विषय में बताया गया है।

विवाह अत्यन्त पवित्र बंधन है, जिसका यदि पूर्णता के साथ निर्वाह पति-पत्नी करते हैं, तो उन्हें जीवन का आनन्द दूँड़ने के लिए अन्यत्र कहीं और नहीं जाना पड़ता है। विवाह के पश्चात वे अलग-अलग व्यक्तित्व न रहकर एक ही बन



जाते हैं, क्योंकि वे एक-दूसरे से मानसिक रूप से, भावनाओं से जुड़े हुए, एक दूसरे के सुख-दुःख में भागीदार होते हैं, वैवाहिक जीवन का मूल सूत्र भी यही है।

प्रायः देखा जाता है, कि विवाह के कुछ महीनों बाद तक तो स्थिति ठीक रहती है, खूब प्रेम प्रदर्शन होता है, लेकिन यह आपसी आकर्षण उस वक्त समाप्त होने लग जाता है, जब उनकी कमियां सामने आने लगती हैं, तब आपस में सामज्जस्य की कमी होने लगती है, आपसी विश्वास ढगमगाने लगता है।

फलतः वे अपनी कमियों को स्वीकार नहीं करके सामने वाले को नीचा दिखाने के लिए प्रयत्नशील होने लगते हैं।

कोई भी स्त्री या पुरुष सर्वगुण सम्पन्न नहीं होता है, फिर भी कोई दूसरे की कमियों को स्वीकार नहीं कर पाता। स्वयं तो आगे बढ़ कर कुछ नहीं करता, लेकिन सामने वाले से अपेक्षा रखने लगता है, कि वह उसके प्रति उसी प्रकार से प्रेम युक्त हो, जैसे अब तक था। फिर दोनों अपने कर्तव्यों को भूलकर एक-दूसरे के कर्तव्यों की याद दिलाने लगते हैं।

...परन्तु उनकी समस्या का समाधान नहीं होता, क्योंकि वे अपने-अपने वचनों को, जो उन्होंने फेरों के समय एक दूसरे के प्रति लिए थे, भूल जाते हैं। उनकी यही भूल उनके जीवन की प्रमुख पारिवारिक समस्याओं के रूप में उभरने लगती है।

फिर उनमें झगड़े बढ़ जाते हैं, एक दूसरे पर हावी होने की भावना विकसित होने लगती है, एक दूसरे की बातें सुनना तक नागवार होने लगता है, और भी न जाने कितनी ऐसी परिस्थितियां आ जाती हैं, जिनमें व्यक्ति आपस में इतने अधिक

उलझ जाते हैं, कि एक दूसरे के विषय में मर्यादाओं की सीमा का भी उल्लंघन कर जाते हैं।

वर्तमान समय में असफल वैवाहिक जीवन के विषय में लोगों की उदासीनता ही प्रमुख कारण बन रही है परिवार के बिखराव की। जिन लोगों ने विवाह के पवित्र बंधन को मजाक बना लिया है, यदि वे थोड़े धैर्य से काम लें, तो उनका पल-पल क्षीण होता हुआ सम्बन्ध स्थिर हो सकता है। यदि पति-पत्नी उम्र भर विवाह के समय लिए सात फेरों को याद रखें, तो वे एक-दूसरे की मर्यादा का ध्यान रखेंगे ही, एक-दूसरे के प्रति विश्वास बनायेंगे ही। जब वे अपने कर्तव्यों का निर्वाह भली प्रकार से करेंगे, तो फिर समस्या कोई हो ही नहीं सकती।

आपने सात फेरे ले लिए हैं या लेने की तैयारी में हैं, तो आप सात फेरों पर एक-दूसरे को वचनबद्ध करने के साथ ही साथ स्वयं को भी वचनबद्ध करें, फिर तो आप स्वयं ही अनुभव करेंगे, कि आपके परिवार की अनेक विकट स्थितियां जो गंभीर रूप धारण कर सकती हैं, आपके आपसी सहयोग से, वैचारिक मतैक्य से स्वतः समाप्त हो जायेंगी।

यहां प्रस्तुत हैं साधनात्मक वृष्टिकोण से कुछ 'वचन', जिनसे आप दोनों स्वयं को वचनबद्ध कर लें और सुखी वैवाहिक जीवन का सुगठित निर्माण कार्य करें -

पहला फेरा - 'प्रेम'

पति-पत्नी का सम्बन्ध भावनात्मक होता है, उनमें लड़ाई-झगड़े होते ही रहते हैं, पर आप अपने मन में गांठ मत बांधिये। बातचीत अगर आप ही प्रारम्भ कर देंगे, तो ज्यादा उचित रहेगा। प्रेम ही वह प्रथम फेरा है, जिसका पालन आपको पूर्ण रूप से करना पड़ेगा और यदि आप ईमानदारी के साथ इसे अपने जीवन में शामिल कर लेंगे, तो अवश्य ही अपने आपसी तनावों और गलतफहमियों को समाप्त करने में सफल होंगे।

जब भी आपके मध्य लड़ाई-झगड़ा हो, तो एक-दूसरे के लिए समय निकाल कर बातचीत करिये। यदि आपके द्वारा बातचीत करने पर भी माहौल सामान्य नहीं हो रहा हो या आये दिन इस प्रकार की घटना घटती रहती हो, तो निम्न प्रयोग को अपने जीवन में उतारें, जिससे आपस में प्रेम बढ़े-

- ◆ 'सद्योजात गुटिका' को सोमवार के दिन सफेद वस्त्र पर स्थापित करें।
- ◆ स्वयं भी सफेद वस्त्र धारण करें। उसके समक्ष नित्य 11 बार निम्न मंत्र का जप करें।

मंत्र

॥ॐ ऐं हर्षी श्रीं सद्योजाताय उ॒ँ नमः ॥

- यह प्रयोग सात दिन तक करें। प्रयोग समाप्ति के अगले दिन गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 90/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

दूसरा केरा - 'व्यवहारिकता'

अगर आप पत्नी हैं और अनेक गुणों से युक्त हैं, लेकिन मन में पति के ऊपर शासन करने की भावना रखती हैं, तो आपके समस्त गुण, अवगुण दिखाई देने लगेंगे। पति भी अपने समान ही आपसे भावनाओं का सहयोग चाहता है, प्रत्येक बात में एहसास दिलाना, कि मैं अत्यन्त गुणी हूं, व्यवहार कुशल हूं, चतुर हूं, उसके बाद आप उनसे कितना भी प्यार करें, फिर भी आप उन्हें स्वयं की ओर आकर्षित नहीं कर सकेंगी।

आप भले ही अन्य लोगों की दृष्टि में अत्यन्त प्रिय रूपवती हों, लेकिन पति आपको किसी तानाशाह से कम नहीं समझेगा और धीरे-धीरे वह स्वयं के चारों ओर एक घेरा बना लेगा, जिसमें आपका भी प्रवेश वर्जित हो जायेगा।

अतः आपको चाहिये, कि तानाशाही की अपेक्षा मित्रवत् व्यवहार करें, फिर देखिये, आपके 'वो' भी किस प्रकार से सारी दुनिया से अलग हो, आपके सच्चे मित्र बन जायेंगे। यह बात सिर्फ पत्नी के लिए ही नहीं है, अपितु पति को भी समझना चाहिये, कि वह हिटलर की अपेक्षा मित्र बना रहे, आपकी मित्रता आपको अनेक प्रकार की समस्याओं का समाधान प्रदान कर सकती है।

फिर भी आपके द्वारा समझाने पर भी आपकी पत्नी समझ नहीं रही है, तो आप यह प्रयोग सम्पन्न करें।

- 'गृहस्थ सुख प्राप्ति गुटिका' को बुधवार के दिन पीले रंग के वस्त्र पर, कुंकुम से निम्न मंत्र लिख कर, गुटिका स्थापित करें।
- गुटिका के समक्ष सात दिन तक नित्य निम्न मंत्र का 9 बार जप करें -

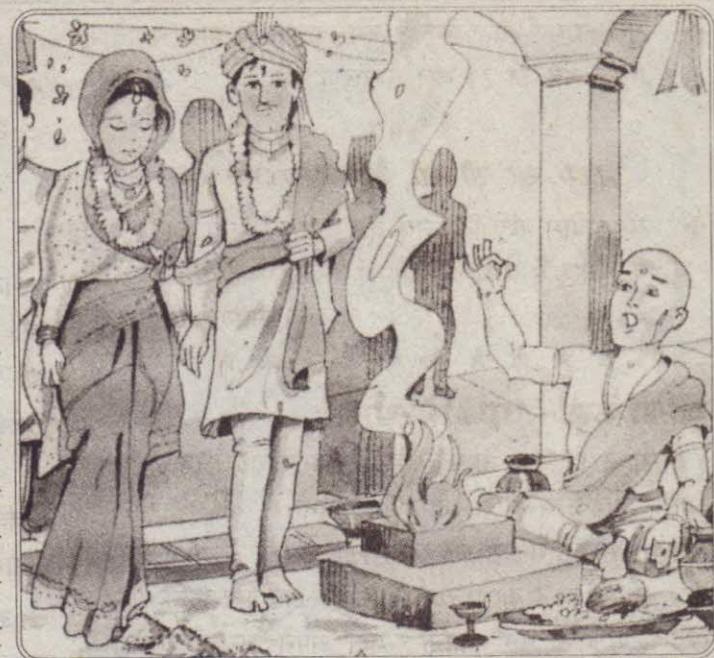
मंत्र

॥ॐ ब्रां ब्रीं ब्रूं उ॒ँ फट् स्वहा॥

प्रयोग समाप्ति के पश्चात् गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 96/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★



तृतीय केरा - 'आपसी सामञ्जस्य'

साधारणतया आपसी लड़ाई-झगड़ों के बाद पति-पत्नी आपस में मौन धारण कर लेते हैं। पहले यह मौन कुछ समय का होता है, लेकिन धीरे-धीरे जब मौन लम्बे समय तक रहने लगे, तो पति-पत्नी के मध्य वैचारिक सम्बन्धों में इतनी बड़ी खाई बनने लगती है, कि समय भी उसे समाप्त नहीं कर पाता। अतः जब ऐसी स्थिति दिखाई दे, तो मौन धारण करने की अपेक्षा आपस में हास-परिहास कर वातावरण को अनुकूल बनायें।

ऐसा करने से पति-पत्नी को भावनात्मक रूप से एक-दूसरे का बल मिलता है और आपस में सहयोग की भावना बरकरार रहने लगती है, साथ ही आपकी इस मौन अवस्था का तीसरा व्यक्ति लाभ नहीं उठा सकेगा, अन्यथा परस्पर की इस उदासीनता से पति-पत्नी के मध्य तृतीय व्यक्ति को प्रवेश का अवसर मिलेगा... और फिर पूरा का पूरा परिवारिक जीवन ही विच्छिन्न होने की स्थिति बन जायेगी। आपसी सामञ्जस्यता स्थापित करना कठिन नहीं है यदि पति-पत्नी आपस में समझदारी से कार्य करें लेकिन किसी एक ने प्रयास किया सहज होने का, तो दूसरे व्यक्ति की नासमझी से यह सहज होने वाली क्रिया दुष्कर हो जाती है।

फिर भी आप चाहें, तो इस प्रयोग के माध्यम से इसे सहज बना सकते हैं -

- 'सौमनस्य गुटिका' को किसी सफेद वस्त्र पर शुक्रवार के दिन स्थापित करें।

- ❖ गुटिका पर लाल रंग से रंगे चावल के दाने चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का 21 बार उच्चारण करें -

मंत्र

॥३५ साँ सर्हि सर्हि सौमनस्यं भव ॐ ॥

- ❖ यह प्रयोग पांच दिन तक करें। पांच दिन पश्चात् गुटिका को वस्त्र में बांध कर पीपल के पेड़ में बांध दें।

साधना सामग्री - 90/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

चौथा केरा - 'पूर्ण विश्वास'

ऐसा न हो, कि आपके झगड़े का फायदा उठाकर अन्य व्यक्ति आपके मध्य गलतफहमियां बना दें, क्योंकि यदि एक बार भी आपके मन में संदेह का बीज उत्पन्न हो गया, तो आप किर सामने वाले की प्रत्येक गतिविधि को संदेह की दृष्टि से देखेंगे, भले ही वह आपके समक्ष अपने वास्तविक प्रेम का प्रदर्शन कर रहा हो, लेकिन आप उस प्रेम का अहसास नहीं कर पायेंगे, अपितु और भी अधिक संशयग्रस्त हो जायेंगे। अतः एक दूसरे के प्रति किसी भी प्रकार की धारणा बनाने से पहले यह अवश्य देख लें, कि जो आपके मन में संदेह उत्पन्न कर रहा है उसका कोई स्वार्थ तो नहीं। अतः ऐसी धारणाएं अपने मन में से निकाल कर गृहस्थ जीवन को अपने अनुकूल बनावें।

पति-पत्नी के सम्बन्धों की नींव पूर्ण विश्वास पर ही तो आधारित होती है। यदि इस नींव की एक ईंट भी खिसक गयी, तो आपका वैवाहिक जीवन डगमगाने लगेगा।

- ❖ अपने मध्य विश्वास स्थापित करने के लिए 'अग्नार्क गुटिका' को ताम्रपात्र में कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर

एक हृदय चाहता है कि वह

दूसरे हृदय से सम्पर्क स्थापित करे,
आपस में दोनों का प्यार हो। दोनों हृदय
एक मधुर कल्पना से ओत-प्रोत हों और
जब दोनों हृदय एक सूत्र में बंध जाते हों,
तब उसे समाज विवाह का नाम देता है।

वस्तुतः मानव जीवन की पूर्णता तभी कही जाती है, जबकि उसका अहर्निः भी सुन्दर हो,
समझदार हो, प्रेम की भावना से भरा हुआ
हो तथा दोनों के हृदय एक दूसरे में मिल
जाने की क्षमता रखते हों।

रविवार के दिन स्थापित करें।

- ❖ गुटिका के समक्ष निम्न मंत्र का 3 दिन तक नित्य 18 बार जप करें -

मंत्र

॥३५ हर्हि श्रीं क्रीं ॐ शं ॥

अगले दिन गुटिका को किसी वृक्ष की जड़ में दबा दें।

साधना सामग्री - 105/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

पांचवां केरा - 'मधुरता'

आप कितने ही व्यस्त हों, पर कुछ समय पत्नी के साथ अवश्य बिताइये, क्योंकि यह आपके गृहस्थ जीवन को मधुर बनाने की कुज्जी है।

अत्यधिक व्यस्तता के बाद भी पत्नी का पूरा दिन इसी इंतजार में 'कट्टा' है, कि कुछ क्षण आपके साथ मधुरता से बीतेंगे; लेकिन जब उसे ये क्षण नहीं मिलते, तो उसका दुःख कभी झुँझलाहट के रूप में, कभी गुस्से के रूप में, तो कभी चिड़चिड़ाहट के रूप में निकलता है। अतः पति को चाहिये व्यापार या नौकरी के व्यस्ततम् क्षणों में से कुछ मधुर क्षण पत्नी के साथ गुजार ले। ऐसे में पति भी अपने कार्य के तनाव से बाहर निकल आता है और पुनः स्फूर्तिवान बन कर उन तनावों से जूझने के लिए प्रयासरत हो जाता है।

- ❖ यदि फिर भी आपको मधुरता की कुज्जी नहीं मिल पा रही है, तो शुक्रवार के दिन 'माधुर्य गुटिका' पर यदि साधिका हो, तो पति का नाम और यदि साधक हो, तो पत्नी का नाम लिख कर उस पर जल तथा दूध मिला कर 21 बार मंत्र जप करते हुए चढ़ायें -

मंत्र

॥३५ श्री एं श्रीं माधुर्यं श्री एं श्रीं ॐ ॥

- ❖ यह प्रयोग 7 दिन तक सम्पन्न करें। 7 दिन पश्चात् गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 100/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

छठा केरा - 'त्याग'

वर्तमान युग में पत्नी न सिर्फ खाना पकाने या बच्चा पैदा करने के लिए होती है बल्कि पति व्यावहारिक रूप से भी उससे सहयोग चाहता है। वह चाहता है, कि वह उसकी सहयोगिनी बने, न कि सिर्फ घर के कार्यों में ही उलझी रहे।

कुछ स्त्रियों की आदत होती है, कि वे अपने पति को दुनिया

का सबसे बेकार इंसान समझती हैं। पति उनके लिए कुछ भी करे, उनके मुंह से हमेशा ताने ही निकलते हैं। उन्हें अपने पति की भावनाओं का आदर करने के स्थान पर उनको फटकारना, उपहास का पात्र बनाना ही अच्छा लगता है। ऐसा व्यवहार करके वे स्वयं को अत्यन्त वीर समझती हैं। फिर ऐसी पत्नी के साथ पति किस प्रकार से सहयोग पूर्वक चल सकेगा?

अतः पत्नी को चाहिये, कि वह पति की इच्छाओं व भावनाओं का आदर करे, उसके प्रति सहयोग की भावना स्थापित करे जिससे परिवार में कलह का वातावरण न बन कर सहयोग का वातावरण निर्मित हो सके।

त्याग की भावना को बढ़ाने के लिए पति या पत्नी दोनों इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकते हैं -

- ◆ 'कर्लीं यंत्र' पर पूर्णिमा के दिन केसर से अपना तथा अपनी पत्नी का नाम लिखें
- ◆ यंत्र के समक्ष 11 दिन तक निम्न मंत्र का 7 बार उच्चारण करें -

मंत्र

॥ॐ क्रीं क्रीं कर्लीं कर्लीं उ॒ँ फट्॥

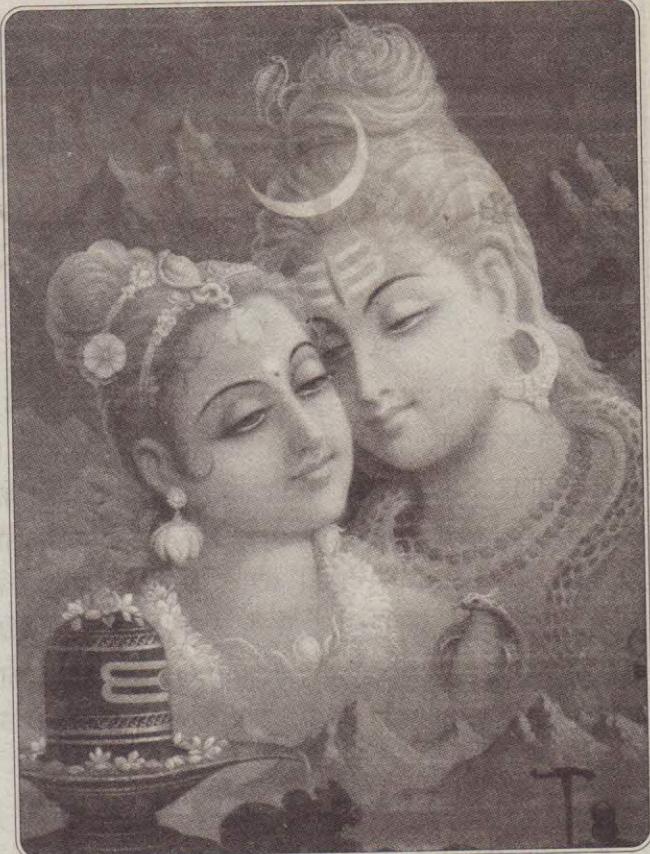
- ◆ अगले दिन गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।
साधना सामग्री - 120/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

सातवां फेरा - 'समर्पण'

ज्यादातर स्त्रियों में आदत होती है, कि वे अपनी तथा अपने पति के मध्य छोटी-छोटी बातों को भी अपने माता-पिता, भाई, बहन या अपनी बहुओं और बेटियों से कहती हैं। यह कार्य ऐसा होता है, जो आपको हास्य का विषय बना देता है। आप एक समझदार पति-पत्नी की तरह आपस के झगड़ों को बहुओं तथा बेटियों से न कहें, जिसकी वजह से तनाव का आरम्भ हुआ है। आप अपने परिवार में सम्मानजनक व्यक्तित्व हैं, अपने झगड़ों को चौराहे पर लाना अपने सम्मान की क्षति करना ही है। यदि आप सम्मान चाहते हैं, तो अपने झगड़ों को अपने मध्य ही सुलझा लीजिये, जिससे आपका सम्मान बना रहे तथा परिवार के अन्य सदस्यों के मन में आपका सम्मान भी स्थिर रहे। इस प्रकार से आपस में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना ही बलवती होती है।

- ◆ यदि फिर भी आप सफल नहीं हो पा रहे हैं, तो समर्पण में स्थिरता तथा आपस में समर्पण की भावना को सुदृढ़ बनाने के लिए 'सुखदा' को नीले रंग के वस्त्र में बांध इन पृष्ठों पर, सिर्फ आप दोनों के लिए।



कर किसी भी शुक्रवार से अगले शुक्रवार तक नित्य 'सुखदा' को हाथ में लेकर निम्न मंत्र का 21 बार जप कर गुटिका को यथा स्थान रख दें -

मंत्र

॥ॐ सं समर्पणाय सिद्धये उ॒ँ फट्॥

- ◆ प्रयोग समाप्ति पर गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।
साधना सामग्री - 100/-

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

...तो ये हैं व्यक्ति के जीवन में विवाह के सात फेरे, जिनका पूर्णतया पालन करने से व्यक्ति के गृहस्थ जीवन में तनाव नहीं उत्पन्न होगा और श्रेष्ठ गृहस्थ जीवन के लिए यदि व्यक्ति इन प्रयोगों को भी सम्पन्न कर लें, तो फिर ये भी सभी सूत्र स्वाभाविक रूप से उनके मध्य में पालन होने लगेंगे। उनके मध्य का तनाव, कंडवाहट, खिंचाव का वातावरण समाप्त होकर मधुरता एवं उल्लास का वातावरण निर्मित होगा। उत्तम गृहस्थ वही होता है जहां पति-पत्नी आपस में सहयोग पूर्ण व्यवहार कर आने वाली प्रत्येक समस्या से छुटकारा पा लेते हैं। ये प्रयोग गृहस्थ जीवन में मुस्कुराहटें भरने के लिए ही तो यहां प्रस्तुत किये गए हैं

ब्रह्मांकी वाणी

मैष -

इस माह संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त हो सकते हैं, उनको लेकर चली आ रही समस्याओं का निराकरण होगा। माता-पिता के मध्य सम्बन्ध मधुर होंगे। माता-पिता के स्वास्थ्य एवं रिश्तों में कड़वाहट का समाधान होगा। आपके नौकरी में आपको उलझने एवं असफलताएं प्राप्त हो सकती हैं। परिवार एवं मित्रों के सहयोग से आप इन परिस्थितियों को पार कर लेंगे। आप 'विनायक गणपति साधना' (जनवरी 2010) करें। शुभ तिथियां - 3, 9, 13, 15, 24 हैं।

वृष -

इस माह का फल आपके लिये मिला-जुला ही रहेगा। आप द्वारा किये गये प्रयत्नों एवं प्रयासों की अपेक्षा सफलता एवं उपलब्धियों का अनुपात कम ही रहेगा परन्तु इसका तात्पर्य ऐसा बिल्कुल भी नहीं है कि आप प्रयास ही नहीं करें। अपने प्रयासों के साथ ही साथ, गुरु एवं इष्ट का ध्यान भी नित्य प्रति करते रहें। अपने विरोधियों एवं शत्रुओं से सावधान रहें, प्रेम-प्रसंगों से स्वयं को दूर ही रखना आपके लिये सकता है। अपने विरोधियों एवं शत्रुओं से सावधान रहें। आप 'त्रिपुर भैरवी साधना' (जनवरी 2010) करें। शुभ तिथियां - 2, 6, 16, 17, 25 हैं।

मिथुन -

इस माह आपके आय की अपेक्षा, खर्च में वृद्धि हो सकती है। आपके लिये श्रेष्ठ होगा कि आप वित्तीय मामलों में सन्तुलन बनाये रखें। पुराने मित्रों एवं शुभचिन्तकों से आपकी मूलाकात होगी, जो कि आपके भविष्य की योजनाओं में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। अविवाहित युवक-युवतियों के विवाह के योग बन रहे हैं, आपको अनुकूल जीवन साथी प्राप्त हो सकते हैं। माता-पिता या बुजुर्ग रिश्तेदारों के स्वास्थ्य को लेकर चिन्तित रहना पड़ सकता है। प्रेम-प्रसंगों में आप आगे बढ़ सकते हैं। आप 'चण्डोग शूलपाणि - भैरव साधना' (फरवरी 2010) करें। शुभ तिथियां - 1, 5, 14, 21, 24 हैं।

कर्क -

यह माह आपके कार्यक्षेत्र में विशेष उपलब्धियों से भरा होगा। आप अपनी कार्यक्षमता द्वारा उच्चति के नये आयाम गृहस्थ जीवन की बाधाएं भी समाप्त होंगी तथा पति-पत्नी के इधर-उधर की बातों की अपेक्षा अपने लक्ष्य पर अपना ध्यान में केन्द्रित करते हुए स्वयं को सफल करने का प्रयास करें। परिवार में किसी कारण से कलह होने की संभावना है। बेरोजगारों एवं विद्यार्थियों को उपयुक्त कालखंड का लाभ प्राप्त करना चाहिए। आप 'हनुमान साधना' (फरवरी 2010) करें। शुभ तिथियां - 2, 3, 7, 22, 30 हैं।

सिंह -

माह का प्रारम्भ आपके लिये सुखद होगा। आपको अपनी कल्पनाओं को साकार करने के अवसर प्राप्त होंगे। समाजिक गतिविधियों में आप बढ़चढ़ कर हिस्सा लेंगे, समाज में आपकी मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। भाई-बहनों, माता-पिता के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। माह के उत्तरार्द्ध में आपको स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। बिना कारण ही किसी से आपका वाद-विवाद हो सकता है, अच्छा होगा की आप संयम रखें। बेरोजगारों को उचित अवसर प्राप्त होंगे। आप 'शुक्र साधना' (दिसम्बर 2009) करें। शुभ तिथियां - 1, 5, 12, 14, 31 हैं।

कन्या -

इस माह आप परिश्रम एवं मेहनत तो बहुत करेंगे परन्तु आपको उसके अनुकूल परिणाम प्राप्त नहीं होंगे। इस कारण आप निराश हो सकते हैं, परन्तु आपको निराश होने की आवश्यकता नहीं है। वर्तमान में किये गये कार्यों/कर्मों का फल दीर्घकाल में अवश्य प्राप्त होगा। परिवार के प्रति आपकी जिमोदारियों में बढ़ोत्तरी होगी। परिवार में आपका स्थान और हो सकते हैं। माता-पिता या बुजुर्ग रिश्तेदारों के अधिक उच्च होगा। घर-परिवार में मांगलिक कार्य हो सकता है। महिलाओं को पारिवारिक कार्यों में व्यस्त रहना पड़ बढ़ सकते हैं। आप 'हरिद्रा गणपति साधना' (जनवरी 2010) करें। शुभ तिथियां - 2, 6, 8, 26, 30 हैं।

तुला -

इस माह आपको स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए, स्वास्थ्य लाभ प्राप्ति हेतु आपको अस्पताल भी जाना पड़ सकता है। ऐश्वर्य, मौज-मस्ती के कार्यों में भी आप इस माह खर्च कर सकते हैं। आय एवं खर्च के मध्य सामंजस्य बैठाने के लिये आपको प्रयत्न करना पड़ सकता है। इस माह आप रचनात्मक गतिविधियों एवं सामाजिक कार्यों में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेंगे तथा आपके कार्यों की चारों तरफ प्रशंसा होगी। विद्यार्थियों एवं बेरोजगारों को प्रयत्न करने पर मनचाही सफलता प्राप्त होगी। आप 'छिन्नमस्ता साधना' (नवम्बर 2009) करें। शुभ तिथियां - 1, 4, 5, 8, 27 हैं।

वृष्टिवक्त -

इस माह आप किसी यात्रा पर जा सकते हैं, जो कि आपके लिये लाभकारी सिद्ध होगी, रुके हुए कार्य पूर्ण होने से आपके मनोबल में वृद्धि होगी। माह के मध्य आपको आय में स्थिर वृद्धि के अवसर भी प्राप्त हो सकते हैं। आपकी उन्नति के मार्ग में कुछ लोग घड़यंत्र करने का प्रयत्न करेंगे। आपके लिये हितकारी होगा कि आप ऐसे लोगों से सावधान रहें। बेरोजगारों एवं विद्यार्थियों को इस पिछले समय के अपेक्षा अधिक अवसर प्राप्त होंगे। महिलाओं की स्थिति में सुधार होगा। आप इस माह 'ललिताम्बा साधना' (दिसम्बर 2009) करें। तिथियां - 6, 7, 11, 12, 30 हैं।

धनु -

यह काल आपके लिये शुभ ही चल रहा है, उन्नति के अनेक अवसर आपको प्राप्त होते रहेंगे। उन्नति के साथ ही साथ आपको आत्मिक बोध भी हो सकता है, आप देश, समाज, व्यक्तित्व के विकास में भी महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। आत्म संतोष की प्राप्ति हेतु आप अपने क्षेत्रों में सुधार पूर्ण कार्य करेंगे। आपको किसी सामाजिक मंच पर सम्मानित भी किया जा सकता है। महिलाएं परिवार में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करेंगी तथा उनके सम्मान में वृद्धि होगी। आप 'घोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना' (जनवरी 2010) करें। शुभ तिथियां - 4, 5, 9, 13, 15, 31 हैं।

मकर -

माह के प्रारम्भ में कोई अशुभ समाचार आपको प्राप्त हो सकता है। आपके स्वयं के स्वास्थ्य को लेकर भी आपको सचेत रहना चाहिए, आप भी किसी संकरण अथवा दुर्घटना का शिकार हो सकते हैं। आपको घबराने की आवश्यकता नहीं है, गुरु एवं इष्ट के प्रति आपकी श्रद्धा एवं विश्वास

योग: सिद्ध योग 12, 17, 23, 25, 26, 31 मार्च/ 6, 21 अप्रैल ☆ सर्वार्थ सिद्ध योग - 2, 9, 13, 18 मार्च/ 8, 13, 19 अप्रैल ☆ अमृत सिद्ध योग - 19, 22 अप्रैल ☆ गुरु पुष्य योग - 25 मार्च/ 22 अप्रैल ☆

कठिन समय में भी आपको शक्ति प्रदान करेंगे। नये कार्य अथवा कार्य विस्तार में आ रही अर्थ सम्बन्धी समस्याओं का समाधान प्राप्त हो सकता है। व्यवसाय एवं नौकरी में परिवर्तन के योग भी बन रहे हैं। आप 'पापांकुशा साधना' (फरवरी 2010) करें। तिथियां - 6, 11, 12, 13, 17 हैं।

कुंभ -

आपके कार्य क्षेत्र में आपको चुनौतियों एवं समस्याओं का समाना करना पड़ सकता है। आप निःरता एवं साहस पूर्वक प्रयत्न करेंगे तो अवश्य ही सफलताएं प्राप्त होगी। कला, रंगमच, चित्रकारी आदि कार्य से जुड़े व्यक्तियों को अपनी प्रतिभा दिखाने के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। आपकी कार्यशैली तथा कार्यक्षमता का लोहा आपके शत्रु भी मानने लगेंगे। आप अपने प्रयत्नों द्वारा कठिन सम्पन्न करने में सफलता प्राप्त करेंगे। प्रेम-प्रसंगों में आपको सफलता प्राप्त होगी। आप 'मातंगी साधना' (दिसम्बर 2009) करें। शुभ तिथियां - 8, 9, 14, 15, 18, 20 हैं।

मीन -

यह माह आपके लिये मिलाजुला ही रहेगा। नौकरी एवं व्यापार में आपको उन्नति के अवसर तो प्राप्त होंगे परन्तु आपके शत्रु एवं विरोधी आपके मार्ग में अड़चनें फैलाने का प्रयत्न करेंगे। आपको इस माह इस बात का विशेष ध्यान रखना होगा कि आप अपनी योजनाएं एवं उद्देश्य किन-किन मित्रों एवं सहयोगियों के साथ बांटें। शत्रुओं एवं विरोधियों द्वारा आपको भटकाने के प्रयास किये जा सकते हैं। माह के अंत में आपको आकस्मिक लाभ भी प्राप्त हो सकता है। निवेश की दृष्टि से माह आपके लिये श्रेष्ठ रहेगा। आप 'प्रत्यंगिरा साधना' (दिसम्बर 2009) करें। तिथियां - 1, 9,

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्योहार

16 मार्च	चैत्र शु.	- 01	मंगलवार	चैत्र नवरात्रि प्रारम्भ
23 मार्च	चैत्र शु.	- 08	मंगलवार	दुर्गाष्टमी
24 मार्च	चैत्र शु.	- 09	बुधवार	रामनवमी
26 मार्च	चैत्र शु.	- 11	शुक्रवार	कामदा एकादशी
27 मार्च	चैत्र शु.	- 12	शनिवार	प्रदोष व्रत
29 मार्च	चैत्र शु.	- 15	सोमवार	पूर्णिमा व्रत
10 अप्रैल	प्र. वैशाख कृ.	- 11	शनिवार	बैरुथनी एकादशी
11 अप्रैल	प्र. वैशाख कृ.	- 12	रविवार	प्रदोष व्रत

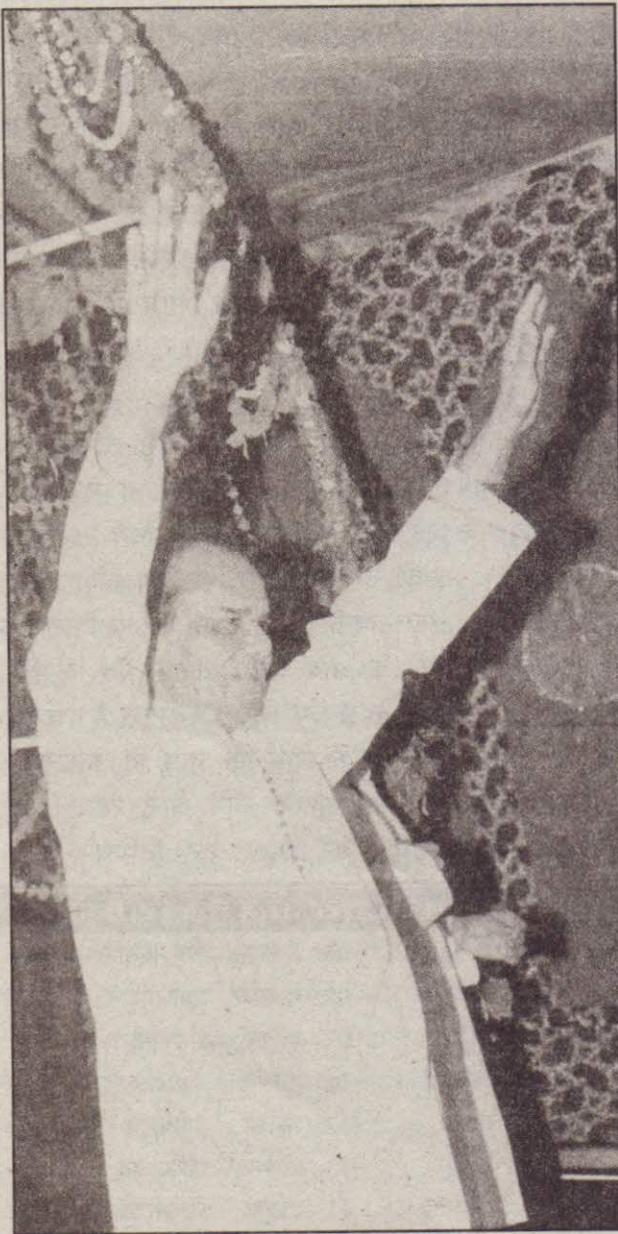


समय हैं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, वाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाव्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।



वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
संविवार (मार्च 7, 14, 21, 28) (अप्रैल 4, 11)	दिन 06:00 से 10:00 तक रात 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 06:00 तक
सोमवार (मार्च 1, 8, 15, 22, 29) (अप्रैल 5, 12)	दिन 06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (मार्च 2, 9, 16, 23, 30) (अप्रैल 6, 13)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (मार्च 3, 10, 17, 24, 31) (अप्रैल 7, 14)	दिन 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरुवार (मार्च 4, 11, 18, 25) (अप्रैल 1, 8)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (मार्च 5, 12, 19, 26) (अप्रैल 2, 9)	दिन 06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (मार्च 6, 13, 20, 27) (अप्रैल 3, 10)	दिन 10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

गृह छमनों नहीं वराहमिहिर नै कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्ण प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता ग्रास होगी या नहीं, बाधाएं तो उपरित नहीं हो जायेगी, यता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समसि पर वह रवयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पूर्ण करने पर आपका प्राप्त एवं सफलतादायक बन सकेगा।

अप्रैल

- ‘गुरु रहस्य गुटिका’ (न्यौछावर 90/-) का पूजन कर, धारण करें। गुरु से निकटता अनुभव करेंगे।
- भगवती दुर्गा को 5 लाल पुष्प चढ़ाएं, बाधा समाप्त होगी।
- एक मुट्ठी तिल में शक्कर मिला कर किसी निर्जन स्थान पर डाल दें, शुभ समाचार प्राप्त होंगे।
- सूर्य भगवान को अर्घ्य देकर ही घर से निकलें।
- प्रातः बिल्व पत्र पर चंदन की बिन्दी लगायें तथा अपनी एक मनोकामना बोल कर शिवलिंग पर चढ़ायें।
- ‘हनुमान चालीसा’ का पाठ कर, हनुमान मुद्रिका (न्यौछावर 90/-) को धारण करें।
- प्रातः गणपति का पूजन कर निम्न श्लोक का 11 बार उच्चारण करें।

ॐ जं जणपतये सर्वविद्धन हराय सर्वय
सर्व गुरवे लंबोदर हौं जं नमः ॥
- परम पूजनीया माता जी के जन्म दिवस पर अपने श्रद्धा भाव व्यक्त करें एवं सेवा का प्रण लें।
- भगवान विष्णु के सामने पांच दीपक जलाएं, सभी बाधा समाप्त होगी।
- पीपल के वृक्ष की जड़ में तेल का दीपक जलाएं, बाधा समाप्त होगी।
- ‘लघु नारियल’ (न्यौछावर 90/-) का संक्षिप्त पूजन करें तथा दक्षिणा सहित किसी शिव मंदिर में चढ़ा दें।
- प्रातः ‘ॐ नमः शिवाय’ मंत्र का 21 बार उच्चारण करें।
- गुड़ खाकर ही घर से बाहर निकलें।
- ‘सुलक्षणा गुटिका’ (न्यौछावर 90/-) को जल में डालकर उस जल से स्नान करें, स्वास्थ्य लाभ होगा।
- आज पुरुषोत्तम मास प्रारम्भ हो रहा है, पूरे माह विशेष साधनाएं अवश्य करें।

- दुर्घट से बनी वस्तु खाकर कार्य पर जायें, दिन सफलतादायक रहेगा।
- शुभ कार्य के लिये जाते समय पीली सरसों दरवाजे के बाहर बिखेर दें।
- निम्न मंत्र का जप करते हुए भैरव पूजन सिन्दूर से करें।

ॐ नमस्तेऽमृतसम्भूते बल वीर्य वृद्धिनः ।
बलमायुश्च मे देहि पापान्मे त्राहि दूरतः ॥
- चंदन का तिलक लगाएं, व्यक्तित्व प्रभावी बनेगा।
- आज मातंगी कवच (मातंगी साधना पुस्तक) का पाठ करके बाहर जाएं।
- सद्गुरुदेव निखिलजन्मोत्सव के शुभ दिवस पर पूर्ण विधि विधान सहित गुरु पूजन कर एक सेवा कार्य का संकल्प लें।
- आज प्रातः उठते ही (बिस्तर पर ही) इष्ट का ध्यान करें।
- भगवती लक्ष्मी को 3 कमल अर्पित कर 18 बार ‘ॐ महालक्ष्मी नमस्तुम्यं गुहवासो करोसिलम’ का जप करें।
- आज काली वस्तु का दान करें।
- घर से बाहर निकलते समय जो स्वर चल रहा हो वह पैर पहले बाहर निकालें।
- प्रातः काल गोमती चक्र (न्यौछावर 21/-) को तीन बार धुमाकर निर्जन स्थान पर फेंक दें।
- किसी हनुमान मंदिर में भगवान को भोग लंगाकर ‘ॐ हुं हैं हैं’ मंत्र का 10 मिनट तक जप करें।
- एक सुपारी पर मौली लपेट कर उसे गणपति रूप में स्थापित कर, उसका संक्षिप्त पूजन करें।
- भगवान विष्णु का पूजन कर उन्हें दुर्घट से बनी मिठाई का भोग लगा कर ही दिन का प्रारम्भ करें।
- आज चावल की बनी वस्तु भोजन में अवश्य ग्रहण करें।

तंत्र-विशाग

हत्या किसी हो आपकी शक्ति को बांध रखा हैं?

हत्या आप हृत अमर्य निर्बल अनुश्रव छहते हैं?

हत्या आपकी प्रगति के मार्ग अवलम्ब हो छहे हैं?

तो सम्पद्व कीजिए मंत्र शक्ति की चमत्कारिक

उत्कौलिज साधना

जिसको क्षम्पन अकरे के मंत्र क्षाधना में पूर्ण क्षफलता प्राप्त होती है, मंत्रों के विशिष्ट ऊर्जा प्राप्त होती है और आप पर फियो गये तांत्रिक - मांत्रिक प्रभाव विक्षिप्ति हो जाते हैं, आप निश्चिन्त होकर जीवन की गति में तेजी ला करते हैं, उस मार्ग पर छढ़ करते हैं जो आपको प्रगति की ओर ले जाता है -

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

जीवन भी एक दौड़ है और विशेष बात यह है कि इस दौड़ कम लोगों को आता है, अपनी गलतियों, अपने दोषों पर में लक्ष्य की ओर कोई नहीं देखता बस अपने दाएं बाएं अवश्य देखते हैं कि दाएं वाला व्यक्ति अर्थात् पड़ौसी, मित्र, सहपाठी, व्यापारिक प्रतिद्वन्द्वी क्या कर रहे हैं इसी प्रतिस्पर्द्धा में जीवन में उल्टे-सीधे कर्म करते हुए भागते जाते हैं। यदि पड़ौसी ने अथवा कार्यालय के सहयोगी ने कोई वस्तु खरीद ली है तो उसे भी वह खरीदने का प्रयास अवश्य करेगा, अपने स्वयं के बारे में विचार करने की क्षमता बहुत कम व्यक्तियों में होती है, अपनी क्षमता का आकलन कर अपना जीवन-लक्ष्य निर्धारित कर अपने बल बुद्धि विवेक का प्रयोग कर कार्य करना बहुत क्रिया प्रक्रिया, मेरी ही क्षमता में कोई दोष हो, मेरे ही पाप

कर्मों के कारण सफलता नहीं मिल रही हो, क्या ऐसा तो नहीं है, कि मेरा जीवन ही कीलित किया हुआ हो, ...प्रत्येक साधक को इस प्रश्न पर भी विचार करना आवश्यक है।

कीलन दोष क्या है?

कीलन का तात्पर्य है, एक बन्धन। जिस प्रकार एक खूटे से बंधा पशु उस खूटे के चारों ओर तो चक्कर लगा सकता है लेकिन वह सीमा से आगे नहीं बढ़ सकता, खूटे से गले तक की रस्सी किसी के लिए छोटी हो सकती है और किसी के लिए बड़ी, परन्तु बन्धन तो बन्धन ही है, वह एक पक्षी की भाँति स्वच्छन्द विचरण तो नहीं कर सकता, इसी प्रकार यदि किसी व्यक्ति की शक्तियों का कीलन किया हुआ है, और यह कीलन उसके कर्मों के कारण, उसके दोषों के कारण, उस पर किये गये किसी तांत्रिक प्रयोगों द्वारा आदि शक्ति के प्रभाव से हो जाता है, और जब तक यह दोष दूर नहीं हो जाता तब तक वह कितना ही प्रयास करें, उसके कार्य सफल नहीं हो पाते, उसके देखते-देखते उसके साथ वाले जीवन की दौड़ में आगे निकल जाते हैं और वह एक पशु की भाँति अपने ही स्थान पर बंधा छतपटाता रहता है।

क्या कीलन दोष का कोई उपाय है? क्या कीलन दोष ऐसा कलंक है, जिसे उतारा ही नहीं जा सकता? क्या साधक अपने भीतर अपनी शक्ति का उस स्तर तक विकास नहीं कर सकता, जिससे कीलन दोष दूर हो जाय?

टाक यही प्रश्न तंत्र के आदि रचियता भगवान शिव से पार्वती ने किया था कि हे प्रभु! आप तो भक्तों पर परम कृपा करने वाले हैं, आगम-निगम बीज मंत्रों के स्वरूप हैं, भक्ति मुक्ति के प्रदाता हैं फिर अपने मन्त्रों का कीलन क्यों किया? क्यों सांसारिक प्राणियों को मंत्र सिद्धि में पूर्णता प्राप्त नहीं होती?

देवों के देव भगवान शिव ने कहा, कि जैसे-जैसे युग बदलेगा वैसे-वैसे लोगों में भक्ति-प्रीति कम होगी, राग, द्रेष, ईर्ष्या, विरोध, शत्रुता में वृद्धि होगी एक प्राणी दूसरे प्राणी को देख कर प्रसन्न नहीं होगा, अपितु ईर्ष्या करेगा और इस ईर्ष्या के वशीभूत अपनी शक्तियों का उपयोग बुरे कार्यों में करेगा, यदि ऐसे व्यक्तियों के हाथ में मंत्र सिद्धि, तंत्र सिद्धि प्राप्त हो गई तो वे संसार में विपत्ति की स्थिति उत्पन्न कर देंगे, फिर भी मैं तुम्हारे स्नेहवश तंत्र, मंत्र, यंत्र पर उत्कीलन की वह विधि स्पष्ट करता हूं, जिसके कारण सात्विक विचार वाले धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के नियमों का पालन करने वाले साधक को यह कीलन दोष शांत करने में सफलता प्राप्त होगी, वह अपने बहुमांसास्थिमोदमालशिवोभ्यो नमः। उ३ धर्मर्थ नमः।

उत्कीलन महाविधान

शिव पूजन सम्पन्न कर उत्कीलन विधान सम्पन्न करना चाहिए और इस विधान हेतु “रौद्र शिव महाकाल यंत्र”, “तांत्रोक्त उत्कीलन यंत्र”, “11 तांत्रोक्त फल” तथा अष्टगन्ध और भस्म आवश्यक है। यदि शमशान की भस्म की व्यवस्था हो सकती है तो उसी का प्रयोग करना चाहिए।

सम्पूर्ण प्रक्रिया

यह विधान अर्द्धरात्रि को ही सम्पन्न किया जाता है और सात दिन तक निरन्तर प्रयोग करना आवश्यक है। सोमवार से प्रारम्भ कर सोमवार को यह प्रक्रिया पूर्ण होती है। अपने सामने एक बाजोट पर लाल कपड़ा बिछा दें तथा पीढ़े पर शमशान की भस्म तथा अष्टगन्ध फैला दें, उस पर 11 तिल तथा सरसों की ढेरियां बनाएं तथा प्रत्येक ढेरी पर एक-एक तांत्रोक्त फल रख दें, अब अपने सामने ‘रौद्र शिव महाकाल यंत्र’ को दूध से धो कर स्थापित करें तथा उसके पास मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त “तांत्रोक्त उत्कीलन यंत्र” क्रमशः स्थापित करें, दोनों यंत्रों पर भस्म और पुष्प अर्पित करें।

विनियोग :

उ३ अस्य श्री सर्वयत्रमंत्राणां उत्कीलनमंत्र स्तोत्रस्य मूल प्रकृतिर्वृष्टिर्गतीच्छन्दः, निरंजनी देवता कलीं बीजं हीं शक्तिः, हः लौं कीलकं सप्तकोटिमन्त्रयन्त्रतन्त्रकीलकानां संजीवन सिद्ध्यर्थं जये विनियोगः।

अब निम्न मन्त्रों का क्रमशः उच्चारण करते हुए अपने दाहिने हाथ की उंगलियों का स्पर्श एक-एक ढेरी पर करें, इस प्रकार यह पीठ पूजा सम्पन्न करनी है।

उ३ मण्डूकाय नमः। उ३ कालाञ्जिलुद्राय नमः।
उ३ मूलप्रकृत्यै नमः। उ३ आधारशक्त्यै नमः। उ३ कूर्माय नमः। उ३ अनन्ताय नमः। उ३ वाराहाय नमः।
उ३ पृथिव्यै नमः। उ३ सुधाम्बुध्ये नमः। उ३ सर्वसागराय नमः। उ३ मणिद्विषाय नमः। उ३ चिन्तामणि ज्वाय नमः। उ३ शमशानाय नमः। उ३ पारिजाताय नमः। उ३ रत्न वेदिकाय नमः। उ३ मणिपीठाय नमः। उ३ नानामुलिभ्यो नमः। उ३ शिवेभ्यो नमः। उ३ शिवमुण्डेभ्यो नमः। उ३ धर्मर्थ नमः।

ॐ ज्ञानाय नमः । ॐ वैराज्ञाय नमः । ॐ ऐश्वर्याय नमः । ॐ अधर्माय नमः । ॐ अज्ञानाय नमः । ॐ अवराज्ञानाय नमः । ॐ अनैश्वर्याय नमः । ॐ अरनन्दकन्दाय नमः । ॐ सर्वतत्वात्मपद्माय नमः । ॐ प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः । ॐ विकारमयके सरेभ्यो नमः । ॐ एं चाशद्वर्णद्वयकणिकायै नमः । ॐ अर्कमण्डलाय नमः । ॐ सोममण्डलाय नमः । ॐ महीमण्डलाय नमः । ॐ सत्वाय नमः । ॐ रजसे नमः । ॐ तमसे नमः । ॐ आत्मने नमः । ॐ अन्तरात्मने नमः । ॐ परमात्मने नमः । ॐ ज्ञानात्मने नमः । ॐ क्रियायै नमः । ॐ अरनन्दायै नमः । ॐ एं पारयै नमः । ॐ परापरायै नमः । ॐ निस्थानाय नमः । ॐ महरुद्र भैरवाय नमः ॥

अब साधक शिव का ध्यान कर आगे लिखे विधान से मूल मंत्र का जप प्रारम्भ कर श्री त्रिपुर स्तोत्र का पाठ करें।

मूल मंत्र

ॐ हीं हीं हीं हीं षट् पंचाक्षराणामुत्कीलय उत्कीलय स्वाहा । ॐ जूं सर्वमन्त्रयन्त्रतन्त्राणां संजीवनं कुरु कुरु स्वाहा ॥

इसे पूरे मंत्र का 108 बार शांत भाव से मुट्ठी बन्द कर उच्चारण करना है, इस साधना के दौरान धूप अवश्य जलते रहना चाहिए।

कुछ विशेष शास्त्रों के अनुसार इस प्रयोग में यदि त्रिपुर स्तोत्र का पाठ किया जाय तो फल प्राप्ति सहज हो जाती है।

त्रिपुर स्तोत्र

ॐ ॐ प्रणवस्तुपाय अं आं परमस्तुपिणे ।
इं ईं शक्तिस्वस्तुपाय उं ऊं तेजोमयाय च ॥१॥
ऋं ऋं रजितदीप्याय लूं लूं स्थूलस्वरूपतिणे ।
एं एं वाचां विलासाय ऊं ऊं अं अः शिवाय च ॥२॥
कं खं कमलनेत्राय गं घं गरुणगामिने ।
डं चं श्रीचन्द्रलाय छं जं जयकराय ते ॥३॥
झं अं टं ठं जयकर्त्रे डं ढं णं तं पराय च ।
थं दं थं नं नमस्तस्मै पं फं यंत्रभयाय च ॥४॥
वं भं मं बलवीर्याय वं रं लं वशसे नमः ।
वं शं षं बहुवादाय सं हं तं क्षं स्वरूपिणे ॥५॥
दिशमादित्यस्तुपाय तेजसे स्तुपथारिणे ।
अनन्ताय अनन्ताय नमस्तस्मै नमो नमः ॥६॥

मंत्र जप तथा अनुष्ठान सभी साधक सम्पन्न करते हैं, लेकिन सफलता केवल कुछ को ही प्राप्त होती है, इसका कारण यह है कि ज्यादातर व्यक्तियों का जीवन एक विशेष प्रक्रिया द्वारा बंधा होता है, उनके मंत्र कीलित होते हैं उन पर मांत्रिक, तांत्रिक प्रयोग किया होता है, अतः साधना में सिद्धि हेतु उत्कीलन प्रयोग तो आवश्यक ही है।

मातृकाया: प्रकाशायै तुभ्यं तस्मै नमो नमः ।
प्राणशयै क्षीणदायै संजीवन नमो नमः ॥७॥
निरंजनस्य देवस्य नामकर्म विधानतः ।
त्वया ध्यातं च शक्त्या च तेन संजायते जगत् ॥८॥
स्तुताहमविरं ध्यात्वा मायाया ध्वंसहेतवे ।
संतुष्टा भार्जवायावं यशस्वती जायते हि सा ॥९॥
ब्रह्माणं चेतयन्ती विविधसुरकरांस्तर्पयन्ती प्रमोदाद् ।
ध्यानेनोद्ययन्ती निगमजपमनुं षट् पद प्रेरयन्ती ।
सर्वान् देवान् जयन्ती दितिसुतदमनो साप्यहंकार मूर्ति-
तुभ्यस्तस्मै च जाप्यं स्मरस्चित्तमनुं मोत्तशाप्यजालात् ॥१०॥
इदं श्रीत्रिपुरास्तोत्रं पठेद् भवत्यात् यो नरः ।
सर्वान् कामान्वाप्नोति सर्वशापाद् विमुच्यते ॥११॥
॥इति सर्वमन्त्रयन्त्रमन्त्रोत्कीलन सम्पूर्णम् ॥

इस स्तोत्र का पांच बार पाठ प्रतिदिन करना है, सात दिन तक यह विधान इसी रूप से सम्पन्न कर शिव यंत्र को छोड़ कर अन्य सामग्री पूजा में काम आये लाल कपड़े में बांध कर उसमें ज्यारह लोहे की कीलें मिला कर घर के बाहर जमीन में गड्ढा खोद कर गाड़ देना आवश्यक है।

यह प्रयोग अपने आप में अत्यन्त सिद्ध प्रयोग हैं और कितना ही भयंकर तांत्रिक प्रयोग किया हुआ हो, वह दूर हो जाता है तथा साधक जिस मंत्र की भी साधना करता है उसमें सिद्धि अवश्य प्राप्त होती है।

साधना सतत प्रक्रिया है
विशेष अवसरों पर बड़ी साधनाएं
तो
कभी कुछ लघु प्रयोग

साधना : लिंग संघ प्रयोग

ਤਖ਼ਤਿ ਹੁਕਾਮਾਂ ਕਾਥਾ ਨਿਵਾਰਣ ਹੇਠਾਂ

जीवन में चाहे - अनचाहे किसी न किसी कठिनाई से मानस में एक अनिच्छित तनाव सा उत्पन्न हो जाता है, जिससे हम अपने जीवन में असहज हो जाते हैं; इन व्यर्थ के तनावों को आप कपूर की तरह उड़ा सकते हैं इन प्रयोगों के द्वारा और प्राप्त कर सकते हैं सुखी, सफल, सम्पन्न जीवन। अपने आयु के अधिकतम क्षणों को मुस्कराहट से जीर्ये, न कि तनावों में उलझ कर परेशानियों का सामना करते हुए - आपको मुस्कराहट देने में सक्षम हैं ये प्रयोग, क्योंकि आप मानें या न मानें, यह सच है...

स्थिर लक्ष्मी प्रयोग

व्यक्ति के जीवन में धन का कितना महत्व है, वह आज के युग को देखकर ही जाना जा सकता है, जहां प्रत्येक क्षण धन की जरूरत है, चाहे वह कैसा भी कार्य हो; आपके जीवन में यदि धन की वजह से तनाव हो, तो आप उस तनाव को अपने से मोछे छोड़ दें और जीवन में अपनी उन्नति के लिए, सम्पन्नता प्राप्त करने के लिए, प्रत्येक प्रकार के भौतिक सुख की प्राप्ति के लिए इस लघु, परन्तु अत्यन्त तीक्ष्ण प्रयोग को सम्पन्न करें, अपने जीवन में लक्ष्मी को स्थाई रूप से बांध कर सम्पूर्ण जीवन में उसका उपभोग करें।

इसके लिए आप 'सौष्ठा' के सामने निम्न मंत्र का 21 दिनों तक प्रतिदिन 51 बार उच्चारण करें -

शत्रु रत्नमिन प्रयोग

‘समझ में नहीं आता मैं क्या करूँ, उसने तो इस प्रकार की बाधा उत्पन्न कर दी, कि सारा काम रुक गया’ इस प्रकार के वाक्य आपके द्वारा तभी कहे जाते हैं, जब आप किसी कार्य को अत्यंत मनोयोग से करना चाहते हैं, परन्तु कोई न कोई उसमें रोड़ा बन जाता है। आप कार्य को जितनी ही सरलतापूर्वक सम्पन्न करना चाहते हैं, आपके सामने उतनी ही मुश्किलें खड़ी हो जाती हैं। तब आप सोचते हैं, कि क्या कोई ऐसा उपाय है, जो आपके इस कार्य को निर्विघ्न रूप से पूर्ण कराने में आपको सहायता प्रदान करे, जो आपके मार्ग में आने वाली बाधाओं को हटा दे और आप आसानी से अपने कार्य को पूर्ण कर सकें।

इसके लिए 'हरक्षत' पर नियमित रूप से प्रातः निम्न मंत्र का 11 बार 11 दिन तक जप करें -

३८

॥ॐ शं शत्रूस्तंभनाय फट् ॥

21 दिनों तक लगातार इस प्रयोग को सम्पन्न करना है। इस प्रयोग के लिए आप शुद्ध वस्त्र ही धारण करें। संभव हो, तो मंत्र जप का समय भी निर्धारित ही रखें। जीवन में लक्ष्मी की स्थिरता प्राप्त करने हेतु लघु प्रयोग में श्रेष्ठतम् प्रयोग है। 22 वें दिन सौष्ठा को जल में प्रवाहित कर दें।

आप स्वयं अनुभव करेंगे, कि आपके सभी कार्य बिना किसी रुकावट के पूरे हो रहे हैं। 12 वें दिन हरक्षत को नदी या नहर के जल में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - 70/-

साधना सामग्री - 80/-

सफलता प्राप्त करने का प्रयोग

प्रत्येक कार्य की सफलता आपके व्यक्तित्व की पहचान होती है। अगर आप किसी भी क्षेत्र में असफल हैं, तो आपका व्यक्तित्व असफल ही माना जायेगा। आप सफलता पाने के लिए प्रयास तो करते हैं, लेकिन दुर्भाग्य आपको असफलता देता है। आप-अपने ऊपर से असफल होने का स्टेप्म हटाकर, अपने-आप को हर सौभाग्य से पूर्ण कर दीजिये, जिससे आप सौभाग्यशाली की श्रेणी में आ जायें; अपने आप को निराशा से अलग कर इस प्रयोग के माध्यम से जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करें।

आप जिस कार्य में सफल होना चाहते हैं, उस कार्य को
एक कागज पर लिखकर उस पर 'हृषुल' रखकर इस मंत्र का
11 दिनों तक नित्य 7 बार जप करें -

四

॥ॐ ह्रीं साफल्याय ह्रीं नमः ॥

इसके बाद कागज और हर्षुल को किसी नदी या तालाब में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 90/-

शारीरिक कारणों का प्रयोग

क्या आप बहुत अधिक कमजोरी का अनुभव करते हैं या अपने ग्रुप में सबसे निर्बल लगते हैं? शारीरिक रूप से स्वस्थ होने पर भी कमजोरी का अहसास होता है? किसी कार्य को करने में बहुत जल्दी थकान का अनुभव करते हैं? थोड़ा-सा चलने पर शरीर में भारीपन का अनुभव होता है? दिल की धड़कन सामान्य से तेज हो जाती है व सामान्य होने में समय लग जाता है?

यदि बहुत उपाय करने के बाद भी ठीक नहीं हो रहे हों, तो आप इस उपाय को करें।

यह दिखने में तो सामान्य है, लेकिन इसकी तीक्ष्णता का आप इस प्रयोग को करने के बाद स्वयं अनुमान लगा सकते हैं। आप 'विमन्यु' पर 21 दिनों तक नित्य 11 बार निम्न मंत्र का जप करें -

四

॥ॐ कामाय कं ॐ नमः ॥

प्रयोग समाप्त होने पर इस गटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 60/-

सम्मोहन प्रयोग

आकर्षण भी जरूरी है जीवन में, क्योंकि आपको आये दिन ऐसे लोगों से मिलना पड़ता है, जिनसे आप अपने कार्यों में सहयोग ले सकते हैं। यदि आपका व्यक्तित्व सम्मोहक है, तो आपसे मिलने वाला प्रत्येक व्यक्ति आपके साथ कार्य करने में प्रसन्नता अनुभव करेगा।

वह अगर इन्कार कर दे, तो भी आपके सम्मोहक व्यक्तित्व को देखकर विवश हो जाय और प्रसन्नतापूर्वक आपके कार्यों में सहयोग प्रदान करे, तो यह आपके सम्मोहक व्यक्तित्व की सफलता ही होगी और निश्चित रूप से आप अपने को सम्मोहक बना सकते हैं इस प्रयोग के माध्यम से।

प्रातः जब सूर्योदय हो रहा हो, तब सर्वप्रथम संक्षिप्त गुरु पूजन सम्पन्न करें के पश्चात् गुरु से प्रयोग की सफलता हेतु प्रार्थना करें उसके पश्चात् अपने हाथ में 'मोद्य यंत्र' लेकर निम्न मंत्र का 21 बार जप करें -

३८

॥ॐ सं सम्मोहनाय फट् ॥

यह मंत्र जप 5 दिनों तक करना चाहिए, फिर पांचवें दिन यंत्र को नदी में विसर्जित करें।

साधना सामग्री - 120/-

कुर्जी वसल करने का प्रयोग

यह प्रयोग व्यापारियों के लिए उत्तमकोटि का प्रयोग है, क्योंकि उनका व्यापार स्वयं के लेन-देन पर ही आधारित है, समय पर पैसा न मिलने पर उनका व्यापार प्रभावित होता ही है। कई बार वे किसी ऐसे व्यक्ति को कर्ज दे देते हैं, जिनसे उन्हें रुपये वसूलने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, फिर भी आपका पैसा आपको वापिस नहीं मिल पाता है। कर्ज वसूल करना भी आपके लिए सिर दर्द बन जाता है। आप वसूल करना चाहते हैं और यामने वाला व्यक्ति इससे बचना चाहता है। आपकी मित्रता तब समाप्त हो जाती है, जब आप अपने किसी मित्र से अपना दिया रुपया (उधार) वापिस मांगते हैं। अपने प्रयत्नों को सफल करिये, इस प्रयोग के साथ।

इसके लिए 'केहटा' पर व्यापार के लिए 'निकलने से पहले 5 बार निम्न मंत्र का जप करें -

118

॥श्री ऐ मामणोत्तीर्णयै फट ॥

कर्जा वसूलने के लिए जायें, तो इसे अपने साथ ही रख कर ले जायें। रास्ते में किसी निर्जन स्थान या किसी नदी में प्रवाहित कर दें। एक 'केहटा' सिर्फ एक बार ही प्रयोग कर सकते हैं।

साधना सामग्री - 90/-

✿✿✿✿✿✿✿✿✿✿✿✿

रोग, पीड़ा शांति प्रयोग

रोग, पीड़ा अनचाहा निमंत्रण है, जो बिना बुलाये ही आपसे आकर मिलता है। शारीरिक रूप से रोगी व्यक्ति चाहते हुए भी अपने कार्यों को पूर्ण नहीं कर पाता। जिस चीज के उपभोग की इच्छा होती है, रोगी होने के कारण केवल उसे देखकर ही संतोष करना पड़ता है। आये दिन के छोटे-छोटे रोग और पीड़ाएं कई महत्वपूर्ण कार्यों में विलम्ब कर देती हैं; न चाहते हुए भी रोग और पीड़ा व्याप रहती है, चेकअप करवाने पर आप स्वस्थ प्रतीत तो होते हैं, फिर भी रोग और पीड़ा व्याप रहती है, मगर इसके ठोस कारण नहीं मिलते। पीड़ा आपको असामान्य बना देती है और आप अपना कार्य सामान्य रहकर नहीं कर पाते। इसके लिए आप 'अश्मिनी' पर 8 दिनों तक 53 लाल पुष्प चढ़ायें। प्रयोग समाप्ति पर अश्मिनी को किसी निर्जन स्थान पर डाल दें।

साधना सामग्री - 95/-

✿✿✿✿✿✿✿✿✿✿✿✿

घर में कलह मिटाने का प्रयोग

कभी-कभी छोटे-छोटे मतभेद बड़े कलह का रूप धारण कर लेते हैं। मतभेद बहुत ही छोटे-छोटे कारणों पर आधारित रहते हैं, जिससे पति-पत्नी के मध्य तनाव बना रहता है। वे अपने समय को हास्य और मधुरता से बिताना चाहते हैं, लेकिन मतभेदों के कारण वे ऐसा कर नहीं पाते, क्योंकि इन मतभेदों के कारण ही उन के स्वभाव में चिंचिचाहट आ जाती है और पूरे दिनभर खीझ बनी रहती है।

आप इस प्रयोग से कलह को मिटा सकते हैं। इसके लिए आप 'लुम्बीना' को लाल कपड़े में बांधकर 11 दिनों तक 7 बार मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ॐ क्रीं क्रीं सर्वविवाद निवारणाय फट्॥

प्रयोग समाप्ति के बाद किसी कुंए या तालाब में लुम्बीना को डाल दें।

साधना सामग्री - 90/-

✿✿✿✿✿✿✿✿✿✿✿✿

शीघ्र विवाह प्रयोग

विवाह एक ऐसी प्रक्रिया है, जो यदि समय पर न हो, तो आलोचनाएं होने लगती हैं, अथव परिश्रम के बाद भी विवाह न हो पा रहा हो, तो इस प्रयोग को करने पर शीघ्र ही विवाह सम्बन्धी रिश्ते आने लगते हैं। इस प्रयोग को सम्पन्न करने हेतु 'अघोर गौरा चेटक' की आवश्यकता होती है, जो साधकों को भगवान शिव से प्राप्त ऐसा उपकरण है, जिसका प्रभाव साधक स्वयं कुछ ही दिनों में महसूस करने लगता है। इस प्रयोग को सम्पन्न करने से विवाह को लेकर जो बाधाएं आ रही होती है, उनका समाधान होता है।

इस प्रयोग के लिए आप 'अघोर गौरा चेटक' को हाथ में लेकर पीपल के पेड़ की 9 बार परिक्रमा करें तथा परिक्रमा करते हुए निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ॐ ऐं क्लीं शीघ्र विवाह सिद्धये फट्॥

यह प्रयोग 7 दिन तक करें तथा 7 वें दिन चेटक को उसी पेड़ की जड़ में दबा दें। आप स्वयं देखेंगे, कि इस प्रयोग के बाद विवाह में कोई अड़चन नहीं होगी और विवाह का मुहूर्त शीघ्र ही बन जायेगा।

साधना सामग्री - 90/-

✿✿✿✿✿✿✿✿✿✿✿✿

इच्छित कामना प्राप्ति प्रयोग

इच्छाएं तो जीवन में बहुत होती हैं, लेकिन वे सभी की सभी पूर्ण हों, यह नहीं हो पाता। इच्छा होना उमंग और उत्साह का परिचायक है। जिस चीज की अत्यधिक कामना हो, मगर वह मिल नहीं पाती है, तो अपनी इच्छित कामना के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करें। इस प्रयोग को करने से निश्चित रूप से आपकी कामना पूर्ण होगी, चाहे वह नौकरी प्राप्ति की हो, किसी वस्तु की कामना हो या जीवन में उच्च स्तर प्राप्त करने की कामना हो।

सर्वप्रथम संक्षिप्त गुरु पूजन सम्पन्न करें, उसके पश्चात् एक कागज पर कुंकुम से अपनी इच्छा लिख दें, उस पर 'प्राप्त्या' रखकर 5 दिनों तक 13 बार निम्न मंत्र का जप करें।

मंत्र

॥ॐ ईं ईस्तिं साधय फट्॥

प्रयोग के पूर्ण होने के बाद प्राप्त्या को नदी या तालाब में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 90/-

✿✿✿✿✿✿✿✿✿✿✿✿

इबोपी

सम चक्र जागरण

स्वाधिष्ठान चक्र

ओ तत सत

‘इबोपी’ डाब डापके लिए अपरिचित शब्द नहीं रहा। आध्यात्मिकता के डाब तक असूते रहे इस आयाम से आप पत्रिका के पिछले अंक में ही परिचय प्राप्त कर चुके हैं। इसकी सरलता और इसके आश्चर्यजनक प्रभावों ने प्रत्येक बुद्धिजीवी पाठक और साधक का ध्यान डापनी और आकर्षित किया है। ‘इबोपी’ को डापनी जीवन-सरिता की प्रत्येक बुंद में समाहित करने के लिए हर एक में एक ललक, एक चेतना, एक जागरूकता उत्पन्न हुई है तथा सभी इसके लिए सचेष्ट हैं। पत्रिका परिवार को प्रतिदिन प्राप्त होने वाले सैकड़ों पत्र उन टेलीफोन इस बात के गवाह हैं, कि भारतीय ऋषियों द्वारा अविष्कारित पञ्चतियां काल सीमा से परे प्रत्येक मानव के दैनिक जीवन में गहराई से पैठ कर उसे उत्तरोत्तर लर्ध्व गति प्रदान करने में सक्षम हैं व उन्हें डापने जीवन में उतार कर प्रत्येक मानव जीवन की समस्त बाधाओं पर विजय प्राप्त कर पूर्ण सफलता अर्जित करता हुआ ‘महामानव’ बनने के पथ पर अग्रसर हो सकता है।

आज के इस भौतिक युग में मानव देह बोध से ग्रस्त है, परन्तु देह बोध से भी उसका तात्पर्य सिर्फ मानव शरीर की त्वचा और त्वचा के नीचे मांस ही है। प्रत्येक व्यक्ति इसी बात को लेकर चिन्तित है, कि उसकी त्वचा पर कोई दाग-धब्बा त्वचा अधिक हो, त्वचा अधिक चिकनी एवं कांति युक्त हो, शरीर की मांस-पेशियां सुगठित हों, कमर पतली हो, अधिक चर्बी न हो।

इसके लिए वह अनेक प्रकार के उपायों को अपनाता रहता है, न जाने कितनी ही प्रकार की औषधियों का प्रयोग करता है, नाना प्रकार के व्यञ्जनों का भक्षण करता है, निरीह जानवरों को मार कर उनके मांस का भक्षण करता है, अनेक रसायनों से बने साबुन और त्वचा पर लगाने वाले प्रसाधनों का प्रयोग करता है।

और इस प्रक्रिया में वह सौन्दर्य प्राप्त करने के बजाय उसे नष्ट अवश्य कर देता है। न जाने कितनी ही बीमारियां उसे आ घेरती हैं। त्वचा पर रासायनिक पदार्थों के प्रयोग से उसे आ घेरती हैं। प्रतिकूल असर ही होता है और अनेक विकारों का जन्म होता है, क्योंकि इनका तात्कालिक प्रभाव चाहे कितना ही अनुकूल क्यों न हो, इनके नियमित प्रयोग से त्वचा सम्बन्धी अनेक विकृतियां ही उत्पन्न होती हैं तथा कुछ वर्षों से अन्तराल में नैसर्गिक सौन्दर्य खो सा जाता है।

सौन्दर्य बाहर से प्राप्त किया भी नहीं जा सकता, बाजार से सौन्दर्य को नष्ट करने वाले प्रसाधन तो खरीदे जा सकते हैं, परन्तु सौन्दर्य नहीं खरीदा जा सकता। फिर भी प्रत्येक व्यक्ति तथाकथित सौन्दर्य वर्द्धक प्रसाधनों की तरफ ही भाग रहा है।

...किन्तु सौन्दर्य बाहरी साधनों से प्राप्त नहीं होता। अत्यन्त सुन्दर फूलों और लताओं से युक्त पेड़-पौधों के मनमोहक सौन्दर्य को अपनी फुलवारी या बगीचे में सजाने के लिए उनके स्वस्थ और पुष्ट बीजों का चयन करना पड़ता है, उचित एवं अनुकूल वातावरण में उनका रोपण करना पड़ता है, आवश्यकतानुसार धूप, जल, खाद आदि देना पड़ता है, बीमारियों व हानि पहुंचाने वाले अन्य कारणों से पौधों की रक्षा करनी पड़ती है, तब जा कर उनके सौन्दर्य से बगीचे का रूप निखर पाता है।

इसी प्रकार अपने जीवन के सौन्दर्य को निखारने के लिए भी हमें त्वचा और मांस की सीमाओं से आगे बढ़ कर इसकी गहराई में उतरन पड़ेगा, गहराई में उतर कर मानव शरीर के सुम शक्ति केन्द्रों को जाग्रत करना पड़ेगा, जो शरीर स्थित विभिन्न चक्रों में केन्द्रीभूत होते हैं। इन शक्तियों के जागरण के फलस्वरूप शरीर का अंग-प्रत्यंग, प्रत्येक अणु चैतन्य हो पायेगा और अनेकानेक अतीन्द्रिय क्षमताओं की प्राप्ति हो सकेगी।

जब ऐसा होगा, तो सभी समस्याएं, बाधाएं, तनाव, कष्ट, न्यूनताएं अपने आप में समाप्त हो सकेंगी, सफलता के विभिन्न आयाम प्राप्त हो सकेंगे, रोगों पर नियन्त्रण हो सकेगा, समाज को कुछ नया प्रदान किया जा सकेगा और तभी वास्तविक अर्थों में जीवन का सौन्दर्य अनुभव हो सकेगा, जीवन में उत्तर सकेगा।

लेकिन इस मामले में आधुनिक चिकित्सा विज्ञान आपकी मदद नहीं कर पायेगा। इसके लिए तो आपको प्राचीन ऋषियों व योगियों द्वारा निर्दिष्ट पथ का ही अवलम्बन लेना पड़ेगा, उनके बताये नियमों का ही पालन करना पड़ेगा, उनकी क्रिया पद्धति को अपने दैनिक जीवन में स्थान देना पड़ेगा, क्योंकि उन्होंने जीवन के वास्तविक सौन्दर्य को खोजने का प्रयत्न किया और वे साधना की अनन्त गहराइयों में उतरे। फिर जो मोती, जो हीरक खण्ड उन्हें प्राप्त हुए, जीवन के जिन रहस्यों से उनका साक्षात्कार हुआ, उनको ही उन्होंने समाज के समक्ष रखा। जहां एक तरफ पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित लोग बाहरी शरीर को निखारने व संवारने में लगे रहे, वहीं भारतीय संस्कृति से प्रभावित लोगों ने आन्तरिक शरीर को प्रमुखता दी और आत्मा की उन्नति के लिए अग्रसर हुए, जिसके फलस्वरूप वे शरीर स्थित ज्ञान की गहराइयों में उतर कर वास्तविक अमूल्य मोती प्राप्त कर सके, जबकि पाश्चात्य सभ्यता प्रभावित लोगों के भाग्य में मात्र दुःख एवं परेशानियां ही आईं।

परीक्षा

सद्गुरु कभी भी परीक्षा नहीं लेते, क्योंकि वे तो उसी दिन उस व्यक्ति को समझ जाते हैं, जिस दिन वह उनके समक्ष प्रथम बार दीक्षा ग्रहण कर शिष्य बनने को प्रस्तुत होता है। एक अध्यापक प्रथम दिन ही अपने विद्यार्थी से दो-चार प्रश्न पूछकर समझ जाता है, कि उसका शिष्य ज्ञान के किस स्तर पर खड़ा है; और उसे किसी प्रकार से कहां तक ले जाना है, किन्तु वह ऊपर से सामान्य रहते हुए भी उसे शिक्षा देता ही रहता है। परीक्षा वास्तव में गुरु द्वारा कुछ ज्ञान कराने के लिए नहीं होती, वरन् शिष्यों को ही बताने के लिए, उसे आत्मबोध कराने के लिए होती है, जिससे वह अपना स्तर समझ सके।

उत्तम शिष्य तो वही है, जो इस प्रकार से अपनी त्रुटि समझ कर उसे सुधारने का प्रयास करे। केवल 'प्रभु की माया', 'गुरुदेव की लीला' कहने से ही कुछ निर्मित नहीं हो जाता। उसकी आत्मविवेचना के ढंग से विवेचना करनी पड़ती है। गुरुदेव के प्रत्येक संकेत एवं प्रत्येक इंगित का वही अर्थ समझना पड़ता है जो वे समझाना चाहते हैं।

दूसरी ओर, परीक्षा का यह भी तात्पर्य है, कि केवल इसी प्रकार से किसी व्यक्ति के विषय में प्रकट किया जा सकता है, कि वह 'उत्तीर्ण' हो गया है, जिससे भविष्य में मूल्यों के निर्धारण का कोई मापदंड बन सके। शिष्य के लिए इन 'परीक्षाओं' का जितना आंतरिक महत्व है, गुरु के लिए उतना ही बाह्य। जिस प्रकार किसी शिक्षक को अपने उत्तीर्ण होकर अगली कक्षा में जाने शिष्य से कोई मोहन होना तथा न ही अपने अनुत्तीर्ण छात्र से कोई राग-द्रेष, ठीक उसी प्रकार सद्गुरु भी अपना सतत प्रयत्न बिना किसी राग-द्रेष के करते ही रहते हैं। उन्हें अपना धर्म ही सर्वाधिक प्रिय होता है, कि किस युक्ति से मेरे 'विद्यार्थी' अधिकाधिक उत्तीर्ण हो सके और वह भी श्रेष्ठता से।

अतः जब हम गुरु-चर्चा करें, जीवन की कसौटियों का सामना करें, तब इस बात का गरिमापूर्ण ढंग से उल्लेख करें, कि 'गुरु की परीक्षा' का वास्तविक अर्थ क्या होता है अन्यथा तो ऐसा कहना वाक्-जाल मात्र ही रह जाता है।

‘इबोपी’ भी ऐसा ही एक हीरक खण्ड है, जिसके माध्यम से शरीर को पूर्ण चैतन्यता प्रदान कर जीवन और जीवन के सौन्दर्य की नई परिभाषाओं को प्राप्त किया जा सकता है।

‘इबोपी’ के दूसरे चरण में द्वितीय पद्म ‘स्वाधिष्ठान चक्र’ 5. के स्पन्दन को तीव्रता प्रदान करने की क्रियाएं सम्पन्न की जाती हैं।

यह चक्र लिंग प्रदेश के ठीक पीछे स्थित होता है। भारतीय 6. वैदिक सिद्धान्त के पंच तत्त्वों - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश - में से यह ‘जल तत्त्व’ का प्रतिनिधित्व करता है। यह चक्र काम शक्ति और भौतिकता का केन्द्र है। इस चक्र के 7. स्पन्दन को तीव्रता प्रदान करते समय सतर्कता आवश्यक है, क्योंकि जैसे-जैसे स्पन्दन की तीव्रता में वृद्धि होती है, वैसे-वैसे कामाग्नि भी तीव्र होती है। ऐसे में यदि संयम छूट जाता है और व्यक्ति काम भावनाओं में बह जाता है, तो इस चक्र का 8. स्पन्दन पुनः न्यून हो जाता है तथा ऊर्जा का प्रवाह अधोगामी हो मूलाधार की ओर गतिशील हो जाता है, फलतः ऊर्ध्वगति समाप्त हो जाती है तथा व्यक्ति जीवन की श्रेष्ठता से विच्छिन्न हो जाता है।

परन्तु यदि प्राणायाम का सहारा लिया जाय तथा श्वास गति को नियन्त्रित कर धीमी और गहरी सांस ली जाय, तो कामेच्छाओं पर नियन्त्रण प्राप्त किया जा सकता है तथा ऊर्जा प्रवाह की अधोगति को रोका जा सकता है।

स्वाधिष्ठान का आकार छः दल वाले कमल के समान माना गया है। इस कमल का रंग सिन्दूरी होता है, जो कि स्वाधिष्ठान चक्र के चैतन्य होने के पश्चात् प्रकट होने वाली रशमियों का रंग है। इस चक्र के पूर्ण स्पन्दन युक्त होने के उपरान्त ही भौतिक जीवन का पूर्णता से आनन्द उठाया जा सकता है।

स्वाधिष्ठान चक्र के माध्यम से नित्य भौतिक, आध्यात्मिक एवं चिकित्सकीय उपलब्धियां व समस्याओं का निदान प्राप्त किया जा सकता है -

1. इस चक्र के माध्यम के जल तत्त्व पर नियंत्रण स्थापित किया जा सकता है।
2. इस चक्र के स्पन्दन में वृद्धि होने से एसिडिटी, कब्ज और अपच जैसी समस्याएं समाप्त हो जाती हैं।
3. इस चक्र के स्पन्दन में तीव्रता के साथ-साथ व्यक्ति के पौरुष में वृद्धि होती है।
4. इस चक्र को अधिक स्पन्दन युक्त बना कर नपुंसकता

को मिटाया जा सकता है, स्त्री संसर्ग सुख का पूर्ण आनन्द उठाया जा सकता है तथा गृहस्थ जीवन को पूर्ण रूप से सुखी व मधुर बनाया जा सकता है।

इसके माध्यम से संतान उत्पन्न करने में अक्षम व्यक्ति भी संतान सुख प्राप्त कर सकते हैं तथा बांझ स्त्री भी मामृत्व के गैरव से अभिभूत हो सकती है।

इस चक्र के स्पन्दन को तीव्रता प्रदान कर शीघ्र पतन, स्वप्नदोष आदि गुप्त रोगों पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है।

इस चक्र के पूर्णतः स्पन्दित होने पर वीर्य अधिक मात्रा में उत्पन्न होता है, ऐसे में यदि पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन किया जाय, तो वह सत्व में परिवर्तित हो पूरे शरीर में फैल जाता है, जिससे चेहरे और पूरे शरीर में अद्भुत कांति छा जाती है।

इसके माध्यम से बालों के गिरने या झड़ने की समस्याओं पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है।

इस चक्र को पूर्ण स्पन्दित कर एक निर्भय व निदर व्यक्तित्व प्राप्त किया जा सकता है।

इससे जीवन में अधिक प्रवाह, अधिक छलछलाहट, अधिक उमंग प्राप्त की जा सकती है।

इस चक्र के स्पन्दन को तीव्रता प्रदान करने पर एक अद्भुत तेज युक्त चुम्बकीय व्यक्तित्व प्राप्त किया जा सकता है।

इसके उपरान्त स्त्रियां व युवतियां प्रत्येक व्यक्ति को एक प्रकार के आकर्षण पाश में बांधने वाला मोहक और चुम्बकीय सौन्दर्य प्राप्त कर सकती हैं।

यदि प्रेमी और प्रेमिका या पति और पत्नी, दोनों के स्वाधिष्ठान चक्र पूर्ण रूप से स्पन्दित हों, तो उनके मध्य आपसी प्रेम बढ़ता है तथा एक-दूसरे के प्रति समर्पण का भाव तीव्र होता है।

जिनका विवाह नहीं हो पा रहा है या जिनके विवाह होने में लगातार बाधाएं उत्पन्न हो रही हैं, उनके लिए स्वाधिष्ठान चक्र का पूर्ण रूप से स्पन्दित होने की क्रिया एक वरदान ही है।

इसके माध्यम से गुर्दे व मूत्राशय से सम्बन्धित बीमारियों पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है।

इस चक्र को पूर्ण स्पन्दन प्रदान कर पति-पत्नी मनचाही संतान प्राप्त कर सकते हैं, वे अपने पुत्र या पुत्री को

डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक आदि जो कुछ भी बनाना चाहते हैं, वैसी ही आत्मा गर्भ में प्रवेश लेगी। इस प्रकार सुयोग्य, धर्म परायण संतान को जन्म दिया जा सकता है।

17. इस चक्र के पूर्ण स्पन्दन युक्त होने के उपरान्त व्यक्ति को धन की चिन्ता नहीं करनी पड़ती, लक्ष्मी की कृपा स्वतः ही उस व्यक्ति को प्राप्त हो जाती है और अनेक स्रोतों से उसे धन की प्राप्ति होती रहती है।
18. इस चक्र के पूर्णतः स्पन्दन युक्त होने के पश्चात् व्यक्ति के पद एवं सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है तथा समाज में सम्मानीय स्थान प्राप्त होने की क्रिया सम्पन्न होती है।
19. इस चक्र के माध्यम से अतिसार, पेचिश एवं ब्लड प्रेशर जैसे रोगों पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है व मधुमेह को भी दूर भगाया जा सकता है।
20. इस चक्र को तीव्र स्पन्दन युक्त बना कर मनोवाञ्छित वाहन सुख प्राप्त किया जा सकता है।
21. जिस व्यक्ति का स्वाधिष्ठान चक्र पूर्णतः स्पन्दित होता है, वह घर-परिवार और समाज में सभी लोगों के प्रेम का पात्र बन जाता है।

साधना विधान

इस प्रयोग को सम्पन्न करने हेतु 'स्वाधिष्ठान यंत्र' की आवश्यकता होती है, जो कि प्राण प्रतिष्ठित एवं मंत्र सिद्ध हो।

किसी भी गुरुवार को प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में स्नानादि नित्य कर्म से निवृत्त होकर स्वच्छ पीले वस्त्र धारण कर पीले रंग के आसन पर बैठ जायें, दिशा उत्तर या पूर्व हो। सामने बाजोट पर पीले रंग का वस्त्र बिछा कर उस पर स्वाधिष्ठान यंत्र का स्थापन करें। सबसे पहले अपने गुरुदेव का ध्यान कर उनका मानसिक पूजन सम्पन्न करें -

ध्यान

मात्या कुण्डलिनी तथा शिवशिवा ब्रह्माण्डभाण्डोदरा।
ब्रह्मोर्जो परिपुष्ट तत्त्वभविता अग्नन्दनित्योदिता॥
श्रीपात्रमेष्ठि कृपाविधानगमिता साहस्रमृत्युज्ज्वला।
पायान् नः परदेवता गुरुकृपा शिष्यार्थ संदीपिका॥

अर्थात् 'नित्य चैतन्य, क्रियाशील, समस्त ब्रह्माण्ड जिसमें समाहित है, ब्रह्म ऊर्जा से परिपुष्ट, 'तत्त्वमसि' इस महावाक्य के लक्ष्यार्थ से संभूषित, आनन्दमयी कुण्डलिनी

यह शरीर, जिसे हम साबुन लगाते हैं, मुन्द्रर कपड़े पहनाते हैं, सजाते-संवारते हैं, उसको चीड़-फाड़ कर देखा जाय, तो मांस, नाड़ियां, रक्त, थूक, मल, मूत्र आदि के अलावा कुछ नजर नहीं आयेगा और जो नजर आयेगा, वह भी मृत्यु के आगोश में जाकर समाप्त हो जाने वाला है। यह मानव शरीर की विशिष्टता नहीं हो सकती, विशिष्टता तो यह है, कि हम इस मल-मूत्र से भरे शरीर को चेतना युक्त बनाते हुए अपने जीवन में पूर्ण सामर्थ्य युक्त हो सकें।

शक्ति को मूलाधार से सहस्रार तक उत्प्रेरित करके समुद्दीप करने वाली पराशक्ति स्वरूपा, पुरुषार्थ चतुष्टय को प्रदान करने वाली पारमेष्ठि गुरु की परम कृपा हम समस्त शिष्यों की रक्षा करे।'

गुरु पूजन के उपरान्त स्वाधिष्ठान यंत्र का भी कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य चढ़ा कर पूजन करें। पूजन के उपरान्त स्वाधिष्ठान यंत्र को ध्यान पूर्व देखते हुए (यदि सम्भव हो, तो त्राटक करते हुए) पूर्ण एकाग्र होकर निम्न मंत्र का 30 मिनट तक जप करें -

मंत्र

॥ॐ यं रं लं वं जाग्रय जाग्रय भं मं

ॐ फट् स्वहारा॥

ऐसा तीन दिन तक नित्य करें। ऐसा करने पर यंत्र में संग्रहीत शक्तियों का स्थापन शरीर स्थित स्वाधिष्ठान चक्र में हो जाता है, फलस्वरूप स्वाधिष्ठान चक्र में स्पन्दन में वृद्धि हो जाती है। तीन दिन पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

अब उपरोक्त 21 बिन्दुओं में से आपकी जो भी इच्छा है या ऐसी कोई समस्या आपके समक्ष आती है, तो गुरुवार के दिन प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में दैनिक नित्य कर्म के पश्चात् स्वच्छ पीले वस्त्र धारण कर पीले आसन पर बैठ जायें तथा गुरु पूजन सम्पन्न कर अपनी समस्या के निदान या इच्छा पूर्ति का संकल्प लेकर स्वाधिष्ठान चक्र पर अपना ध्यान केन्द्रित कर उपरोक्त मंत्र का मात्र 10 मिनट तक जप करें। ऐसा करने से स्वाधिष्ठान चक्र में निहित ऊर्जा स्पन्दित होकर आपको शक्ति प्रदान करेगी और इस प्रकार आपकी इच्छा पूर्ति हो सकेगी।

गुरु ही प्यारा है
 तीन लोक में व्यारा है
 हमारे जीवन के संताप हटाता है
 हमारे हृदय के भावों को जानता है

गुरु-शिष्य दिव्य लिला

गुरु-शिष्य का सम्बन्ध व्यक्त से अधिक अव्यक्त, मुखर से अधिक मौन, दर्शनीय से अधिक अदर्शनीय और देह से अधिक प्राण का है। श्री गुरुदेव का जो वास्तविक स्वरूप है, वह तो प्राणगत स्थिति में जाने पर ही, आत्मगत स्थिति में जाने पर ही हमारे समक्ष स्पष्ट होता है और तब समझ में आ सकता है, कि क्यों उन्हें अनन्त बाहों, अनन्त पादाक्षों और अनन्त चक्षुओं वाला कहा गया है। यही पूज्य गुरुदेव का विराट स्वरूप है।

जो धरती तप रही होती है, उस पर पानी की यदि एक-दो बूँदें पड़ भी जाएं, तो उस धरती की तपिश कम नहीं होती अपितु भाप का एक झोंका उठकर उमस और बढ़ा देता है। तब क्या प्रकृति एक-दो बूँदे देकर ही अपना कार्य समाप्त करते रहते हैं। केवल ऐसे ईश्वर रूपी गुरुदेव का ही धैर्य असीम हो सकता है और वे ही अक्षय प्रेम जल के स्वामी हो सकते हैं।

नहीं! वह एक के बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी... यह क्रम तब तक जारी रखती है, जब तक कि धरती भीग न जाए और उसकी तृप्ति, सोंधी महक बनकर फूट न उठे।

यह मानव मन भी एक प्रकार की धरती ही तो है। जब इसे स्नेह और प्रेम का जल नहीं मिलता, तो शुष्क हो जाता है, अनुपजाऊ हो जाता है और जिस प्रकार सूखी, वर्षा जल को आतुर धरती में गहरी दरारें पड़ जाती हैं, ठीक उसी तरह मानव मन में भी कुंठाओं, नीरसताओं और विषमताओं की गहरी दरारें पड़ जाती हैं।

यह सारभूत तथ्य तभी विकसित हो सकता है, जब प्रेम की कुछ बूँदें नहीं, कोई एक झोंका नहीं, अपितु एक के बाद एक लहर आती रहे। यह कार्य केवल ईश्वर ही सम्पन्न कर सकते हैं, और मूर्त रूप में इसी कार्य को वे गुरु रूप में सम्पन्न

गुरु का कार्य ठीक एक माली की ही तरह है। शिष्य को जितनी चिंता अपने विकास की होती है, गुरुदेव को उससे कहीं अधिक होती है। उन्हें प्रतिफल यह बात उद्देलित रखती है, कि जो बीज मेरे शिष्य के अंदर पड़े हैं - ज्ञान के, चेतना के, सुसंस्कारों के - वे व्यर्थ न चले जाएं और वे ही इसके अंकुरण के प्रयास भी करते हैं। केवल अंकुरण ही नहीं, पूर्ण सघन वृक्ष बनाने की सीमा तक वे चेष्टारत रहते हैं।

सद्गुरु कहत - सुन मेरे बंधु

कल-कल करती हुई लगातार बहती हुई किसी अनजान पथ की ओर अग्रसर रहती है... कहीं भी एक क्षण के लिए विश्राम उसकी किस्मत में नहीं है... वह हर क्षण आगे ही बढ़ती रहती है... अपने प्रिय की ओर... सागर की ओर...

वह जानती है, कि उससे मिलने में उसके अस्तित्व को खतरा है, उससे मिलने पर वह पूरी तरह से समाप्त हो जाएगी, उसमें विसर्जित हो जाएगी... पर वह इन बातों की परवाह न

करते हुए किसी अल्हड़ घोड़शी की भाँति अपने प्रिय में विलीन होने के लिए बढ़ती रहती है... यही उसकी इच्छा है... यही उसकी आकांक्षा है...।

जीवन की इस लम्बी, अनुभव प्रदायी यात्रा में हर किसी की अपनी आकांक्षाएं एवं इच्छाएं होती हैं... हर कोई कुछ विशेष करना चाहता, कुछ विशेष बनना चाहता है, कुछ विशेष प्राप्त करना चाहता है...

पर क्या नदी की ही भाँति उनमें दृढ़ता है, नदी की ही भाँति उनमें अटूट विश्वास, श्रद्धा और खुद को मिटाने का जुनून है...? अगर नहीं, तो फिर किस बलबूते पर कुछ प्राप्त करना चाहते हो, क्योंकि जो कुछ खोने को तैयार नहीं, वह प्राप्त ही क्या कर सकेगा, जो मिटाने को तैयार नहीं, वह क्या नवीन निर्माण कर सकेगा, जो विसर्जित होने की क्रिया से अनभिज्ञ है... वह अपने अस्तित्व को बचा भी कैसे सकेगा?

मिटाना तो एक दिन है ही, जाना तो एक दिन है ही, फिर चाहे तुम कितना ही अपने ऊपर पहरा बिठा दो, अपने आप को कमरे में बंद कर लो... पर एक दिन तुम समाप्त होओगे जरूर... यह सुनिश्चित है... और जब ऐसा होता है

तो तुम किस अहं में अपने आपको बचाते फिर रहे हो, क्यों अपने आपको धोखा दे रहे हो...? क्या सोचते हो, कि कभी मिटोगे नहीं? यह मात्र तुम्हारा भ्रम है, मिटाना तो तुम्हें है ही, आज नहीं तो कल...।

...और स्वेच्छा से आज अपने आपको मिटा दोगे, तो उसी क्षण तुम्हारा नया जन्म होगा, तुम्हारा नया अस्तित्व उभर कर सामने आएगा, तुम दिव्य तत्व को प्राप्त कर सकोगे... और यही बात जीसस कहते हैं -

"Unless a man is born again, he cannot see the kingdom of god." (John 3:3)

अर्थात् जब तक व्यक्ति खुद को मिटा कर दूसरा जन्म नहीं ले लेता, वह दिव्य तत्व को प्राप्त नहीं कर सकता, वह गुरुत्व को समझ नहीं सकता, गुरु में खुद को समाहित नहीं कर सकता...

गुरु प्रदत्त मंत्र का अर्थ होता है, कि वे केवल कुछ अक्षरों को ढोहराना नहीं सिखा रहे, अपितु अपने प्राणों के धर्षण से तेजस्विता प्रदान कर साधक या शिष्य के अन्दर उत्तार देते हैं।

बीज के अंकृतिर होने से लेकर वृक्ष के बनने के मध्य में निरन्तर सुरक्षा की आवश्यकता होती है,

पोषण की आवश्यकता होती है। साधक का पोषण होता है 'ध्यान' से और यह सुरक्षा मिलती है उस 'मंत्र-जप' से, जिसका उपदेश सद्गुरुदेव के श्रीमुख से प्राप्त होता है।

कौन है तुम्हारा गुरु -

'गुरु' शब्द बड़ा ही प्यारा है। यूनानी भाषा में इसका अर्थ है 'शून्य' और सही अर्थों में देखा जाए, तो शून्य से अधिक विस्तार लिये हुए कोई चीज होती भी नहीं... इसीलिए तो ऋषियों ने ब्रह्माण्ड को 'शून्य' कहकर सम्बोधित किया है...

और वास्तव में गुरु वह होता है, जो समस्त ब्रह्माण्ड को अपने अन्दर समाहित किए होता है, जो सत्य स्वरूप होता है, सत् चित् आनन्द स्वरूप होता है, पूर्ण ब्रह्म स्वरूप होता है।

गुरु वह होता है, जो व्यक्ति को प्रबोधित करता है, उसको प्रबोध देता है, वही शिष्य के झूठे सामान्य व्यक्तित्व को नष्ट कर उसे उसके वास्तविक दिव्य अस्तित्व से परिचित कराता है। इसीलिए उसे 'प्रबोधक' भी कहा जाता है...

और यह 'प्रबोधक' अपनी दोनों बोहं फैलाए आतुरता से व्यक्ति को उसकी समस्त न्यूनताओं समेत अपने में समाहित करने के लिए तत्पर रहता है...

ध्यान रहे, सागर कभी यह नहीं कहता, कि यह नदी बड़ी गंदी है, बड़ी प्रदूषित है, मैं इसको नहीं अपनाऊंगा, मैं इसे अपने में नहीं समेटूंगा...

और गुरु भी व्यक्ति की न्यूनताओं, उसकी तुच्छता के विष को पीते हुए भी उसे अपने अंक में समेट लेते हैं... तभी तो कुरान कहता है :

बिस्मिल्लाहि अर्रू रहमानि अल्लाहिमि

शुरू करता हूं उस 'परम तत्व' के नाम से, जो कि मात्र दाता और अपार करुणावान है...

यह गुरु की अपार करुणा ही है, कि वह ब्रह्मत्व की उच्चतम, आनन्दप्रद स्थिति से नीचे उतर कर तुम्हारे स्तर पर खड़ा होकर, बीच के सभी फासलों को मिटा कर तुम्हें प्रबोध देने की चेष्टा करता है...

एक भिखारी किसी भी हालत में सम्राट के सामने जाकर अपने मन की बात नहीं कह सकता, क्योंकि उन दोनों में

फासला इतना है, कि भिखारी हतप्रभ हो जाएगा, हक्काने लग जाएगा और अगर हिम्मत करके कुछ कहे भी, तो वे शब्द आधे-अधरे ही रहेंगे।

इसीलिए एक बड़ा ही सुन्दर नियम बना रखा था सम्राटों ने, रात को सामान्य आदमी की वेशभूषा में अकेले राज्य के दौर पर निकलते थे, बिल्कुल सामान्य व्यक्ति की तरह... इस तरह से वे लोगों से बात कर पाते थे और लोग भी, बिना किसी हिचकिचाहट के अपनी व्यथा उन्हें बता देते थे, क्योंकि वह उन्हीं के स्तर का व्यक्ति प्रतीत होता था, वहां कोई फासला नहीं दिखता था... और इस तरह सम्राट उनकी दुविधाएं, परेशानियां समझ कर उन्हें दूर करने की चेष्टा करता था।

इसी प्रकार गुरु भी सभी फासलों को मिटा कर सामान्य व्यक्ति की तरह ही जीवन जीता हुआ लोगों के बीच आता है, ताकि वे बिना किसी हिचकिचाहट के उससे सम्पर्कित हो सकें और उससे जुड़ सकें।

इस जुड़ने की ही क्रिया में गुरु उस व्यक्ति को समाप्त कर देता है, उसके झूठे व्यक्तित्व को बुरी तरह से झकझोर देता है, उसके नकली अस्तित्व को उखाड़ कर फेंक देता है, उसे बिल्कुल खत्म कर देता है... ठीक उस समुद्र की भाँति, जो नदी को पूर्ण रूप से समाप्त कर अपने में ही समा लेता है, अपने में पचा लेता है...

...और फिर पहली बार नदी को अहसास होता है, कि वह तो सदैव ही समुद्र रही है, यह नदी का स्वरूप और इधर-उधर बिना दिशा के बोध हुए बहना तो एक स्वप्न, एक भ्रम मात्र था... उसका वास्तविक स्वरूप तो समुद्र ही था और वह समुद्र ही है।

ठीक इसी प्रकार झूठा व्यक्तित्व गिरने के बाद व्यक्ति को, उस शिष्य को पहली बार बोध होता है, कि वह तो गुरु से अभिन्न कभी था ही नहीं, उसका भटकाव तो मात्र उसका अज्ञान था, मात्र एक छलावा था... क्योंकि गुरु तत्त्व से वह कभी अलग था ही नहीं... और तब गुरु और शिष्य में कोई अन्तर नहीं रह जाता और स्वतः ही प्रबोधित शिष्य के कण-कण में 'अहं ब्रह्मास्मि' का भाव नृत्य करने लग जाता है...

...और स्मरण रहे, जो नदी समुद्र में, सागर में पूर्णतः विलीन हो जाती है, वही बाद में वाष्पीकरण क्रिया के फलस्वरूप स्वच्छ, शीतल फुहरों के रूप में लपलपारी धूरी और उजाड़ स्थानों पर बरसती है और उसे पुनः उजाड़ स्थानों एवं सौन्दर्य से युक्त करने में सक्षम होती है...

उपनिषद् का अर्थ है - शुरु के पास जाना और उनके चरणों के समीप बैठना, उस दिव्य ज्ञान को प्राप्त करने के लिए; क्योंकि उस ज्ञान को प्राप्त करने का एक ही माध्यम है 'शुरु'।

चारों तरफ एक मनोहारी सुगन्ध फैल जाती है और सारा वातावरण नृत्यमय हो जाता है...

जो शिष्य गुरु में पूर्णतः लीन है, वही भविष्य में शीतल बयार बन पाता है, शीतल फुहार बन पाता है, युग पुरुष बन पाता है और चतुर्दिक् एक प्रकाश युक्त वातावरण का सृजन कर पाता है...

यह एक अद्भुत क्रिया है कोयले से हीरे होने की, मूढ़ से प्रबोधित होने की... और केवल मात्र गुरु ही इसके जानकार हैं।

समझाओ इस मनवा को

मन तो हवा में लटकते हुए एक धागे के समान है, जिसका एक छोर तो बंधा हुआ है, परन्तु दूसरा छोर हवा में लटक रहा है। यह धागा वातावरण की हलचल से निरन्तर हिलता रहता है। यहीं दौर साधना मार्ग पर गतिशील हुए व्यक्ति के साथ भी आता है, जिसमें यह मन रूपी धागा बार-बार हिलता रहता है, हम निरन्तर संशय-असंशय, तर्क-कुर्तक के धेरों में घिरते चले जाते हैं। हम यहीं चिन्तन रखते हैं, कि अमुक साधना प्रारम्भ तो कर दी, अब देखें क्या होता है और हमारी न्यूनता यहीं से प्रारम्भ हो जाती है। यदि हम अपने मन रूपी धागे को गुरु चरणों में कस कर बांध लें, यदि उस धागे पर निरन्तर गुरु मंत्र रूपी आवरण चढ़ाए रखें, तो यह धागा हिल ही नहीं सकता। हम अपने मन को, अपनी बुद्धि को खाली बैठने ही न दें और जिस तरह एक पहिया धुरी के चारों ओर धूमता रहता है, हमारा मन भी गुरु रूपी धुरी के चारों ओर धूमता रह सके, तो उस मन रूपी धागे पर बाहरी वातावरण का प्रभाव भी नहीं पड़ेगा।

यदि हम अपने गुरुदेव को मन में, प्राणों में, हृदय में समालें, उन्हें अपने दिल की धड़कन बना लें, तभी तो हम गुरु के ज्ञान को अपने अन्दर समाहित कर पाएंगे, फिर सृष्टि के गहराये अपने आप सामने आने लगेंगे, ज्ञान को पुस्तकों के माध्यम से प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं रह जाएगी, प्रत्येक वस्तु में उनके दर्शन होने लग जाएंगे, मन और चित्त को एकाकार करते हुए समाधि की अवस्था को भी प्राप्त कर लेंगे।

साधना शिविर अपके लिए

प्रत्येक पुनीत कार्य के पीछे एक विशिष्ट एवं विराट लक्ष्य होता है, 'यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवतु भारत...' गीता में स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण ने स्पष्ट किया है कि जब जब पृथ्वी पर धर्म की हानि अर्थात् धर्म का हास होता है, तब मैं 'स्वयं अवतरित होकर उसकी रक्षा करता हूँ।' भारत भूमि इस दिशा में सिरमौर रही है, यहां धर्म एवं नीति की जड़ें इतनी गहरी जमी हुई हैं कि देशी और विदेशी आताइयों के लाख तो बहुत ही दूर की बात है।

सनातन संस्कृति पर कुठाराधात

हमारी सनातन संस्कृति आज भी यदि शाश्वत है तो निश्चय ही उसका आधार कहीं बहुत गहरा एवं ठोस धरातल पर रहा है। विश्व का धर्म गुरु बनने के लिये निश्चय ही है, इस संदर्भ में सदा ही भाग्यशाली रही है, किया है, वह जग विदित है। इतना ही नहीं, हमारे अपने ही देश के अन्दर इसी संस्कृति में उत्पन्न और विकसित अनेक धर्म एवं धर्माचार्यों ने मठों एवं मठाधीशों ने अपनी व्यक्तिगत संतुष्टि के लिए नये-नये सम्प्रदायों का अपने नाम से नामकरण किया, अलग मत-मतान्तर चलाकर अपने पीछे लोगों का एक समूह बनाकर गढ़ निर्मित कर लिया, वे चाहे बौद्ध रहे हों अथवा जैन, पारसी रहे हों अथवा मुस्लिम, सिख रहे हों या ईसाई, सभी का मूल उद्गम आर्य संस्कृति ही रही है।

अपनी इस पुनीत सनातन संस्कृति की लोप होती हुई स्वस्थ परम्पराओं की रक्षा करते हुए अपनी आध्यात्मिक दिव्यता को पुनः अपने उसी अलौकिक पुरातन स्वरूप में प्रतिस्थापित करने का यह एक लघु, पर ठोस प्रयास है जिस महायज्ञ में मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान पत्रिका के सभी पाठक एवं पूज्यपाद सद्गुरु डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी के सभी प्रेमी साधक एवं शिष्य एकजुट होकर पिछले अनेक वर्षों से उनके बताये गार्ग पर निरन्तर गतिशील और सेवारत है।

धर्म एवं संस्कृति की रक्षा का बीड़ा

पूज्य गुरुदेव ने गृहस्थ रूप में रहते हुए भी धर्म एवं संस्कृति की रक्षा का जो बीड़ा उठाया, उसकी प्रेरणा एवं आधार उनका संन्यासी रूप परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानन्द ही रहा थिका हुआ है। विश्व का धर्म गुरु बनने के लिये निश्चय ही है, सिद्धाश्रम संस्पर्शित ही नहीं वरन् सिद्धाश्रम के अधिष्ठाता कहीं न कहीं दिव्य प्राणश्चेतना चहिये ही, और हमारी सनातन भारतीय संस्कृति इस संदर्भ में सदा ही भाग्यशाली रही है, महाराज के प्रमुख शिष्य के रूप में वहां के चैतन्य संजीवन जब जब इस पर कहीं से भी कोई चोट हुई, कोई न कोई धर्म प्राण के रूप में आप अपने पूज्य गुरु के आदेश पर वर्तमान गुरु जीवन्त हो उठा और गुमराह की जाने वाली भोली भाली विडम्बाओं एवं विभीषिकाओं से युक्त समाज का जहर पीते हुए जनता को उसके व्यामोह एवं स्वार्थपरता से निकाल कर अपने कर्म महायज्ञ को सम्पन्न करने में पूरे मनोयोग से लग सनातनता का जय घोष देकर लड़खड़ाते पावों को थाम लिया। इस्लाम और ईसाई धर्म ने सैकड़ों वर्षों तक अपने तरीके से हमारी पुरातन पुनीत इस भारतीय संस्कृति पर जो कुठाराधात किया है, वह जग विदित है। इतना ही नहीं, हमारे अपने ही देश के अन्दर इसी संस्कृति में उत्पन्न और विकसित अनेक धर्म एवं धर्माचार्यों ने मठों एवं मठाधीशों ने अपनी व्यक्तिगत किया, अलग मत-मतान्तर चलाकर अपने पीछे लोगों का एक समूह बनाकर गढ़ निर्मित कर लिया, वे चाहे बौद्ध रहे हों अथवा जैन, पारसी रहे हों अथवा मुस्लिम, सिख रहे हों या ईसाई, सभी का मूल उद्गम आर्य संस्कृति ही रही है।

नई पीढ़ी एवं समाज का विकृत रूप

आज आप जिधर भी निकल जायें, विज्ञान एवं भौतिकवाद का भूत अपने खूनी पंजों से सबको दबोचे हुए सब पर हावी है, बेतहाशा लक्ष्यहीन दौड़ में सब लगे हुए हैं, पागल हैं एक रात में लखपति बन कोठी, महल, अटूट धन दौलत सब कुछ

पाने को, धार्मिक मर्यादाएं एवं परम्पराएं ताक में रख छोड़ी हैं, पाश्चात्य चकाचौंध जो स्वयं में प्रताड़ित हो किंकर्तव्य विमूढ़ बन भौचककी है उसकी ही नकल कर हमारी-आपकी पीढ़ी स्वयं के अस्तित्व को दांव पर लगाये मृग मरीचिका का शिकार हो रही है।

इस विडम्बना से तो अपने आपको बचाकर नई पीढ़ी का भविष्य सुरक्षित रखना ही होगा अन्यथा कल की भाँवाँ संतान हमें किसी भी कीमत पर माफ नहीं करेगी, चरमरा कर ढूट जायेगी, हमारी मर्यादाओं एवं परम्पराओं को सभी सीमाएं भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल मुखौटे पर नकली आवरण का कलंक लग जायेगा, धर्माचार्यों के नये नये प्रयोग, उनके रेशमी एवं आडम्बर युक्त परिवेश में बुने गये सब्जबाग धर्म प्रेमी एवं धर्म भीरु जनता को एक ऐसे मोड़ पर ले जाकर ख़ङ्गा कर देंगे जहां से वापिस लौट कर प्रायश्चित करने की भी कोई गुंजाइश बाकी नहीं बचेगी।

अपने आपमें भगवान कहलाने वाले योगी, विदेशों में भारतीय दर्शन के नाम पर दुकान खोले भगवा पहने छद्मवेश धारी योगी हों चाहे साधु संन्यासी, सभी का केन्द्रीयभूत लक्ष्य एक ही है, जल्दी से जल्दी करोड़ों की लागत का आश्रम कैसे भी बना कर अपनी व्यक्तिगत पूजा करा संसार का सारा भोग, ऐश्वर्य स्वयं में समेट लेना।

यही दौड़ संस्कृति के नाम पर भ्रष्टाचार फैला रही है, यही दौड़ राजनैतिक नेताओं एवं व्यापारियों को चैन की नींद नहीं सोने दे रही है, पूरे समाज को भ्रष्टता में डुबो कर रख छोड़ा है, सीधी सच्ची शांत जिन्दगी, सात्त्विक चिन्तन की कल्पना आज सपना हो गई है, आश्रम पर आश्रम बनते जा रहे हैं। लेकिन प्रत्येक की नींव के नीचे दबी हुई वासना, भोग, अहं और सब कुछ हड्डप लेने की भयंकर अजगरी वृत्ति।

कैसे मुक्त होगा आज का यह समाज भ्रष्टता के ताने बाने से

इसी चिन्तन, इसी प्रश्न का तो उत्तर है आपके ये साधना शिविर, जो पूज्यपाद सद्गुरु देव के प्रत्यक्ष संरक्षण एवं दिशा निर्देशन में पिछले कई वर्षों से निरन्तर लगाये जा रहे हैं जिनकी महत्ता एवं सफलता इसी से स्पष्ट है कि इन शिविरों में भाग लेने के लिये भारत के कोने-कोने से और विदेशों तक से साधक और साधिकाएं दौड़-दौड़ कर आते हैं, साधना सम्पन्न करते हैं, और सारे मानसिक तनावों से मुक्त होकर दिन प्रति दिन की भौतिक समस्याओं का समुचित एवं सटीक हल प्राप्त करते हैं, आध्यात्मिक स्तर पर साधना में ब्रह्मानन्द

को प्राप्त हो ज्ञाम-ज्ञाम जाते हैं।

साधना शिविर की प्रमुख विशेषताएं -

साधक साधिकाओं की अनुभूति के आधार पर उन्हें साधना काल में और साधना के उपरान्त प्राप्त हुई उपलब्धियों के आधार पर इन शिविरों की कुछ विशेषताएं पत्रिका पाठकों के लिए स्पष्ट कर देना उचित रहेगा।

भारतीय संस्कृति की आधारभूत-पुरातन विद्याओं की पुनर्स्थापन

इन साधना शिविरों के माध्यम से साधक-साधिकाओं को मंत्र-तंत्र-यंत्र के प्रति भ्रामक चिन्तन एवं प्रचार का पर्दाफाश करते हुए सही दृष्टि देना और सही मूल्यांकन करके लोप होते हुए इस आधार को सशक्त बनाना, सारभूत अपनी भारतीय विद्याओं के प्रति अनास्था एवं अज्ञान से लोगों को बाहर निकाल सही मायनों में इन विद्याओं का रहस्योदयाटन करना।

वैदिक ज्ञान एवं मंत्रों के प्रति लोप होती हुई आस्था को पुनः जगाना

वेदों की गरिमा और मंत्रों के प्रभाव के प्रति पाश्चात्य सभ्यता ने हम भारतीयों को भी गुमराह करके एक बड़ा प्रश्न चिह्न हमीं से हमारे चिन्तन, शाश्वत ज्ञान पर लगवा दिया है जिसे समय रहते यदि हम नहीं हटा सके तो आने वाले कल का नक्शा किसी और रंग से रंगा दिखाई पड़ेगा। इन साधना शिविरों के माध्यम से पूज्य गुरुदेव का प्रयास रहा है कि सही वस्तुस्थिति सबके सामने रखकर मंत्र साधना एवं वैदिक यज्ञ अनुष्ठान सम्पन्न कराते हुए साधारण जन को इनका प्रत्यक्ष लाभ एवं महत्व दिला सकें।

वैदिक यज्ञ एवं अनुष्ठानों के प्रति लोप होती हुई श्रद्धा को पुनः स्थापित करना

वैदिक यज्ञों को सम्पन्न करा कर व्यक्तिगत, राष्ट्रीय स्तर पर समस्याओं का समाधान करके अनुकूलता दिलाना पूज्य गुरुदेव का विशेष लक्ष्य रहा है। उनका दावा है कि आज भी इन यज्ञ और अनुष्ठानों के माध्यम से प्रकृति को वश में करके मन मुताबिक कार्य सम्पन्न कराया जा सकता है। अनेक बार साधक और शिष्यों के बीच ऐसा कराया और किया गया है।

मंत्र आज भी ज्यों के त्यों सजीव एवं शक्तिशाली हैं,

जिन साधकों और साधिकाओं ने तपश्चर्या शिविरों में त्रष्णितुल्य जीवन जी कर भाग लिया है उन्हें मालूम है कि मंत्रों की विस्फोटक शक्ति आज भी गोली की तरह असर करती है,

यज्ञ कुंड में अग्नि आज भी मंत्र से प्रज्वलित होती है, मंत्र से मैं पूर्ण ब्रह्मानन्द की प्राप्ति है, जो साधक एक शिविर में भाग आज भी देवी देवता का आह्वान कर उनसे साक्षात्कार किया ले लता है वहेंसे आनन्द का रसपान कभी जीवन में भुला ही जा सकता है, मंत्रों के माध्यम से सम्मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, नहीं सकता।

विद्वेषण और मारण पहले की भाँति आज भी संभव है, इन गुरु-शिष्य के यथार्थ पावन सम्बन्ध की पुनर्स्थापना शिविरों में अनेक प्रकार के प्रयोग साधकों ने सम्पन्न किये हैं। तंत्र के भ्रामक प्रचार एवं समाज विरोधी अनैतिक तत्वों से मुक्ति

तंत्र सही मायनों में साधना की एक विशिष्ट पद्धति है जिसके माध्यम से अपने शरीरगत सभी नाड़ी संस्थानों को विशेष रूप में क्रियाशील करके तुरन्त सफलता पाई जाती है। मांस, मदिरा, सम्भोग की आड़ लेकर भोग लिप्सा में लिस भ्रष्ट लोगों ने अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिये तंत्र के प्रति लोगों में

एक भयावह चिन्तन एवं डर व्याप कर दिया है ताकि उनका प्रभाव भोली भाली जनता पर बना रहे, वरना शास्त्रों में कहीं पर भी इन वस्तुओं की तंत्र में आवश्यकता नहीं बताई है, इन शिविरों में साधक और महिला साधिकाओं ने साथ-साथ तंत्र साधना में भाग लेते हुए पूर्ण सात्त्विक एवं मर्यादित जीवन में रह कर पूर्ण सफलता प्राप्त की है।

भूत-प्रेत, पिशाच योनियों के प्रति स्वस्थ चिन्तन का श्रीगणेश

इन साधना शिविरों के माध्यम से भूत सिद्धि साधना सम्पन्न करते हुए, साधकों को पहली बार आभास कराया गया कि भूत-प्रेत पिशाच भी मनुष्य की तरह ही भिन्न योनियां होती हैं जो पूर्णतया, समर्पित और विश्वनीय हैं, इनसे मनुष्य का कोई अहित नहीं होता उल्टे वह इन्हें सिद्ध कर अपने जीवन में इनसे कार्य लेता हुआ उन्हें मुक्ति प्रदान करने में समर्थ और सफल होता है।

हिमालय स्थित योगी ऋषि, मुनियों की गोपनीय साधनाओं को सम्पन्न कराना

गृहस्थ शिष्य एवं साधक साधिकाओं को गृहस्थ के सब साक्षीभूत होकर एक बार, कम से कम एक बार अवैश्य ही दायित्व निभाते हुए भी महाविद्या साधना, शिव साधना, दुर्गा साधना, भूत भविष्य सम्बन्धी, पंचांगुली साधना, महालक्ष्मी कर तपश्चर्चर्या भवन में बैठकर ऋषितुल्य स्वरूप में मंत्रजाप, साधना, महाकाली साधना, भैरव साधना, साबर मंत्र साधना, योग-आसन, मुद्राएं प्राणायाम करके आप किंतना सुकून आयुर्वेद साधना, हादी-कादी, पर कांया प्रवेश, आदि साधनाएं महसूस करते हैं, आपको लगेगा कि निश्चय ही यही वह सम्पन्न करा कर सिद्ध एवं सक्षम बनाना और अपनी इस जीवन है जो अपने आप में सार्थक और सही है, गृहस्थ में गौरवशाली विद्या की थाती को जीवित बनाये रखना यही पूज्य रहते हुए इस ज्ञानन्द का भी साल में एक दो बार रसपान गुरुदेव का इन शिविरों के माध्यम से अचूक लक्ष्य रहा है। अवैश्य करें ताकि ये सिद्धियां आपके जीवन को संवार और उनका तो हर पल यही कथन है कि ये साधना ही अपने आप सजाकर भोग और मोक्ष दोनों में ही पूर्णता प्रदान कर सकें।

शास्त्रोक्त गुरु दीक्षा के माध्यम से पूज्य गुरुदेव अपने शिष्य को पुत्रवत् मातृवत् ममत्व प्रदान कर सीने से लगा आशीर्वाद एवं शक्तिपात्र क्रिया से उसके पापों का क्षय कर उसे उच्च जीवन प्रदान करते हैं, साधनाओं के द्वारा उसे स्वयं का लोध करा छुट्टातत्व की ओर अग्रसर करते हैं, शिष्य उनके चरणों में बैठकर अपना जीवन धन्य समझता है।

सूर्य सिद्धान्त एवं संजीवनी क्रिया से आज के विज्ञान को भी चुनौती

अमरीका में इस सिद्धान्त का प्रतिपादन एक शिविर में करके पूज्यपाद गुरुदेव ने अमेरिकावासियों को और दुनिया के सभी वैज्ञानिकों को मंत्र मुण्ड करके आश्चर्य में डाल दिया; जो विज्ञान को अभी भी करने में सैकड़ों साल लगेंगे, फिर भी कर पाये यह संभावना नहीं की जा सकती, आज मंत्र एवं सूर्य सिद्धान्त के माध्यम से सिद्धहस्त साधक कुछ ही क्षणों में करके दिखा सकता है।

भोग और मोक्ष की प्राप्ति

अनास्यावादी आज की पीढ़ी जो हर कदम पर वैज्ञानिकता का दम भरती है, इन साधना शिविरों में भाग लेकर नतमस्तक हो जाती है, सारा गुरुर उसको धुएं के बादल सा उड़ जाता है, फिर भी जिद्धकी प्रवृत्ति जहर उगलने की है, उन्हें आप कितना ही दूध पिलायें, वे तो जहर उगलेंगे ही। वणिक वृत्ति के आधार पर पैसों के बल से सिद्धियां खरीदना चाहेंगे, स्वयं अकर्मण बन कर पंडितों से मंत्र जाप करा कर पूजा फल चाहेंगे, ऐसे लोग स्वयं तो भ्रम के शिकार हो गुमराह होते ही हैं, दूसरों को भी गुहराह करने से बाज नहीं आते। आप स्वयं

गुरुर्धाम जोधपुर

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं
सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध चैतन्य दिव्य भूमि

पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के
लिए यह योजना प्रारंभ हुई है।
इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों
पर जोधपुर 'सिद्धाश्रम' में
पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये
साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के
साथ सम्पन्न कराई जाती हैं,
जो कि उस दिन शाम 6 से 8
बजे के बीच सम्पन्न होती हैं।
यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो
उसी दिन से साधनाओं में
सिद्ध का अनुभव भी होने
लगता है।

शनिवार, 10-04-10

तारा साधना
तारा के सिद्ध साधक के बारे में प्रचलित है, कि वह
जब प्रातः उठता है, तो उसे सिरहाने नित्य दो तोला
स्वर्ण प्राप्त होता है। भगवती तारा नित्य ही अपने साधक
को स्वर्णभूषणों का उपहार देती है। तारा महाविद्या
दस महाविद्याओं में एक श्रेष्ठ महाविद्या है। तारा साधना
को प्राप्त करने के बाद साधक के जीवन में अर्थ का
अभाव समाप्त हो जाता है। तारा साधना प्राप्त करने के
बाद साधक को जहां आकस्मिक धन प्राप्ति के योग
बनने लगते हैं, वहीं उसके अन्दर ज्ञान के बीज का भी
प्रस्फुटन होने लगता है, जिसके फलस्वरूप उसके सामने
भूत-भविष्य के अनेकों रहस्य यदा-कदा प्रकट होने
लगते हैं। तारा साधना प्राप्त करने के बाद साधक का
सिद्धाश्रम प्राप्ति का लक्ष्य भी प्रशस्त होता है।

शुक्रवार, 09-04-10

नाभिदर्शना अप्सरा प्रत्यक्षीकरण प्रयोग
जिस प्रकार अन्य साधनाएं महत्वपूर्ण हैं, उसी प्रकार साधक के जीवन में सौन्दर्य का
भी विशेष महत्व है, क्योंकि जिस मनुष्य में रस नहीं है, प्रेम नहीं है वह किसी अन्य
साधना में भी सफल नहीं हो सकता है। किसी कवि ने कहा भी है - 'मनुष्य नहीं, वो ठूंठ
है, बहती जिसमें रसधार नहीं।' अप्सरा साधना जहां देवताओं के लिए उचित मानी गई
है, वही मनुष्य के लिए भी अत्यंत अनुकूल मानी गई है। इन्द्र दरबार की 108 अप्सराओं
में नाभिदर्शना अपने आप में ही चिरयौवन, तरुणाई, और मादकता का साकार स्वरूप है।
नृत्यकला, संगीत एवं मधुर वार्ता में निपुण यह अप्सरा अपने साधक को जीवन में हर
प्रकार के भोग प्रदान करती है। साधक के जीवन में धन की प्राप्ति इस साधना से स्वतः ही
हो जाती है। अपनी देहयष्टि, रूप, हाव-भाव, हास्य-विनोद की शैली, सुरुचि प्रियता,
श्रृंगार शैली से नाभिदर्शना अपने साधक को बरबस ही मुग्ध कर देती है। नाभिदर्शना की
साधना मूलतः प्रिया अथवा मित्र रूप में सम्पन्न करने पर ही शीघ्र सफल होती है।

रविवार, 11-04-10

विष्णु वैश्व भाव साधना
भगवान विष्णु सकल जगत को चलाने वाले आदिदेव हैं। उनकी
साधना करने से साधक को हर कार्य में पूर्ण सफलता मिलती है,
क्योंकि समस्त कार्य मात्र भगवान विष्णु की शक्ति से ही गतिशील
हैं। किसी भी मनोकामना को लेकर सम्पन्न की गई इस साधना के
माध्यम से साधक के संकल्पित कार्य पूर्ण होते हैं। इस साधना
को सम्पन्न करने से साधक का व्यक्तित्व भी आकर्षक हो जाता है,
जिसके कारण उसे अनेकों लाभ प्राप्त होते हैं। भगवान विष्णु यदि
प्रसन्न हो जायें, तो उनकी सहचरी भगवती लक्ष्मी तो स्वतः ही
सिद्ध हो जाती हैं, और इस प्रकार साधक के जीवन में दिरिद्रता का
तो समापन हो ही जाता है। यदि व्यापार है, तो उसमें बरकत
होती है, यदि नौकरीपेशा हैं तो तरक्की होती है। यह साधना जहां
पूर्ण भौतिक उन्नति का साधन है, बेरोजगार के लिए व्यवसाय का
उपाय है, वहीं इस साधना से मोक्ष मार्ग भी प्रशस्त होता है।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

1. आप अपने किन्हीं द्वे मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर जोधपुर, गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की एक सदस्यता का वार्षिक शुल्क रुपये 303/- है, जबकि आपको दो सदस्यों का शुल्क मात्र रुपये 570/- ही जमा करवाना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि)* आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

2. यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका की वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

3. पत्रिका-सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को ऋषि-परम्परा की इस पावन साधनात्मक ज्ञान-धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क हैं और गुरु-कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर-राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है कि मंदिर में मंत्र-जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है; यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें तो; और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है, यदि साधक गुरु-चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करें; और यदि गुरुदेव अपने आश्रम, अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें तो इससे बड़ा सौभाग्य तो और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सद्गुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर, प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु-चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है तो उसके सौभाग्य से देवगण भी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ-स्थल पुण्यप्रद हैं, पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सद्गुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु-चरणों में उपस्थित होकर गुरु-मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी जोधपुर गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

योजना केवल इन 3 दिनों के लिये 09-10-11 अप्रैल 2010

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क $300 \times 5 = \text{Rs. } 1500/-$ जमा करा के या उपरोक्त राशि का बैंक डाफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखवाकर उपराहर स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों की सदस्यता शुल्क की राशि का ड्राफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर जोधपुर कार्यालय के पते पर भेजें। आपका फोटो, पांच सदस्यों के नाम, पते एवं ड्राफ्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही प्राप्त हो जाने चाहिए। पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा संभव न हो सकेगी। यदि राशि मनीऑर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीऑर्डर जोधपुर कार्यालय भेजें।

* दीक्षा आज के कुमा में एक प्रामाणिक उपयोग सफलता की ऊँचाईयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभाव को, अधूरेपन को दूर कर देने का, जीवन में अतुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं शैर्य प्राप्त कर लेने का, साधना में सिद्धि प्राप्त कर लेने का ...।

* गुरु-प्रदत्त शक्तिपात्र द्वारा शिष्य जिस कार्य हेतु जो दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें निपुणता प्राप्त कर लेता है, क्योंकि वह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का एक लघु उपाय है ...

* दीक्षा में भाग लेने वाले साधकों को जल में अमृत-अभिषेक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात्र प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा इन तीनों दिवसों में सायं ७ बजे प्रदान की जाएगी।

शक्तिपात्र युक्त दीक्षा

गणपति दीक्षा

गणपति दीक्षा प्राप्त करना साधक के लिये कल्पवृक्ष के समान फलप्रदायक है। गणपति सभी प्रकार के भौतिक सुखों के प्रदाता, विद्वन्हर्ता तथा ऋष्णहर्ता हैं। गणपति दीक्षा प्राप्त करने से साधक को समस्त भौतिक सुख-सम्पत्ति, समस्त नौ निष्ठियां प्राप्त होती हैं। गणपति विद्या के आधार हैं, अतः वे अपने साधक को कुशाग्र बुद्धि प्रदान करते हैं, और इसके साथ ही साथ ऑकारवद् होने के कारण अपने साधक को आष्टाटिमिक रूप से भी परिपूर्ण करते हैं। गणपति के परिवार में ऋष्ण-सिद्धि और शुभ-लाभ हैं। अतः गणपति दीक्षा से दूर में सम्पत्ति वृद्धि होती है, कार्य में सिद्धि प्राप्त होती है, व्यापार में लाभ होता है तथा शुभ कार्य सम्पन्न होते हैं। अतः गणपति दीक्षा कलियुग की सर्वश्रेष्ठ दीक्षा मानी गई है और इस बार नवरात्रि से पहले यह दीक्षा प्राप्त होना श्रेष्ठ सौभाग्य है।

महाकाली यंत्र

जीवन में अगर चारों ओर से निराशा घिर आई है, कोई भी काम सही ढंग से नहीं हो रहा है, रोग, दरिद्रता, परेशानियों ने घर में निवास कर लिया हो, तो इससे उत्तम कोई यंत्र नहीं है। महाकाली यंत्र द्वारा जीवन में पूर्णता प्राप्त करने का एक अद्भुत उपाय है, जिसे केवल दैवीय शक्ति से ही प्राप्त किया जा सकता है।

इस प्रयोग से जहां व्यक्ति को धन लाभ, ऐश्वर्य, यश, कीर्ति प्राप्त होती है, वहीं व्यक्ति आरोग्य प्राप्त करता हुआ अपने समस्त शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल होता है। यह प्रयोग रात्रि में दस बजे के उपरान्त, लाल आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर सम्पन्न किया जाता है। इसमें अपने सामने बाजौट पर लाल वस्त्र बिछाकर 'महाकाली यंत्र' को स्थापित कर उसका पंचोपचार पूजन करें, दीपक प्रज्वलित करके निम्न मंत्र का 40 मिनट तक 'काली हकीक माला' से यंत्र को देखते हुए हुए मंत्र जप करें -

मंत्र : // ॐ क्रीं कालि ऊर्ध्वोदितायै ॐ फट् //

ऐसा चार मंगलवार नियम पूर्व करें। उसके पश्चात् यंत्र तथा माला को किसी जल सरोवर में अर्पित कर दें और घर पर 08-15 वर्ष की किसी छोटी बालिका को भोजन एवं उपहार भेट करें। ऐसा करने से यह प्रयोग सफल होता है, और व्यक्ति अपने जीवन में निरन्तर ऊंचाइयों की ओर अग्रसर रहता है।

जीवन का सर्वश्रेष्ठदान - 'ज्ञानदान'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

क्या करें आप?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि 'मैं यह अद्वितीय उपहार प्राप्त करना चाहता हूं एवं 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप नि:शुल्क मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'महाकाली यंत्र एवं माला' 492/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 402/- + डाक व्यय 90/-) को वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूंगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें', आपका पत्र आने पर हम 402/- + डाक व्यय 90/- = 492/- की वी. पी. पी. से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'महाकाली यंत्र एवं माला' भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

-: सम्पर्क :-

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफैक्स - 0291 - 2432010

7 मार्च 2010

नवग्रह शांति साधना शिविर, मुम्बई

शिविर स्थल: रेल्वे टेलफेयर हॉल, मध्य रेल्वे वर्क शॉप, अम्बेडकर रोड, वी.आई.पी. शोरूम के सामने, परेल (ईस्ट), मुम्बई

आयोजक: दिलीप शर्मा - 098678-386830 तुलसी महतो - 099671-638650 पियुष एवं मानवेन्द्र - 093217-883140 जयश्री एवं राकेश सोलंकी 0 सक्सेना परिवार 0 एस.सी.कालरा 0 देवेन्द्र एवं अलका पंचाल 0 योगेश मिश्रा 0 राकेश तिवारी 0 बुद्धीराम पाण्डेय 0 अमरजीत 0 राहुल पाण्डेय 0 दीपक तिवारी 0 नागसेन 0 अजय 0 संतलाल पाल 0 श्रीराम एवं रमैया 0 भासकरन परिवार 0 लोबो जी 0 अनिल कुंभाटे 0 द्विवेदी जी 0 सूर्यकांत गुप्ता 0 अनिता एवं हंसराज भारद्वाज 0 राजकुमार शर्मा 0 प्रीतम भारद्वाज 0 पुष्पा गोपाल पाण्डेय 0 गोपाल पाण्डेय 0 कवठे परिवार 0 जगदीश पारेख 0 मूलचंद जी 0 जगदीश भाई 0 नटु भाई 0 अनिल भंगेरा 0 गंगा बेन एवं धनराज 0 दयालकर परिवार 0 सुशीला बेन एवं परिवार 0 धनाजी 0 विश्वकर्मा परिवार 0 धनाजी 0 गुरमीत 0 सुजीत 0 वृद्धावन 0 हरे कृष्ण पांडा 0 वसंत पुरबिया 0 जितेन्द्र 0 विलास 0 आनंद 0 यशवंत 0 पाठक परिवार 0 राजकुमार मिश्रा 0 निशा एवं वंदना बेन 0 सुधीर सेठिया 0 सुनील भाई 0 मंगला एवं एस.एम. चित्ते 0 हंसल सागिया 0 विरेन्द्र जी 0 संतोष तिवारी 0 अनुज तिवारी 0 सतीश भाई 0 तनुज महाशब्दे 0 संजीव झा 0 रवि साहू 0 एस.के. यादव 0 विकरांत 0 विकास भारद्वाज 0 वंदना जी 0 लम्बेर सिंह एवं परिवार 0 पंकज बगुल 0 सुनैना 0 योगेन्द्र शर्मा 0 धुब्र एवं परिवार 0 राहुल पाण्डेय 0 चंद्रकांत डांडे 0 सी. मिश्रा 0 शैलेश भाई 0 आर.एस. उपाध्याय 0 दिनेश भाई 0 अशोक 0 करिसा बेन 0 कलपेश तिवारी 0 जैसवाल जी 0 जांगले जी 0 धुरा परमार 0 गोपाल पंडया 0 परेश शाह 0 अरिवन्द अरोडा 0 चितरंजन दूबे 0 धरणीधर दूबे 0 प्रमोद दूबे 0 दयालाल जी 0 भावेश लाल 0 डॉ. शिंदे 0 शिव पूजन चौहान 0 शैलेश पटेल 0 राजेश यादव 0 उत्तम भाई 0 संतोष मौर्या 0 स्मिता 0 विजय गिरकट 0 संदीप भाई 0 जयंत मेहता 0 जयेन्द्र मेवाडा 0 जय भाई 0 मांजरेकर बेन 0 छाया बेन 0 गोपाल अग्रवाल 0 राकेश भाई 0 रिभुनाथ मिश्रा 0 गुडा भाई 0 नागेश 0 अशोक मास्टर 0 भोला शंकर सिंह 0 दिलीप कांझले 0 दिनेश राठौड़ 0 डॉ. पोदवार 0 कलवंत जी 0 मनोज भाई 0 मोनिका 0

A decorative horizontal line consisting of a series of diamond shapes of varying sizes, creating a repeating pattern across the width of the page.

16-17 मार्च 2010

दस महाविद्या साधना शिविर, गोरखपूर

शिविर स्थल: जी.डी.ए ग्राउण्ड, चम्पा देवी पार्क के पास, रामगढ़ ताल, पैंडुलगंज, गोरखपुर (उ.प.)

आयोजक: गोरखपुर: रामनारायण पटवा - 090059-38326 ○
आनंद तिवारी - 099363-52661 ○ हरि नारायण सिंह बिसेन -
094153-18363 ○ सुजीत राय - 099567-63778 ○ जीतनारायण
शुक्ला - 093350-86645 ○ राज कुमार राय - 094526-57585 ○
श्रीमती छाया सिंह - 094156-35641 ○ अंजय राय - 094541-
67052 ○ मोती चौहान - 099359-08437 ○ दुर्गा सिंह - 097949-
01349 ○ सुशील - 092352-86528 ○ विजय मद्देशिया - 099354-
30463 ○ पन्नालाल निषाद - 093417-81882 ○ दिग्विजय राय -
099363-26205 ○ रविशंकर मिश्र - 099567-50969 ○ अरविन्द
तिवारी - 096515-21454 ○ विजय यादव - 098109-87704 ○ संजय
राय - 094156-55338 ○ दुर्गा मौर्य - 094546-18123 ○ दिग्विजय
नाथ दूबे - 094507-37781 ○ राममूरत यादव - 099565-27846 ○
सुरेश श्रीवास्तव - 094158-50928 ○ लड्डूलाल यादव - 098385-
78472 ○ डॉ. एम. के. तिवारी - 098916-04043 ○ राजदेव शर्मा
- 094533-10437 ○ विरेन्द्र शाही - 099368-58949 ○ नित्यानन्द
मिश्र - 099567-50969 ○ श्रीकृष्ण यादव - 096958-20122 ○
राममनोहर त्रिपाठी - 099366-68250 ○ दिलीप तिवारी - 097930-
97797 ○ परशुराम यादव - 096216-48927 ○ आलोक तिवारी -
098180-77732 ○ सलिलेश त्रिपाठी - 092122-28473 ○ ओम
प्रकाश शाही - 099355-43929 ○ चौधरी मोदलवाल - 099365-
70355 ○ रामजीत यादव - 094523-40955 ○ अंजन शाही - 090051-
48676 ○ संतोष राय - 097952-82435 ○ रामकेश - 094550-
44014 ○ राजेन्द्र तिवारी - 094151-65411 ○ दया शंकर तिवारी
- 096517-93883 ○ अश्वनी राय - 094530-58051 ○ मुकेश
विश्वकर्मा - 099353-15801 ○ रविशंकर यादव - 097942-
82436 ○ अवधेश प्रताप सिंह - 094509-21634 ○ महेन्द्र प्रताप
सिंह - 094156-94004 ○ नागेन्द्र शर्मा ○ सुरेश गुप्ता - 099367-
19696 ○ राकेश कुमार यादव - 094504-41211 ○ शक्ति प्रताप
सिंह - 098389-25957 ○ राजेंश सिंह - 096755-01611 ○ लक्ष्मी
नारायण यादव - 093369-37214 ○ योगेश श्रीवास्तव - 099198-
55755 ○ पंकज कुमार सिंह - 094530-02455 ○ अंकुर श्रीवास्तव
- 097957-96753 ○ सिद्धाश्रम साधक परिवार - वाराणसी,
नेपाल, बिहार, झारखण्ड व छत्तीसगढ़ ○ बस्ती: दिनेश
चन्द्र पाण्डेय - 099185-04677 ○ सत्य कुमार अग्रहरी - 098395-
52852 ○ उदय शंकर पाण्डेय - 099180-92278 ○ प्रभाकान्त

पाण्डेय - 098898-92007 ○ गंगाराम वर्मा ○ जैनेन्द्र कुमार सिंह - 099352-76138 ○ विद्यासागर - 098384-51433 ○ संतकबीर नगर: डॉ. चन्द्र प्रकाश - 098382-62775 ○ अश्वनी कुमार - 090051-11867 ○ आर.पी. पाण्डेय - 096510-02288 ○ फैजाबाद: ईश्वर प्रसाद सिंह - 094503-05453 ○ रणविजय सिंह - 094157-19092 ○ राधवेन्द्र सिंह - 094524-89525 ○ श्रीमती इन्दूमती सिंह ○ जय प्रकाश पांडे ○ आशीष शंकर मौर्य - 093367-05965 ○ रामनगर/अम्बेडकर नगर: अच्छेलाल यादव - 094505-32131 ○ कैलाश सिंह - 099187-96838 ○ इन्द्रजीत सिंह - 094514-23304 ○ देवरिया: अरविन्द कुमार वर्मा - 097947-58265 ○ आजमगढ़: फौजदार सिंह - 094507-31922 ○ राजेन्द्र सिंह - 094500-28622 ○ जोखन यादव - 094523-41592 ○ अभय नारायण सिंह - 094507-37543 ○ लखनऊ: राजबीर सिंह - 098380-87024 ○ अजय सिंह - 094159-35788 ○ उमेश तिवारी - 098380-01375 ○ परशुराम चौरसिया ○ औरैया: गोकरण सिंह - 094127-05845 ○ मुम्बई: श्रीमती पुष्पा गोपाल पाण्डेय - 099607-19101 ○ गंगा मध्देशिया - 098678-84328 ○ मुगलसराय: सुनील सेठ - 094156-22157 ○ शिवकुमार जायसवाल - 099352-61012 ○ क्षितिज कान्त केशरी - 094156-22121 ○ पटना: डॉ.वी.के.आर्या - 093088-91649 ○ हरिद्वार: संजय मिश्रा - 093193-72844 ○ रायबरेली: मोहल लाल वर्मा - 094157-22805 ○ जगदम्बा सिंह - 098383-90535 ○ श्रीमती उषा सिंह ○ सुल्तानपुर: प्रकाश यादव - 094533-42189 ○ इलाहाबाद: ओमप्रकाश पाण्डेय - 090053-07769 ○ शाहजहांपुर: प्रमोद मिश्रा - 094504-19596 ○ रामबाबू सक्सेना - 092081-78719 ○ श्रीकृष्ण वर्मा - 0584-2650428 ○ एस.पी.वर्मा - 093351-69869 ○ लखीमपुर: अनिल गुप्ता - 093368-47800 ○ सुरेश कश्यप ○ रामदेश वर्मा ○ सीतापुर: रामसिंह राठौर - 094517-67370 ○ के.के.निखिल - 099356-59468 ○ बरेली: एम.पी.सिंह - 094125-10771 ○ श्रीमती कमला मलिक - 097619-84527 ○ वीसलपुर: श्याम कुमार निखिल - 097617-49450 ○ रामकृष्ण वर्मा - 094128-70223 ○ रमाकान्त शुक्ला ○ पूरनपुर: मोहन प्रधान - 094124-51424 ○ किंच्छा: अरविन्द अरोड़ा - 095686-16494 ○ कायमगंज: प्रदीप भारद्वाज - 094118-48222 ○ सुभाष चन्द्र सैनी ○ रतन सिंह ○ राजेश कुमार शर्मा ○ अलीगढ़: सुशील कुमार - 093190-56354 ○ फस्खाबाद: संतोष कुमार भारद्वाज - 098388-89869 ○ काशीराम नगर: महावीर सिंह शाक्य - 093364-85503 ○ आगरा: जया बहन जी - 094112-06768 ○ एटा: अनिल अग्निहोत्री - 094574-40155 ○ मैनपरी: नरेन्द्र कुमार तिवारी - 099975-

20-21 अप्रैल 2010

निखिल जन्मोत्सव एवं

साधना शिविर, पटना

शिविर स्थल: गांधी मैदान, पटना, बिहार

आयोजक: पटना: डॉ. वी.के. आर्य - 092348-88896 ○ वीरेन्द्र महतो - 094310-62935 ○ चन्द्रिका प्रसाद - 099310-24019 ○ कामता प्रसाद - 098354-46374 ○ गणेश कुमार - 098354-23161 ○ दीपक कुमार - 099340-81273 ○ बालाजी सहाय - 099348-78588 ○ महेन्द्र पाल सिंह - 093006-36295 ○ राकेश वल्लभ - 098352-00701 ○ अशोक कुमार सिंह - 093341-14497 ○ रूप नारायण सिंह - 095592-57982 ○ नागेश्वर प्रसाद - 098354-03420 ○ नवल यादव - 099392-07583 ○ राजेश कुमार - 098352-73303 ○ नीलिमा कुमारी - 093040-05308 ○ मुरलीधर प्रसाद - 092348-65952 ○ पुनम देवी - 094308-32818 ○ विजय कुमार सिंह - 094310-49232 ○ शैलेन्द्र कुमार सिंह - 094310-04452 ○ जयप्रकाश लाल - 092346-93734 ○ मधु श्रीवास्तव - 093341-64335 ○ संजय सिंह - 099346-82563 ○ अनिल कुमार सिंह - 096574-85882 ○ राधमोहन - 093345-58265 ○ रामचन्द्र पंडित - 090977-70971 ○ अर्चना कुमारी - 093893-42424 ○ विनय कुमार - 093349-76516 ○ सच्चिदानन्द सिंह - 093043-34340 ○ सृष्टिधर झा - 099346-92387 ○ सुरेन्द्र तिवारी - 098388-61093 ○ आभा रानी - 093342-76628 ○ करुणा देवी ○ प्रमिला सिन्हा - 092790-06463 ○ केदार प्रसाद - 093342-49394 ○ कुन्दन कुमार - 099319-18143 ○ नीलम देवी - 099550-26024 ○ शशि भूषण प्रसाद सिंह - 099340-81269 ○ मीना कुमारी - 093342-74952 ○ गेविन्द सिंह - 098352-79251 ○ मन्दु प्रजापति - 094314-94525 ○ रंजीत कुमार - 099052-47169 ○ लक्ष्मी नारायण - 092345-62812 ○ दिलीप शर्मा - 099347-78001 ○ अशोक कुमार पाण्डेय - 099399-91651 ○ निर्मल कुमार 'पंकज' ○ सुमन सेनगुप्ता - 093130-04523 ○ अंतर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार, पटना ○ खगड़िया: राम मनोहर प्रसाद ○ डॉ. सी.डी. सिंह ○ डॉ. अशोक कुमार ○ अनिरुद्ध झा ○ मुखिया, मुन्त्री देवी ○ दिवाकर मिश्र ○ नीतेश कुमार सिंह ○ शिवनाथ चौधरी ○ महेन्द्र चौधरी ○ विजय कासरी ○ नबोध यादव ○ प्रकाश चौधरी ○ कुशव सिंह ○ वेदानन्द सिंह ○ दिनेश गुप्ता ○ प्राण वल्लभ सिंह ○ अजीत सिंह ○ मनोहर सिंह ○ देवेन्द्र गुप्ता

○रामानन्द शर्मा ○विजय राय ○विरेन्द्र चौधरी ○शंभू चौधरी
○आशीष यादव ○बलराम पंडित ○राजेश दास
○अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार, खगड़िया ○मानसी:
भूषण शर्मा ○बेगूसराय: गिरीश कुमार ○आशा देवी ○पप्पु
कुमार ○रतन कुमार 'दिनकर' ○श्रवण चौधरी ○भोला सिन्हा
○वाल्मीकी प्रसाद दास ○उषा किरण ○नंदलाल ○रामशरण
दास ○रोचक सिंह ○संतोष कुमार ○शैल कुमारी वर्मा ○मनोज
कुमार तौति ○मुकेश कुमार निखिल ○फतुहाँ: रजनीश कुमार
○अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार, फतुहाँ ○मोकामा:
योगेन्द्र - 093081-89682 ○अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक
परिवार, मोकामा ○हाजीपुर: अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक
परिवार, हाजीपुर ○विद्वुपुर: डॉ. उमाशंकर ○कोढ़ा: नरेश
कुमार - 06457-260413 ○डॉ. ललीत अग्रवाल - 093085-
53680 ○पूर्णियाँ: जटा शंकर ○शेखपुरा: संतोष कुमार - 092434-
25629 ○समस्तीपुर: शैलेन्द्र दास - 099399-89400 ○आनन्द
गौतम - 099318-65289 ○दरभंगा: प्रभाश कुमार वर्मा - 094316-
91440 ○गंया: डॉ. उमाशंकर - 094312-24256 ○बिहार शरीफ:
विपीन कुमार - 099346-16523 ○छपरा: धनंजय कुमार - 094313-
56415 ○सुपौल: श्रीप्रसाद विश्वास - 094310-68425 ○बक्सर:
अमरेन्द्र कुमार सिंह - 091621-55183 ○लगनियाँ (मधुबनी):
अरुण सिंह - 099310-41192 ○रुन्नी सैदपुर: हरिकिशोर मंडल
- 094312-75415 ○शिवहर: प्रमोद कुमार गुप्ता ○मुजफ्फरपुर:
प्रवेश कुमार श्रीवास्तव - 097717-18333 ○प्रियरंजन राज -
095762-76599 ○अनीता श्रीवास्तव - 094718-84878 ○सुरेश
कुमार दिवाकर - 093343-03554 ○सुरेश चौधरी ○रांची:
बालमुकुन्द साह देव - 094315-88358 ○मोहन शर्मा - 094311-
75892 ○इन्द्रजीत राय - 097981-42521 ○बुन्दु: डॉ. राजेन्द्र
कुमार हाजरा - 099055-52281 ○गुमला: विरबल भगत ○फुसरो:
भगवान दास - 099341-17533 ○बोकारो: पी.एन.पाण्डे - 094311-
27345 ○ए.के.सिंह - 094703-56313 ○विजय कुमार झा - 094313-
79234 ○दिलीप कुमार सिन्हा - 090317-12191 ○धनबाद:
यु.पी.सिंह - 097085-18798 ○अरुण सिंह - 094317-
31522 ○टाटानगर: वाई.एम. मूर्ति - 093047-90006 ○धाटशिला:
बी.एन.पाठक ○हंटरगंज: विकास कुमार सिन्हा - 094709-
66147 ○कतरास: जे.पी.सिंह - 092347-94944 ○सीजुआ:
आर.के.राय - 094319-54268 ○नागपुर: राजेन्द्र सिंह सिंगर -
098230-19750 ○बासुदेव ठाकरे - 094209-22749 ○छत्तीसगढ़:
के.के. तिवारी - 098279-55731 ○लखनऊ: अजय कुमार सिंह
- 094159-35788 ○कानपुर: डॉ. नलिनी शुक्ला - 093361-07234 ○

A decorative horizontal line consisting of a series of diamond shapes of varying sizes, creating a repeating pattern across the width of the page.

25 अप्रैल 2010

श्रीयंत्र साधना शिविर, वलसाड

शिविर स्थल: राजपूत समाज हॉल, करस्तूरबा
अस्पताल के पास, वलसाड, गुजरात

आयोजक: देवेन्द्र पंचाल - 099988-74612/093762-25004 ○ जयेश
पंचाला - 094274-79275 ○ शंकर भाई - 099781-96517 ○ जया
बेन भंडारी - 099748-63338 ○ सुमन भाई भंडारी - 098241-
97278 ○ गोपाल पांडे - 098920-15494 ○ डॉ. चौधरी - 098927-
61967 ○ ए.के.झा - 093717-20968 ○ विनोद सिंह - 093231-
74363 ○ अखिलेश सिंह - 097235-50835 ○ संजय शर्मा -
098241-31909 ○ पी.जे.पटेल - 098247-33420 ○ चंद्रप्रभा कापडी-
098247-34230 ○ जगदीश भाई - 098980-57455 ○

A decorative horizontal line consisting of a series of diamond shapes in a repeating pattern of two small diamonds followed by one large diamond.

08-09 ਮਈ 2010

चामूङडा शिवशति

साधना शिविर, पालमुक्त

शिविर स्थल: शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा मैदान,
पालमपुर, कांगड़ा (ठि.प्र.)

आयोजक: हिमाचल प्रदेश सिद्धाश्रम साधक परिवार
○पालमपुर: आर.एस.मिन्हास - 094181-61585 ○संजय सूद
- 098160-05757 ○शशी संगराय - 094180-32672 ○ओंकार
राणा - 01894-215008 ○राजेश शर्मा - 094183-75385 ○देव
गौतम - 094189-27887 ○गौतम - 093188-08206 ○नगरोटा
सूरिया: ओमप्रकाश शर्मा - 094182-50674 ○जगजीत पठानिया
- 094180-22820 ○कुशल गुलेरिया - 01893-265184 ○जीत
लाल कलिया - 098170-45856 ○कांगड़ा: संजीव - 093185-
59800 ○अशोक - 094183-32642 ○सुनील नाग - 098053-
56994 ○चौतड़ा: रोशनलाल - 094182-00521 ○संजीव -
098171-17954 ○धर्मशाला: संध्या - 098161-84327 ○आशा
गुरुंग - 098822-91078 ○घुमारवी: सोहनलाल - 094186-86951
○जगरनाथ नडडा - 094182-55835 ○शिव कुमार - 094181-
14916 ○हेमलता कौण्डल - 098053-48006 ○सरकाधाट: हरनाम
सिंह - 094185-58334 ○मुनीष - 098573-86513 ○प्रकाश शर्मा
- 098167-59308 ○नूरपुर: पीताम्बर - 094189-87379 ○नरेश
शर्मा - 094181-52967 ○अशीष - 094184-54365 ○शिमला:
चमन लाल - 094180-40507 ○सुरेन्द्र कंवर - 094180-25976
○एच.आर. जसवाल - 094181-41942 ○टी.एस. चौहान -
094180-96013 ○ऊना: अमरजीत - 01975-225022 ○प्रदीप
राणा - 094174-09582 ○हमीरपुर: राजेन्द्र शर्मा - 094181-

03439 ○ गगन - 094184-25421 ○ चम्बा: अयोध्या - 094181-
 80707 ○ मण्डी: के.डी.शर्मा - 094180-65655 ○ शैलेन्द्र शैली-
 098166-11050 ○ महिन्द्र लाल गुप्ता - 094180-43420 ○ बंशी
 राम ठाकुर - 01905-242544 ○ बिलासपुर: शेखर अग्रवाल -
 094180-00234 ○ जीवनलता - 094180-46465 ○ जम्मू: सतपाल
 शर्मा - 094191-50472 ○ विजय खजूरिया - 094191-36734
 ○ लुधियाणा: धर्मपाल - 094172-02814 ○ महिन्द्र सिंह -
 094170-39217 ○ संजय - 098726-68016 ○

A decorative border consisting of a repeating pattern of diamond shapes, likely a watermark or a decorative element in a scanned document.

22-23 मई 2010

त्रिशति साधना शिविर, छिन्दवाडा

शिविर स्थल: पोलो ग्राउंड, नागपुर रोड, छिन्दवाडा (म.प्र.)
 नोट - शिविर स्थल पर नागपुर (128 कि.मी.), पिपरिया (130 कि.मी.) एवं जबलपुर (220 कि.मी.) से पहुंच सकते हैं।

आयोजक: डा. रामभाऊ मेटाण्डे - 094258-45821 ○रमेश
चन्द्र सावरकर - 098937-20917 ○एस.एल.धुर्वे - 099931-
55888 ○आर.एन.गढवाल - 094067-25439 ○ईश्वर प्रसाद
ढाकरे - 098937-58809 ○बी.डी.दवडे - 094244-61118
○पी.एल.काकोडे - 093292-80803 ○दीपक पाण्डेय - 094243-
23905 ○कमलाकर धाइसे - 094256-70011 ○राजकुमार हिराउ
- 094249-61241 ○मनोज मालवे - 094078-03554 ○साँसर:
शेषराव गावडे - 094249-36049 ○अशोक राव दुबे - 093709-
49968 ○लक्ष्मण थाके - 093296-01001 ○अवधेश प्रसाद गर्ग
- 093296-83001 ○नरेन्द्र पाण्डे - 093731-07057 ○सुरेन्द्र
श्रीवास्तव - 094528-95851 ○नरेन्द्र गढवाल - 094258-89001
○विजय पराडकर - 093023-41085 ○शशिकांत पाण्डे -
090095-30310 ○अभिषेक पुरोहित - 094070-23324 ○राजू गावडे
- 094247-24144 ○सुधाकर परतेती - 097537-44059 ○सौ.
सुनीता शेषराव गावडे - 093003-22473 ○सौ. शोभा डफरे -
095895-10765 ○ब्राह्मण पीपला: दशरथ वानखेडे - 097539-
26345 ○लोधीखेड़ा: डॉ. सुरेश कुमार इरपाची - 096309-
27337 ○बोरगांव: सुधाकर खुलगे - 099817-21563 ○राजकुमार
मोहबे - 093013-45701 ○भीलापार: सुरेश भोंगाडे ○पांडुनां:
मधुकरराव जवने - 093017-33605 ○दशरथ भांगे - 096309-
67057 ○बी.आर.सिरसाम - 094249-91433 ○नरेन्द्र शिवहरे
- 094258-97322 ○कैलाश खरवडे ○रामेश्वर बघाले
○शालीराम कोल्हे ○भैयाजी दारोकार ○हेमराज घोडे
○कुण्डलिक सावरकर ○हंसराज नसीने ○सुभाष तहकित
○शान्ताराम बालपाण्डे ○रमेश परतेती - 0716-4202722

○ दहिवाले बाबू ○ सीताराम अहासे ○ बेबीबाई कोल्हे
○ तीर्णांव: डा. आर. डी बालके - 094070-55283 ○ नांदनवाडी:
नरेश आरसिया - 090094-64307 ○ सावजपानी: योगीराज
परतेती - 07164-202743 ○ रैयतवाडी ढाना: सुरेश कुमरे -
096856-43726 ○ खड़की: गणेश भादे - 0948261-66414
○ धावडीखापा: रामेश्वर सिरसाम - 091658-07611 ○ विश्वेश्यर
इरपाची ○ नीलकंठ: पोलजी वटके - 099773-32432 ○ भुयारी:
सिद्धार्थ वाहने ○ दमुआ: अरविन्द कुमार सिंह - 094067-
58989 ○ लखन प्रजापति ○ भगवान दास पाटिल ○ दीपा
प्रजापति - 094073-46058 ○ शंकर चौहान - 092296-72658
○ रंगलाल ठाकरे ○ रामेश्वर साहू ○ विजय मिगलानी ○ नंदन:
रमेश जावलकर ○ जुन्नारदेव: गजानन मालवीय - 094249-
60608 ○ कमल किशोर कुरोलिया - 094067-26149 ○ जिनेन्द्र
कुमार माहेरे - 094070-74365 ○ ललित शर्मा - 099939-65906
○ सहदेव शर्मा - 07160-230987 ○ नेतराम डेहरिया - 094249-
91092 ○ विनोद चौरसिया - 094243-91636 ○ संजय कुरेलिया
- 099933-59847 ○ दिलीप यादव - 07160-230436 ○ परासिया:
प्रदीप राय - 099770-44744 ○ रोमन सहगल - 098266-85363
○ नीरजलाल - 098262-85425 ○ उदय सिंह गौतम - 099265-
85343 ○ न्यूटन ११ नं.: पवन मसराम - 099264-44921
○ चॉदामेटा: रामपाल सिंह - 094247-21380 ○ वेदवती पाल
○ लता देशमुख ○ पगारा: संतोष भलावी - 096693-42735
○ झिरपा: देवीसिंह राय - 094069-45547 ○ पिपरिया: पूरन
गढ़वाल - 099934-14311 ○ सावनेर: गुणवंत राउत - 094224-
92349 ○ नागपुर: राजेन्द्र सेंगर - 098230-19750 ○ घुघुस:
वासुदेव ठाकरे - 094209-62749 ○ कन्हान: भाऊराव ठाकरे -
093728-40421 ○ होशंगाबाद: सरनामसिंह ठाकुर - 098931-
90771 ○ बैतुल: जनकलाल मवासे - 094253-61761 ○ मनोज
अग्रवाल - 098276-78341 ○ सारनी: शिवकुमार धाइसे
○ भोपाल: आई.एस.पदाम - 099939-52685 ○ नरसिंगपुर:
रत्नेश शर्मा - 094244-31515 ○ खण्डवा: रंजीत सिंह यादव -
095752-02248 ○ गढ़चिरौली: प्रवीन नागरकर - 097660-19983
○ कटनी: महेन्द्र सिंह उडिके - 094250-03544 ○ शाजापुर:
बी.एस.संकत - 096935-75765 ○

◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆◆
साधना-सामग्री मंगाने हेतु आप कार्यालय में फोन द्वारा
आर्डर लिखा सकते हैं, लेकिन इसमें कई बार थोड़ी चुंक हो
जाती है। यदि आपके लिये संभव हो तो आप कार्यालय में
0291-2432010 पर फेक्स द्वारा आर्डर भेजें।

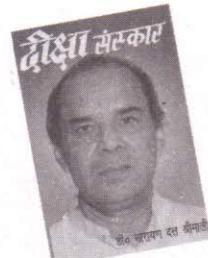
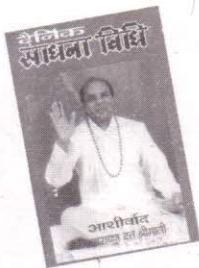
ज्ञान और चेतना की अनमोल कृतियां

पूर्ज्य गुरुदेव 'डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी'

द्वारा रचित ज्ञान की गरिमा से युक्त
सम्पूर्ण जीवन को जगमगाने वाली
अनमोल कृतियां



मूलाधार के सहस्राव तक	150/-
फिर दूक अहर्णी पायल खनकी	150/-
गुक गीता	150/-
ज्योतिष और आल निर्णय	150/-
हक्षतकेखा विज्ञान और पंचागुली ज्ञाना	120/-
निविलेश्वरकानन्द क्षतवन	120/-
विश्व की श्रेष्ठ ढीक्षाएं	96/-
ध्यान धारणा और क्षमाधि	96/-
निविलेश्वरकानन्द क्षहक्षनाम	96/-
विश्व की और्ध्विक्ष ज्ञानाएं	96/-
श्री निविलेश्वर क शतकम्	75/-
लक्ष्मी प्राप्ति	60/-
अमृत षूँड	60/-
निविलेश्वरकानन्द चिन्तन	40/-
निविलेश्वरकानन्द कहक्ष्य	40/-
क्षिद्धाश्रम आ योगी	40/-
प्रत्यक्ष हनुमान क्षिद्धि	40/-
मातंगी ज्ञाना	40/-
भ्रैवध ज्ञाना	40/-
क्षणिम ज्ञाना भूत्र	40/-



→ → → → → → → → सम्पर्क :- ← ← ← ← ← ← ← ←
मंत्र-यंत्र-तंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-2432209, 2433623, फैक्स : 0291-2432010



COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

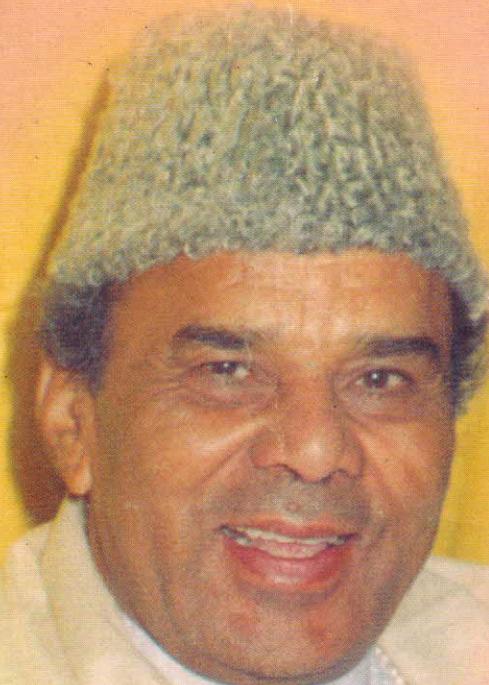
Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

रजिस्ट्रेशन नं. 35305/81
With Registrar Newspapers of India
Posting Date 02-03 MAR 2010

A.H.W

Postal No. JU/65/2009-11
Licence to post Without pre payment
Licence No. RJ/WR/PP04/2009-11



माह : अप्रैल में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
09-10-11 अप्रैल

पूज्य गुरुदेव निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे
व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों
पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
25-26-27 अप्रैल

प्रेषक -

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342031 (राजस्थान)
फोन : 0291-2432209, 2433623,
टेलीफैक्स - 0291-2432010

वर्ष - 30

अंक - 03

	Mem. No. 92376
March - 2010	Upto 05/2010
SHRI VINEET SHARMA C/O MR.B.K.SHARMA 147/B DAKSHINDHARI ROAD LAKE TOWN Post : CALCUTTA Distt : KOLKATA (W.B.)	
Pin : 700048	